FAIZAN-E-MADINA

माहनामा

# फ़ैज़ाने मदीना

(दावते इस्लामी)

जुलाई 2026 ई. / सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1448 हि.

- फ़लाह की राह में हाइल रुकावटें 3
- काली ज़बान वाले की बद दुआ 9
- इस्लाम के ख़ानदानी निज़ाम की अहमिय्यत व इफ़ादियत 13
- आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान की तहफ़्फ़ुज़े अ़क़ाइद के लिए ख़िदमात 28
- बेटियों को सफ़ाई सुथराई की तरबियत दें 49

## आफ़तों से घर महफ़ूज़ रहेगा

(ऐ मददगार) يَا وَالِيُ

जो कोई कोरे प्याले पर लिख कर उस में पानी भर कर घर की दीवार पर छिड़काव कर दे तो اِنْ شَآءَاللہُ الْکَرِیْم वोह घर आफ़तों से महफ़ूज़ रहे। (मदनी पंजसूरह, स. 294)

## किसी भी काम में नाकामी से बचने के लिए

يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ

111 बार (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर दुआ मांगे। اِنْ شَآءَاللہُ الْکَرِیْم कामयाबी मिलेगी।

(जाइज़ इम्तिहान, इन्टरव्यू, नया कारोबार शुरू करने के लिए और दीगर जाइज़ मुरादों के लिए येह अमल फ़ायदेमन्द है। اِنْ شَآءَاللہُ الْکَرِیْم)

अमीरे अहले सुन्नत मौलाना इल्यास अत्तार क़ादिरी
29 रमज़ान करीम 1446 हि. 30-3-25

## BP हो या शूगर

सूरए क़द्र व सूरए कौसर तीन तीन बार पढ़ (या पढ़वा) कर पानी पर दम कर के पिएं। اِنْ شَآءَاللہُ الْکَرِیْم B.P. हो या शूगर आप नॉर्मल हो जाएंगे। (मुद्दत इलाज : शिफ़ा मिलने तक रोज़ाना एक बार)

अमीरे अहले सुन्नत मौलाना इल्यास अत्तार क़ादिरी
21 रमज़ान करीम 1446 हि. 22-3-25

## मुक़द्दस औराक़ दफ़्न करने का त़रीक़ा

सदरुश्शरीआ बदरुत्तरीक़ा हज़रते अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली आज़मी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़तावा आलमगीरी के ह़वाले से तह़रीर फ़रमाते हैं : क़ुरआने मजीद बोसीदा हो गया, इस क़ाबिल न रहा कि उस में तिलावत की जाए और येह अन्देशा है कि उस के औराक़ मुन्तशिर हो कर ज़ाएअ होंगे तो किसी पाक कपड़े में लपेट कर एहतियात़ की जगह दफ़्न किया जाए और दफ़्न करने में उस के लिए लह़द बनाई जाए (यानी गढ़ा खोद कर जानिबे क़िब्ला की दीवार को इतना खोदें कि सारे मुक़द्दस औराक़ समा जाएं) ताकि उस पर मिट्टी न पड़े या (गढ़े में रख कर) उस पर तख़्ता लगा कर छत बना कर मिट्टी डालें कि इस पर मिट्टी न पड़े, मुस्ह़फ़ शरीफ़ बोसीदा हो जाए तो उस को जलाया न जाए। (बहारे शरीअत, 3/495)

औराक़े मुक़द्दसा के तह़फ़्फ़ुज़ और उन को बे अदबी से बचाने के लिए दावते इस्लामी के तह़त **"तह़फ़्फ़ुज़े औराक़े मुक़द्दसा"** के नाम से एक शोबा क़ाइम है। इस शोबे के तह़त मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर बॉक्स लगाए जाते हैं ताकि उन में मुक़द्दस तह़रीरात, पुरानी और बोसीदा कुतुब डाली जाएं। जब येह बॉक्स भर जाते हैं तो येह शोबा शरई व तन्ज़ीमी उसूलों के मुताबिक़ औराक़े मुक़द्दसा को दफ़्न, ठन्डा या मह़फ़ूज़ करने का इन्तिज़ाम करता है।

माहनामा

# फ़ैज़ाने मदीना

(दावते इस्लामी)

जुलाई 2026 ई.


*माहनामा फ़ैज़ाने मदीना धूम मचाए घर घर*
*या रब जा कर इश्क़े नबी के जाम पिलाए घर घर*

(अज़ : अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ)

ब फ़ैज़ाने नज़र
सिराजुल उम्मह, काशिफ़ुल ग़ुम्मह,
इमामे आज़म हज़रते सय्यिदुना
इमाम अबू ह़नीफ़ा नोमान बिन साबित رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ

ब फ़ैज़ाने करम
आला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत
मुजद्दिदे दीनो मिल्लत शाह
इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ

## क़ुरआनो ह़दीस

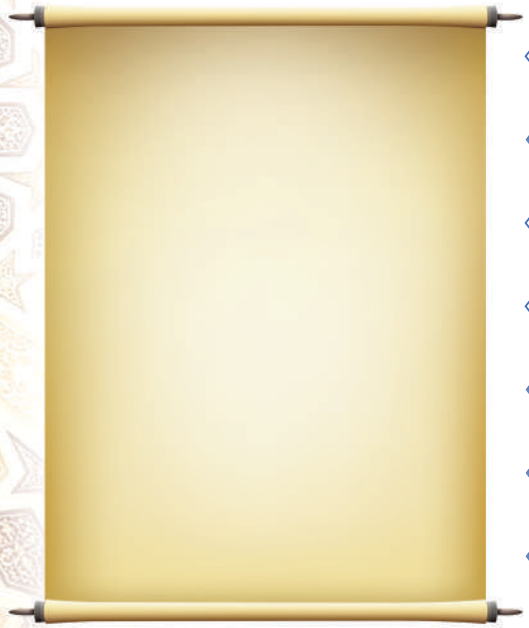


फ़लाह़ की राह में ह़ाइल रुकावटें 3
आमाल में एतिदाल अपनाइए 7


## फ़ैज़ाने अमीरे अहले सुन्नत


काली ज़बान वाले की बद दुआ़ मअ़ दीगर सुवालात 9


## दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत


क्या वलीमे में जानवर ज़ब्ह़ करना ज़रूरी है ? मअ़ दीगर सुवालात 11


## मज़ामीन


इस्लाम के ख़ानदानी निज़ाम की अहमियत व इफ़ादियत 13
ख़ुद को ह़ालात के मुताबिक़ ढालना सीखें 16
शफ़ाअ़ते मुस्त़फ़ा दिलाने वाली नेकियां 18
बुज़ुर्गाने दीन के मुबारक फ़रामीन 21


## बुज़ुर्गाने दीन की सीरत


ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ुबैब बिन अ़दी رضی اللہ عنہ 22
इमामे ह़ुसैन की तालीमात और उन की अ़स्री मानवियत 25
आला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान की तह़फ़्फ़ुज़े अ़क़ाइद के लिए ख़िदमात 28
ख़लीफ़ए आला ह़ज़रत मौलाना मुफ़्ती क़ाज़ी मुह़म्मद नूर क़ादिरी 32
अपने बुज़ुर्गों को याद रखिए 35


## मुतफ़र्रिक़


जौ की रोटी 37


## क़ारेईन के सफ़ह़ात


नए लिखारी 39


## बच्चों का "माहनामा फ़ैज़ाने मदीना"


अमानतदारी अपनाइए 42
लेकिन वोह तो दोज़ख़ी है 43
काली बिल्ली 45
बच्चों को क़नाअ़त सिखाएं 47


## इस्लामी बहनों का "माहनामा फ़ैज़ाने मदीना"


बेटियों को सफ़ाई सुथराई की तरबियत दें 49
इस्लामी बहनों के शरई मसाइल 51

# फ़लाह़ की राह में ह़ाइल रुकावटें

किताबे अ़ज़ीम क़ुरआने करीम ने जैसे फ़लाह़ व कामयाबी का ज़रीअ़ा व सबब बनने वाले आमाल व नज़रियात की जानिब राहनुमाई फ़रमाई है ऐसे ही उन आमाल और अ़क़ाइद वग़ैरा की भी निशानदही फ़रमाई है जो ह़क़ीक़ी फ़लाह़ व कामरानी यानी उ़ख़रवी नजात और ह़ुसूले जन्नत में रुकावट बनते हैं। क़ुरआने करीम ने फ़लाह़ की राह में ह़ाइल रुकावटों का मुख़्तलिफ़ अन्दाज़ में ज़िक्र फ़रमाया है अलबत्ता इस मज़्मून में उन पहलूओं का ज़िक्र किया जाता है जिन के लिए क़ुरआने करीम में "لَا یُفْلِحُ" और उस के दीगर मुतरादिफ़ात का ज़िक्र हुवा है। ज़ैल में ऐसे आमाल व नज़रियात का जाइज़ा लिया गया है जो फ़लाह़ की राह में रुकावट बनते हैं :

क़ुरआनी तालीमात

## ज़ुल्म (कुफ़्र) करना

ज़ुल्म के लुग़वी माना हैं "وَضْعُ الشَّیْءِ فِیْ غَیْرِ مَوْضِعِہ" यानी चीज़ को वहां रखना जो उस की जगह न हो। (التعریفات للجرجانی، ص 102) इस का मफ़्हूम येह है कि जो जिस चीज़ का ह़क़दार न हो उसे वोह देना या जो जिस चीज़ का ह़क़दार हो उसे वोह न देना ज़ुल्म होगा।

क़ुरआने करीम में कई मक़ामात पर कुफ़्रो शिर्क को ज़ुल्म और करने वालों को ज़ालिम क़रार दिया गया है और वाज़ेह़ किया गया है कि येह ज़ुल्म करने वाले ज़ालिम (लोग) फ़लाह़ नहीं पाएंगे, चुनान्चे सूरतुल अन्आ़म में है :

﴿وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ بِاٰیٰتِهٖؕ اِنَّهٗ لَا یُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ(۲۱)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन जो अल्लाह पर झूट बांधे या उस की आयतें झुटलाए बेशक ज़ालिम फ़लाह़ न पाएंगे। (پ7، الانعام:21)

इसी त़रह़ सूरतुल अन्आ़म ही की आयत 135 में कुफ़्फ़ार को खुली तम्बीह फ़रमाई गई और रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़बानी एलान करवाया गया कि

﴿قُلْ یٰقَوْمِ اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ اِنِّیْ عَامِلٌۚ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَۙ مَنْ تَكُوْنُ لَهٗ عَاقِبَةُ الدَّارِؕ اِنَّهٗ لَا یُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ(۱۳۵)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ ऐ मेरी क़ौम तुम अपनी जगह पर काम किए जाओ मैं अपना काम करता हूं तो अब जानना चाहते हो किस का रहता है आख़िरत का घर बेशक ज़ालिम फ़लाह़ नहीं पाते।

ज़ुल्म की एक शक्ल येह है कि इन्सान अल्लाह के ह़ुक़ूक़ को पहचानने के बावुजूद उन्हें अदा न करे। अ़स्रे ह़ाज़िर में **"रौशन ख़याली"** और "जदीदियत" के नाम पर दीन को ज़ाती मुआ़मला क़रार दे कर ज़िन्दगी के इज्तिमाई दाइरों से निकाल बाहर करना दर अस्ल ज़ुल्म ही है। आज नौजवानों को सोशल मीडिया पर येह बावर कराया जाता है कि अ़क़ीदा व ईमान **"पुराने ज़माने की चीज़"** है, और बाज़ नाम निहाद दानिश्वर इस्लामी अ़क़ाइद पर त़ानो तश्नीअ़ करते हुए ख़ुद को **"आज़ाद मुफ़क्किर"** कहलवाते हैं। याद रहे कि दुनिया में चाहे कितनी ही शोहरत, दौलत और इ़ज़्ज़त मिले, जो शख़्स अल्लाह की तौह़ीद को दिल से तस्लीम न करे उस का अन्जाम हमेशा की नाकामी है।

## जुर्म (आयाते क़ुरआनिया का इन्कार) करना

फ़लाह की राह में हाइल एक रुकावट क़ुरआनी आयात का इन्कार करना भी है, क़ुरआने करीम ने ऐसा करने वालों को मुजरिम क़रार दिया है। जब रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने कुफ़्फ़ारे मक्का के सामने क़ुरआने करीम की आयतें तिलावत फ़रमाईं तो वोह उस क़ुरआन के इलावा का मुतालबा करने लगे, रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने वाज़ेह फ़रमा दिया कि मैं न तो क़ुरआन बदलने वाला हूं और न ही अपने रब की नाफ़रमानी करने वाला, लेकिन वोह कमाल ढिटाई के साथ येही कहते रहे कि इस के सिवा और क़ुरआन ले आइए या इसी को बदल दीजिए, अल्लाह करीम ने फ़रमाया : उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन जो अल्लाह पर झूट बांधे या उस की आयतें झुटलाए बेशक मुजरिम फ़लाह न पाएंगे। चुनान्चे सूरए यूनुस में है :

﴿وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيَاتُنَا بَيِّنٰتٍ ۙ قَالَ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا ائْتِ بِقُرْاٰنٍ غَيْرِ هٰذَاۤ اَوْ بَدِّلْهُ ؕ قُلْ مَا يَكُوْنُ لِيْۤ اَنْ اُبَدِّلَهٗ مِنْ تِلْقَآئِ نَفْسِيْ ۚ اِنْ اَتَّبِعُ اِلَّا مَا يُوْحٰۤى اِلَيَّ ۚ اِنِّيْۤ اَخَافُ اِنْ عَصَيْتُ رَبِّيْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ (۱۵) قُلْ لَّوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا تَلَوْتُهٗ عَلَيْكُمْ وَلَاۤ اَدْرٰىكُمْ بِهٖ ۖ فَقَدْ لَبِثْتُ فِيْكُمْ عُمُرًا مِّنْ قَبْلِهٖ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ (۱۶) فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِهٖ ؕ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الْمُجْرِمُوْنَ (۱۷)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जब उन पर हमारी रौशन आयतें पढ़ी जाती हैं वोह कहने लगते हैं जिन्हें हम से मिलने की उम्मीद नहीं कि उस के सिवा और क़ुरआन ले आइए या इसी को बदल दीजिए तुम फ़रमाओ मुझे नहीं पहुंचता कि मैं उसे अपनी तरफ़ से बदल दूं मैं तो उसी का ताबेअ हूं जो मेरी तरफ़ वही होती है मैं अगर अपने रब की नाफ़रमानी करूं तो मुझे बड़े दिन के अज़ाब का डर है तुम फ़रमाओ अगर अल्लाह चाहता तो मैं उसे तुम पर न पढ़ता न वोह तुम को उस से ख़बरदार करता तो मैं उस से पहले तुम में अपनी एक उम्र गुज़ार चुका हूं तो क्या तुम्हें अक़्ल नहीं तो उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन जो अल्लाह पर झूट बांधे या उस की आयतें झुटलाए बेशक मुजरिमों का भला न होगा। (پ11، یونس:15تا17)

आयाते क़ुरआनिया के इन्कार की एक ख़तरनाक सूरत येह है कि बाज़ मुन्किरीने दीन व रिसालत क़ुरआने करीम की मनमानी तशरीहात कर के मुसलमानों को धोका देने की कोशिश करते हैं। क़ादियानी और इन जैसे दीगर बातिल गिरोह "ख़ातिमुन्नबिय्यीन" जैसे वाज़ेह क़ुरआनी लफ़्ज़ के माना बदलने की जसारत करते हैं ताकि अपने झूटे अक़ाइद को सहारा दे सकें, हालांकि चौदह सौ साल से उम्मते मुस्लिमा का इज्माई अक़ीदा येही है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आख़िरी नबी हैं, आप के बाद कोई नबी नहीं आ सकता।

इसी तरह बाज़ लोग नमाज़ क़ाइम करने की तशरीह को बदलने की कोशिश करते हैं और अमली नमाज़, रुकूअ, सुजूद और जमाअत के इस अज़ीम निज़ाम का इन्कार करते हैं जो रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से ले कर आज तक पूरी उम्मत में मुतवातिर चला आ रहा है। येह महज़ फ़िक्री ग़लती नहीं बल्कि आयाते इलाहिय्या का इन्कार और दीन को मस्ख़ करने की संगीन कोशिश है। मुसलमान को चाहिए कि वोह क़ुरआन को सहाबए किराम, अइम्मए दीन और अहले सुन्नत के फ़हम के मुताबिक़ समझे, क्यूंकि अपनी अक़्ल और ख़्वाहिश के मुताबिक़ क़ुरआन की तफ़्सीर करना इन्सान को गुमराही के अन्धेरों में धकेल देता है। आज सोशल मीडिया और मुख़्तलिफ़ प्लेट फ़ॉर्मज़ पर ऐसे फ़ित्ने बड़ी तेज़ी से फैल रहे हैं, इस लिए अक़ाइद की हिफ़ाज़त, उलमाए हक़ से वाबस्तगी और मुस्तनद दीनी तालीम हासिल करना हर मुसलमान के लिए पहले से ज़ियादा ज़रूरी हो चुका है, वरना इन्सान धोके में रहते हुए ईमान की दौलत से महरूम भी हो सकता है।

## अल्लाह पर झूट बांधना / शिर्क करना

यहूदियों ने राहे हक़ को छोड़ कर हज़रते उज़ैर عَلَيْهِ السَّلَام को और ईसाइयों ने हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام को مَعَاذَاللّٰه ! अल्लाह का बेटा कहा जब कि कुफ़्फ़ारे मक्का फ़रिश्तों को अल्लाह की बेटियां कहते, क़ुरआने करीम ने इस जसारते बद को ज़ाते इलाही पर इफ़्तिरा और उख़रवी फ़लाह न मिलने का सबब कहा है। चुनान्चे सूरए यूनुस में है

﴿قَالُوا اتَّخَذَ اللّٰهُ وَلَدًا سُبْحٰنَهٗ ؕ هُوَ الْغَنِيُّ ؕ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ اِنْ عِنْدَكُمْ مِّنْ سُلْطٰنٍۭ بِهٰذَا ؕ اَتَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ (۶۸) قُلْ اِنَّ الَّذِيْنَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ لَا يُفْلِحُوْنَ (۶۹)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बोले अल्लाह ने अपने लिए औलाद बनाई पाकी उस को वोही बे नियाज़ है उसी का है जो कुछ आस्मानों

में है और जो कुछ ज़मीन में तुम्हारे पास उस की कोई भी सनद नहीं क्या अल्लाह पर वोह बात बताते हो जिस का तुम्हें इ़ल्म नहीं। तुम फ़रमाओ वोह जो अल्लाह पर झूट बांधते हैं उन का भला न होगा। (پ11، یونس:68تا69)

## नाशुक्री और ख़ियानत

फ़लाह़ की राह में ह़ाइल रुकावटों में से एक अपने मोह़सिन की नाशुक्री और उस के साथ ख़ियानत करना भी है। उस का तअ़ल्लुक़ अगर ख़ालिक़ के साथ देखा जाए तो ह़क़ीक़ी एहसान फ़रमाने वाला अल्लाह करीम ही है और अल्लाह पाक के किसी भी हुक्म की नाफ़रमानी ख़ियानत है जब कि अगर उस का तअ़ल्लुक़ मख़्लूक़ के साथ हो तो मफ़्हूम येह होगा कि जिस किसी ने तुम्हारे साथ अच्छा सुलूक और भलाई की हो तो उस के साथ या उस के माल व अहल के साथ बुराई न करो, जो ऐसा करता है वोह ज़ालिम है। ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَیْہِ السَّلَام को जब अ़ज़ीज़े मिस्र की बीवी ने बुराई की त़रफ़ बुलाया तो आप ने क्या ही ख़ूबसूरत अल्फ़ाज़ के साथ अपने मोह़सिन की एहसान मन्दी का इज़्हार और उस के अहल में ख़ियानत करने से इन्कार फ़रमाया, और उसे ज़ुल्म से ताबीर करते हुए फ़रमाया कि ज़ालिम फ़लाह़ नहीं पाते, चुनान्चे सूरए यूसुफ़ में है :

﴿وَ رَاوَدَتْهُ الَّتِیْ هُوَ فِیْ بَیْتِهَا عَنْ نَّفْسِهٖ وَ غَلَّقَتِ الْاَبْوَابَ وَ قَالَتْ هَیْتَ لَكَ ؕ قَالَ مَعَاذَ اللّٰهِ اِنَّهٗ رَبِّیْۤ اَحْسَنَ مَثْوَایَ ؕ اِنَّهٗ لَا یُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ(۲۳)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : और वोह जिस औ़रत के घर में थे उस ने उन्हें उन के नफ़्स के ख़िलाफ़ फिस्लाने की कोशिश की और सब दरवाज़े बन्द कर दिए और कहने लगी : आओ, (येह) तुम ही से कह रही हूं। यूसुफ़ ने जवाब दिया : (ऐसे काम से) अल्लाह की पनाह। बेशक वोह मुझे ख़रीदने वाला शख़्स मेरी परवरिश करने वाला है, उस ने मुझे अच्छी त़रह़ रखा है। बेशक ज़ियादती करने वाले फ़लाह़ नहीं पाते। (پ12، یوسف:23)

एहसान फ़रामोसी आज के मुआ़शरे का एक बड़ा अल्मिया बन चुकी है। वालिदैन की क़ुरबानियां भुला दी जाती हैं, उस्ताद की इ़ज़्ज़त कम हो गई, दोस्तों के हुक़ूक़ पामाल होने लगे और अमानत व दियानत को "सादगी" समझा जाने लगा। बाज़ लोग मामूली फ़ायदे के लिए दोस्तों, इदारों, ह़त्ता कि अपने ख़ानदान तक से ख़ियान करने में आ़र महसूस नहीं करते। ह़ालांकि नाशुक्री दिल की सख़्ती और बरकत के ख़ातिमे का सबब बनती है। जो शख़्स अपने मोह़सिन का वफ़ादार नहीं होता वोह दर ह़क़ीक़त अल्लाह की नेमतों की भी क़द्र नहीं करता। आज घरों में बे सुकूनी, कारोबार में बे बरकती और तअ़ल्लुक़ात में नफ़रत की एक बड़ी वजह येही है कि लोग अमानत, वफ़ादारी और एह़सान शनासी जैसी सिफ़ात से दूर होते जा रहे हैं। अगर इन्सान ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَیْہِ السَّلَام के किरदार से सबक़ ले और तन्हाई, मौक़अ़ और ख़्वाहिश के बावुजूद ख़ियानत से बच जाए तो येही उस के ईमान की ह़क़ीक़ी अ़लामत है। कामयाब वोही है जो हर ह़ाल में अमानत व वफ़ा का दामन थामे रखे।

## मनमर्ज़ी से ह़लाल व ह़राम ठहराना

अपनी मनमर्ज़ी से अल्लाह की ह़लाल व त़य्यिब नेमतों को ह़राम ठहराते रहना भी फ़लाह़ व कामरानी की राह में ह़ाइल एक रुकावट है। कुफ़्फ़ारे मक्का की आ़दत थी कि कभी भी अपनी मर्ज़ी और मनघड़त उसूलों पर कुछ जानवरों को ख़वातीन और दीगर के ह़क़ में ह़राम क़रार देते, क़ुरआने करीम ने इस ख़ुद साख़्ता ह़लाल व ह़राम को अल्लाह की ज़ात पर झूट बांधना क़रार दिया और ह़िल्लत व हुर्मत का वाज़ेह़ उसूल और क़ाइ़दा अ़ता फ़रमा दिया कि

﴿فَكُلُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ حَلٰلًا طَیِّبًا ۪ وَّ اشْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ اِیَّاهُ تَعْبُدُوْنَ(۱۱۴) اِنَّمَا حَرَّمَ عَلَیْكُمُ الْمَیْتَةَ وَ الدَّمَ وَ لَحْمَ الْخِنْزِیْرِ وَ مَاۤ اُهِلَّ لِغَیْرِ اللّٰهِ بِهٖ ۚ فَمَنِ اضْطُرَّ غَیْرَ بَاغٍ وَّ لَا عَادٍ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ(۱۱۵) وَ لَا تَقُوْلُوْا لِمَا تَصِفُ اَلْسِنَتُكُمُ الْكَذِبَ هٰذَا حَلٰلٌ وَّ هٰذَا حَرَامٌ لِّتَفْتَرُوْا عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ ؕ اِنَّ الَّذِیْنَ یَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ لَا یُفْلِحُوْنَ(۱۱۶)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो अल्लाह की दी हुई रोज़ी ह़लाल पाकीज़ा खाओ और अल्लाह की नेमत का शुक्र करो अगर तुम उसे पूजते हो। तुम पर तो येही ह़राम किया है मुर्दार और ख़ून और सुअर का गोश्त और वोह जिस के ज़ब्ह़ करते वक़्त ग़ैरे ख़ुदा का नाम पुकारा गया फिर जो लाचार हो न ख़्वाहिश करता और न ह़द से बढ़ता तो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है और न कहो उसे जो तुम्हारी ज़बानें झूट बयान करती हैं येह ह़लाल है और येह ह़राम है कि अल्लाह पर झूट बांधो बेशक जो अल्लाह पर झूट बांधते हैं उन का भला न होगा। (پ14، النحل:114تا116)

माज़ी क़रीब में भी कुछ बद बातिनों ने आयते क़ुरआनी के इस हिस्से "وَمَآ اُهِلَّ لِغَيْرِ اللّٰهِ بِهٖ ۚ" से येह साबित करने की कोशिश की कि औलियाउल्लाह के नाम की नियाज़ व फ़ातिहा वग़ैरा और इन के ईसाले सवाब के लिए राहे ख़ुदा में क़ुरबान किए गए जानवर भी हराम हैं। येह भी ज़ुल्मे अ़ज़ीम और अहकामे रब्बी पर इफ़्तिरा है, क़ुरआनी आयत बिल्कुल वाज़ेह है कि वोह जानवर हराम है जिस को ज़ब्ह करते वक़्त अल्लाह के इलावा कोई नाम लिया जाए।

## पैग़ामे हक़ पर एतिराज़ व इन्कार

अल्लाह करीम की तरफ़ से अम्बियाए किराम पैग़ामे हक़ ले कर तशरीफ़ लाए तो कई अक़्वाम ने उन्हें झुटलाया और पैग़ामे हक़ को مَعَاذَاللّٰه जादू वग़ैरा भी कहा। जलीलुल क़द्र नबी व रसूल हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को भी फ़िरऔन और उस की क़ौम ने ऐसा ही कहा तो आप عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमा दिया कि जादूगर फ़लाह नहीं पाते जब कि अल्लाह की बारगाह से पैग़ामे हक़ ले कर आने वाले का ही अन्जाम बेहतर है, चुनान्चे

﴿فَلَمَّا جَآءَهُمْ مُّوْسٰى بِاٰيٰتِنَا بَيِّنٰتٍ قَالُوْا مَا هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّفْتَرًى وَّ مَا سَمِعْنَا بِهٰذَا فِيْۤ اٰبَآىِٕنَا الْاَوَّلِيْنَ(۳۶) وَ قَالَ مُوْسٰى رَبِّيْۤ اَعْلَمُ بِمَنْ جَآءَ بِالْهُدٰى مِنْ عِنْدِهٖ وَ مَنْ تَكُوْنُ لَهٗ عَاقِبَةُ الدَّارِ ؕ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ(۳۷)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : फिर जब मूसा उन के पास हमारी रौशन निशानियां लाया बोले येह तो नहीं मगर बनावट का जादू और हम ने अपने अगले बाप दादाओं में ऐसा न सुना। और मूसा ने फ़रमाया मेरा रब ख़ूब जानता है जो उस के पास से हिदायत लाया और जिस के लिए आख़िरत का घर होगा बेशक ज़ालिम मुराद को नहीं पहुंचते। (پ20، القصص:36تا37)

सूरए यूनुस में भी मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के फ़रमान से वाज़ेह है कि जादूगर हक़ के मुक़ाबले में कभी फ़लाह नहीं पा सकते और अल्लाह करीम की तरफ़ से आया हुवा पैग़ामे हक़ ही कामयाब है :

﴿قَالَ مُوْسٰۤى اَتَقُوْلُوْنَ لِلْحَقِّ لَمَّا جَآءَكُمْ ؕ اَسِحْرٌ هٰذَا ؕ وَ لَا يُفْلِحُ السّٰحِرُوْنَ(۷۷)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : मूसा ने कहा : क्या हक़ की निस्बत ऐसा कहते हो जब वोह तुम्हारे पास आया, क्या येह जादू है ? और जादूगर मुराद को नहीं पहुंचते। (پ11، یونس:77)

इसी तरह सूरए ताहा में भी क़ुरआने करीम ने फ़रमाया कि जादूगर फ़लाह नहीं पाते, चुनान्चे

﴿وَ اَلْقِ مَا فِيْ يَمِيْنِكَ تَلْقَفْ مَا صَنَعُوْا ؕ اِنَّمَا صَنَعُوْا كَيْدُ سٰحِرٍ ؕ وَ لَا يُفْلِحُ السّٰحِرُ حَيْثُ اَتٰى(۶۹)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और डाल तो दे जो तेरे दहने हाथ में है वोह उन की बनावटों को निगल जाएगा वोह जो बना कर लाए हैं वोह तो जादूगर का फ़रेब है और जादूगर का भला नहीं होता कहीं आवे। (پ16، طٰہٰ:69)

ख़ुलासए कलाम येह है कि क़ुरआने करीम ने इन्सान की हक़ीक़ी कामयाबी और दाइमी फ़लाह के रास्ते को निहायत वाज़ेह अन्दाज़ में बयान फ़रमाया है और साथ ही उन रुकावटों से भी ख़बरदार कर दिया है जो इन्सान को ईमान, हिदायत और आख़िरत की कामयाबी से महरूम कर देती हैं। आज के पुर फ़ितन दौर में जहां बातिल नज़रियात, इल्हाद, बे दीनी और दीन से दूरी तेज़ी से फैल रही है वहां मुसलमानों के लिए ज़रूरी है कि वोह क़ुरआनो सुन्नत को मज़बूती से थामें, अपने अ़क़ाइदो आमाल की हिफ़ाज़त करें और अपनी नस्लों को भी सच्चे इस्लामी माहौल से वाबस्ता रखें।

अल्लाह तआ़ला का बड़ा एहसान है कि दौरे हाज़िर में दावते इस्लामी का दीनी माहौल मुसलमानों के लिए हिदायत व इस्लाह का अ़ज़ीम ज़रीआ़ बना हुवा है। दावते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त, हफ़्ते के रोज़ होने वाला अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का मदनी मुज़ाकरा, दावते इस्लामी के ज़ेरे इन्तिज़ाम मसाजिद में नमाज़े फ़ज्र के बाद होने वाले तफ़्सीरे क़ुरआन के हल्क़े, मद्रसतुल मदीना, जामिअ़तुल मदीना, नेकी की दावत और दीगर दीनी काम ऐसे मुबारक ज़राएअ़ हैं जो मुसलमानों को दीन पर अ़मल करना सिखाते, गुनाहों से बचाते और नई नस्ल को अ़मली इस्लाम से जोड़ते हैं। जो शख़्स दीनी माहौल इख़्तियार कर ले, नेक लोगों की सोहबत अपना ले और क़ुरआनो सुन्नत के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारने की कोशिश करे तो अल्लाह तआ़ला उस के लिए फ़लाह व कामयाबी के दरवाज़े खोल देता है। लिहाज़ा हमें चाहिए कि हम ख़ुद भी दीन से वाबस्ता रहें और अपने घर वालों और आने वाली नस्लों को भी ऐसे पाकीज़ा दीनी माहौल से वाबस्ता रखें ताकि दुनिया व आख़िरत दोनों में कामयाबी नसीब हो।

# आमाल में एतिदाल अपनाइए

ज़िन्दगी जितनी मोतदिल (Balanced) हो उतनी ख़ुशगवार होती है इसी लिए इस्लाम ने ज़िन्दगी के हर मुआमले में तवाज़ुन व एतिदाल अपनाने का हुक्म दिया है चुनान्चे अल्लाह पाक के आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : عَلَيْكُمْ بِمَا تُطِيْقُوْنَ، فَوَاللّٰهِ لَا يَمَلُّ اللّٰهُ حَتّٰى تَمَلُّوْا، وَكَانَ اَحَبَّ الدِّيْنِ اِلَيْهِ مَا دَاوَمَ عَلَيْهِ صَاحِبُهٗ तर्जमा : तुम पर उतना ही अ़मल है जितने की तुम्हें त़ाक़त हो। अल्लाह की क़सम ! अल्लाह पाक (आमाल का सवाब अ़त़ा करने से) नहीं रुकता, यहां तक कि तुम अ़मल करते करते उकता जाओ और अल्लाह पाक के नज़्दीक पसन्दीदा अ़मल वोही है जिस पर अ़मल करने वाला हमेशगी इख़्तियार करे।[1]

**ह़दीस का पस मन्ज़र** अल्लाह के आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से ह़ज़रते आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا ने एक मौक़अ़ पर एक सह़ाबिया ह़ज़रते ह़ौला बिन्ते तुवैत رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا का ज़िक्र किया कि लोग कहते हैं कि येह रात भर नहीं सोतीं। तो (एक रिवायत के मुताबिक़) रह़मते आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : इतना अ़मल किया करो जितना आसानी से कर सको, बख़ुदा ! अल्लाह पाक सवाब अ़त़ा फ़रमाने से नहीं रुकता लेकिन तुम उकता जाओगे।[2]

**मुरादे ह़दीस** अल्लाह के आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी उम्मत पर शफ़्क़त व नर्मी फ़रमाते हुए वोह काम करने का फ़रमाया जिसे हमेशा किया जा सके, नफ़्स ताज़गी व निशात़ महसूस करे, दिल कुशादगी महसूस करे, इस त़रह़ इ़बादत में मुस्तक़िल ह़ाज़िरी और उस की लज़्ज़त पाना आसान हो जाता है।[3]

इमाम कोरानी शाफ़ेई عَلَيْهِ الرَّحْمَة इस ह़दीसे मुबारका की वज़ाह़त में लिखते हैं : किसी भी अ़मल को ह़द से ज़ियादा करना उक्ताहट का बाइ़स बनता है और जो अ़मल उक्ताहट के साथ किया जाए उस पर सवाब नहीं मिलता।[4] लिहाज़ा नफ़्ली इ़बादात में मुनासिब मिक़्दार और अपनी त़ाक़त व क़ुव्वत का लिह़ाज़ रखना ज़रूरी है ताकि दौराने इ़बादत त़बीअ़त में निशात़ बरक़रार रहे, दिल भी न उक्ताए और उस इ़बादत की अदाएगी का तसल्सुल भी न टूटने पाए।

**तरबियते नबवी का अन्दाज़** अल्लाह के आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बाज़ सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को बाज़ औक़ात बाज़ इ़बादात में बहुत ज़ियादा कसरत से मना किया और बाज़ को इस की इजाज़त व तरग़ीब दी, दरअस्ल बात येह है कि रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जिस फ़र्द / शख़्स में येह बात मुलाह़ज़ा की, कि उन के लिए इस पर हमेशा अ़मल करना दुश्वार होगा और येह तक्लीफ़ में पड़ जाएंगे तो उन को मना फ़रमाया और जिन के बारे में इ़त़मीनान था कि येह कसरते इ़बादत की त़ाक़त भी रखते हैं और हमेशा करने से किसी दुश्वारी में नहीं पड़ेंगे न दूसरों के हुक़ूक़ इस वजह से तलफ़ होंगे तो उन को इजाज़त मर्ह़मत फ़रमाई। औलियाए किराम इस तरबियते नबवी को पेशे नज़र रख कर इ़बादत करते हैं और उसी की रौशनी में अपने मुरीदीन की तरबियत करते हैं।

**एतिदाल अपनाने के चार उसूल** वोह कश्ती मन्ज़िल पर पहुंचती है जो अपना बैलेन्स बरक़रार रखते हुए मन्ज़िल की त़रफ़ बढ़ती रहे, ज़िन्दगी की कश्ती का भी येही ह़ाल है, इसे आगे बढ़ने के

लिए बैलेन्स और एतिदाल की ज़रूरत पढ़ती है, अपने अन्दर एतिदाल पैदा करने के लिए उन निकात (Points) पर अ़मल कीजिए:

## 1 किसी भी काम से पहले ख़ुद को चांच लीजिए

"निय्यत" वोह आला (Tool) है जिस की मदद से हम येह जान सकते हैं कि हम येह काम क्यूं कर रहे हैं ? लिहाज़ा इस्लाम ने निय्यत की दुरुस्ती की बहुत ज़ियादा अहमियत बयान की है। निय्यत के ज़रीए आप ख़ुद से पूछ सकते हैं कि मेरा येह अ़मल ख़ालिस अल्लाह की रिज़ा के लिए है या इस से दिखावा मक़्सूद है ? मेरा ऐसा करना मुफ़ीद होगा या नुक़्सान देह ? वग़ैरा वग़ैरा। काम छोटा हो या बड़ा, उस में एतिदाल क़ाइम रखने के लिए निय्यत की दुरुस्ती बहुत ज़रूरी है।

## 2 मुनज़्ज़म ज़िन्दगी गुज़ारने की आ़दत बना लीजिए

अगर हम अपने रोज़ मर्रा के मामूलात का जाइज़ा लें तो हमारी परेशानियों की बुन्यादी वजह ज़िन्दगी में बेतरतीबी क़रार पाएगी, दर अस्ल येह बेतरतीबी सुस्ती व काहिली, लापरवाही और टालमटोल की आ़दत का नतीजा हुवा करती है यूं सुब्ह का काम शाम तक टाल कर या साम का काम सुब्ह पर मुअख़्ख़र कर के हम अपनी ज़िन्दगी बेतरतीब कर देते हैं और येह ग़ैर मुनज़्ज़म ज़िन्दगी दुनिया व आख़िरत में अ़ज़ीम ख़सारे का सबब बन जाती है।

अगर आप अपनी दुनिया व आख़िरत की बेहतरी की ख़ातिर एतिदाल इख़्तियार करना चाहते हैं तो अपने रोज़ मर्रा के मामूलात को मुनज़्ज़म कीजिए। ज़िन्दगी मुनज़्ज़म गुज़र रही है या नहीं ? इस बात का जाइज़ा लेने के लिए दावते इस्लामी **"नेक आमाल"** नामी रिसाला शाएअ़ करती है और Neki Time नाम से मोबाइल एप्लीकेशन भी मौजूद है जिस की मदद से अपनी डेली रुटीन का जाइज़ा ले कर ग़ैर मुनज़्ज़म ज़िन्दगी को मुनज़्ज़म कर सकते हैं, जो कुछ आप को मालूम है उसे मामूल बना सकते हैं, जिन बातों का मालूम होना ज़रूरी है उस का इल्म ह़ासिल कर सकते हैं और रोज़ाना, माहाना और सालाना के एतिबार से अपनी सांसों का एह़तिसाब कर सकते हैं। मेरा मश्वरा है कि आप रोज़ाना नेक आमाल का रिसाला पुर कर के हर माह के इब्तिदाई दस दिन में अपने यहां के ज़िम्मेदार को जमा करवाने का मामूल बना लीजिए, कुछ अ़र्से में आप ख़ुद महसूस करेंगे कि नेक आमाल पर अ़मल की बरकत से आप की ज़िन्दगी ख़ुद बख़ुद मुनज़्ज़म होने के सबब बहुत ज़ियादा पुर सुकून गुज़र रही है।

## 3 वक़्त की क़द्र को समझिए

कहीं आने जाने, गुफ़्तगू करने या मुलाक़ातों और दावतों वग़ैरा में वक़्त की नाक़द्री कर के एतिदाल से हटने के नज़ारे आ़म हैं लिहाज़ा जो लोग वक़्त की क़द्र नहीं करते उन की ज़िन्दगी बहुत ही ग़ैर मुतवाज़िन हो जाती है, बल्कि बाज़ औक़ात सुस्ती और लापरवाही की वज्ह से ज़ाएअ़ किया जाने वाला वक़्त बहुत बड़े माली व जानी नुक़्सान का सबब बन जाता है लिहाज़ा वक़्त की क़द्र करते हुए ख़ुद को वक़्त का पाबन्द बनाइए, इस की बरकत से आप की ज़िन्दगी में काफ़ी आसानियां पैदा हो जाएंगी और ह़िफ़ाज़ते वक़्त के मुआ़मले में एह़तियात़ उख़रवी एतिबार से भी आप के लिए मुफ़ीद तरीन साबित होगी।

## 4 सिर्फ़ नेक लोगों की सोह़बत इख़्तियार कीजिए

बेएतिदाली और बेराहरवी की जानिब ले जाने में सब से ज़ियादा बुरी सोह़बत का किरदार होता है, बाज़ औक़ात मुरव्वत में कसीर माल ख़र्च कर के बन्दा मोह़ताज बन जाता है और कभी त़रह़ त़रह़ के गुनाहों में गिरिफ़्तार हो जाता है, नेकों की सोह़बत इख़्तियार करने से जहां सब्रो शुक्र, ज़ोहदो क़नाअ़त जैसे औसाफ़ पैदो होते हैं वहीं बुरी सोह़बत अख़्लाक़ व किरदार में बिगाड़ क सबब बन जाती है, इसी त़रह़ मियानारवी पर साबित क़दम रखने में भी नेक सोह़बत का बहुत अहम किरदार है लिहाज़ा अपने मामूलात में मियानारवी पैदा करने के लिए अच्छी सोह़बत इख़्तियार कीजिए।

अल्लाह करीम हमें एतिदाल की नेमत अ़त़ा फ़रमा कर अपनी रिज़ा वाले काम ज़ौक़ शौक़ के साथ करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

---

(1)بخاری، 1/28، حدیث:43(2)مسلم، ص308، حدیث: 1833 (3)التلخیص للنووی، 1/696(4)الکوثر الجاری، 1/109۔

# मदनी मुज़ाकरे के सुवाल जवाब

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه مदनी मुज़ाकरों में अ़क़ाइद, इबादात और मुआ़मलात के मुतअ़ल्लिक़ किये जाने वाले सुवालात के जवाबात अ़त़ा फ़रमाते हैं, उन में से 8 सुवालात व जवाबात ज़रूरी तरमीम के साथ यहां दर्ज किये जा रहे हैं।

## 1 काली ज़बान वाले की बद दुआ़

**सुवाल :** कुछ लोग कहते हैं कि काली ज़बान वाले की बद दुआ़ बहुत लगती है क्या येह बात दुरुस्त है ?

**जवाब :** मैंने अभी तक किसी की काली ज़बान देखी नहीं है ज़बान तो लाल होती है। जहां तक बद दुआ़ लगने का तअ़ल्लुक़ है तो मज़्लूम की दुआ़ और बद दुआ़ दोनों क़बूल होती हैं, अब मज़्लूम चाहे जानवर हो या ग़ैर मुस्लिम, बद दुआ़ तो उन की भी लगती है। (دیکھئے: مرقاۃ المفاتیح، 5/24، تحت الحدیث:2249- مراٰۃ المناجیح، 3/300)

इस में काली और लाल ज़बान का कोई तज़्किरा ही नहीं है। लोग इस क़िस्म की बातें अपनी त़रफ़ से करते रहते हैं हालांकि किसी मर्द या औ़रत को कहना कि तेरी ज़बान काली है, तेरी बद दुआ़ लगती है या तूने मुझे बद दुआ़ दी है जभी तो मेरा नुक़्सान हुवा है तो यहां दिल आज़ारी की सूरतें हो सकती हैं। येह भी हो सकता है कि कोई अपनी त़रफ़ से होशियारी करते हुए कहे कि मैंने फ़ुलां को बद दुआ़ दी तो उस का नुक़्सान हो गया, फ़ुलां ने मुझे सताया तो उस को यूं हो गया। ऐसे बड़े बोल बोलना भी बहुत ख़त़रनाक है लिहाज़ा इस क़िस्म की बातों से बचना चाहिए। (मदनी मुज़ाकरा, 8 शाबानुल मुअ़ज़्ज़म 1440 हि.)

## 2 हर रकअ़त में सूरए फ़ातिह़ा और सूरए इख़्लास पढ़ना कैसा ?

**सुवाल :** मैं क़ुरआन शरीफ़ पढ़ा हुवा नहीं हूं, मुझे सिर्फ़ اَلْحَمْد शरीफ़ और قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَد आती है, क्या मेरी नमाज़ हो जाएगी ?

**जवाब :** अगर कोई और सूरत याद नहीं है और नमाज़ की हर रकअ़त में सूरए फ़ातिह़ा और सूरए इख़्लास ही पढ़ते हैं तो कोई बात नहीं नमाज़ हो जाएगी। मज़ीद सूरतें याद करने की कोशिश करते रहिए। (मदनी मुज़ाकरा, 18 शाबान शरीफ़ 1441 हि.)

## 3 किसी चीज़ को बेचने में कितना नफ़ा रखें ?

**सुवाल :** मैं ने कपड़े का काम शुरूअ़ किया है तो क्या उस में 500 रुपै नफ़ा रख सकते हैं ?

**जवाब :** सुवाल में कुछ वज़ाहत की कमी है अलबत्ता जितने का भी कपड़ा बेचें जाइज़ है लेकिन झूट न बोलें और धोका न दें। नीज़ मेरा मश्वरा है कि इतना महंगा भी न बेचें कि जिस से आप के मुसलमान भाई तक्लीफ में आ जाएं, कपड़े के जो वाजिबी दाम बनते हों वोह लें कि मुसलमान के साथ ख़ैर ख़्वाही करना और उस की भलाई चाहना सवाब का काम है।

(मदनी मुज़ाकरा, 6 रबीउ़ल अव्वल शरीफ़ 1442 हि.)

## 4 अज़ान के वक़्त कानों में उंगलियां डालना

**सुवाल :** अज़ान के वक़्त कानों में उंगलियां क्यूं डाली जाती हैं?

**जवाब :** पहले माइक वग़ैरा नहीं होते थे तो ऊंची जगह या मनारे वग़ैरा पर कानों के सूराख़ में उंगलियां डाल कर अज़ान दी जाती थी ताकि दूर दूर तक अज़ान की आवाज़ जाए। बहारे शरीअ़त में है : अज़ान कहते वक़्त कानों के सूराख़ में उंगलियां डाले रहना मुस्तहब है और अगर दोनों हाथ कानों पर रख लिए तो भी अच्छा है। और अव्वल अहसन है (यानी कानों के सूराख़ में उंगलियां डाले रहना ज़ियादा अच्छा है) कि इरशादे हदीस के मुताबिक़ है और बुलन्दिए आवाज़ में ज़ियादा मुईन (यानी आवाज़ ऊंची करने में येह अ़मल मददगार है) कान जब बन्द होते हैं आदमी समझता है कि अभी आवाज़ पूरी न हुई, ज़ियादा बुलन्द करता है। (बहारे शरीअ़त, 1/470-

(मदनी मुज़ाकरा, 7 ज़ुल क़ादतिल हराम शरीफ़ 1444 हि.)

## 5 क्या बीवी अपने शौहर की मय्यित को ग़ुस्ल दे सकती है?

**सुवाल :** क्या वसिय्यत पर अ़मल करते हुए बीवी अपने शौहर को ग़ुस्ल दे सकती है?

**जवाब :** बहारे शरीअ़त, जिल्द अव्वल, सफ़हा नम्बर 812 पर है : औरत अपने शौहर को ग़ुस्ल दे सकती है जब कि मौत से पहले या बाद कोई ऐसा मुआमला न हुवा हो जिस से वोह उस के निकाह़ से निकल जाए मसलन शौहर के लड़के या बाप को शहवत से छुवा या बोसा दिया या مَعَاذَاللّٰه मुर्तदा हो गई अगर्चे ग़ुस्ल से पहले ही हो फिर मुसलमान हो गई कि उन से निकाह़ जाता रहा और अजनबिया हो गई लिहाज़ा ग़ुस्ल नहीं दे सकती।

(मदनी मुज़ाकरा, 3 मुहर्रमुल हराम 1441 हि.)

## 6 अ़क़ीक़े में दो साल का बकरा क़ुरबान करना कैसा?

**सुवाल :** हमारे घर में दो साल के दो बकरे हैं क्या उन को अ़क़ीक़े में इस्तिमाल कर सकते हैं?

**जवाब :** जी हां! कर सकते हैं जब कि उन में कोई ऐसा ऐ़ब न हो जो क़ुरबानी के लिए मानेअ़ (यानी रुकावट) होता है। (मदनी मुज़ाकरा, बाद नमाज़े तरावीह़, 20 रमज़ानुल मुबारक 1441 हि.)

## 7 मस्जिद के दरख़्त की लकड़ियां काटना

**सुवाल :** हमारी मस्जिद में दरख़्त हैं और उन दरख़्तों को काटा गया है क्या उन की लकड़ियों को बेच सकते हैं?

**जवाब :** मस्जिद का दरख़्त किसी ज़रूरत के तह़त काट दिया है[1] तो लकड़ियां मस्जिद ही की हैं, बेच कर उस की रक़म मस्जिद ही में ख़र्च की जाए। (मदनी मुज़ाकरा, बाद नमाज़े तरावीह़, 20 रमज़ानुल मुबारक 1441 हि.)

## 8 क्या वुज़ू करते वक़्त नाक साफ़ करना ज़रूरी है?

**सुवाल :** क्या वुज़ू करते वक़्त नाक में पानी डालना और छोटी उंगली से नाक के अन्दर का हिस्सा साफ़ करना ज़रूरी है?

**जवाब :** वुज़ू करते वक़्त नाक में पानी चढ़ाना सुन्नत और नाक में उंगली डाल कर नाक साफ़ करना मुस्तह़ब यानी सवाब का काम है। (देखिए : बहारे शरीअ़त, 1/295, 297 – मदनी मुज़ाकरा, 30 ज़ुल क़ादतिल हराम 1441 हि.)

---

(1) अश्जार मौक़ूफ़ा (यानी वक़्फ़ के दरख़्त) अगर फलदार हों तो जब तक हरे हैं उन का काटना बेचना नाजाइज़ और गिर पड़ने या सूख जाने के बाद रवा (यानी जाइज़) है कि लकड़ी बेच कर मसारिफ़ वक़्फ़ में सर्फ़ कर दें यहां तक अगर कोई फल का दरख़्त निस्फ़ ख़ुस्क हो गया और निस्फ़ क़ाबिले इन्तिफ़ाअ़ है तो इसी निस्फ़ ख़ुश्क की बैअ़ जाइज़, बाक़ी की मम्नूअ़, मुतवल्ली अगर सब्ज़ को काटे बेचेगा ख़ाइन है तौलियत से ख़ारिज किया जाएगा, हां वोह पेड़ कि फल नहीं रखते बल्कि वक़्फ़ का इन्तिफ़ाअ़ उन से यूंही है कि उन्हें बेच कर दाम किए जाएं उन के सब्ज़ो ख़ुश्क हर तरह की बैअ़ जाइज़ है। (फ़तावा रज़विय्या, 16/277)

# दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत

दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत (दावते इस्लामी) मुसलमानों की शरई राहनुमाई में मसरूफ़े अमल है, तहरीरी, ज़बानी, फ़ोन और दीगर ज़राएअ़ से मुल्क से हज़ारहा मुसलमान शरई मसाइल दरयाफ़्त करते हैं, जिन में से चार मुन्तख़ब फ़तावा ज़ैल में दर्ज किये जा रहे हैं।

## 1 क्या वलीमे में जानवर ज़ब्ह करना ज़रूरी है ?

**सुवाल :** क्या फ़रमाते हैं उलमाए किराम इस मस्अले के बारे में कि क्या अ़क़ीक़े की त़रह वलीमे में भी जानवर ज़ब्ह करना ज़रूरी है या बग़ैर जानवर ज़ब्ह किए दीगर खानों के साथ भी वलीमे की सुन्नत अदा हो जाएगी ? और जो ह़दीस शरीफ़ में इरशाद है कि : "वलीमा करो, अगर्चे एक बकरी ही से हो।" क्या उस से वलीमे में जानवर ज़बह़ करने का ज़रूरी होना साबित नहीं होता ? इस ह़दीस शरीफ़ की वज़ाह़त भी फ़रमा दें।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

वलीमे में जानवर ज़ब्ह़ करना या गोश्त के साथ दावत करना ज़रूरी नहीं, बल्कि किसी भी खाने की चीज़ से वलीमा किया जा सकता है। ख़ुद रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी मुतअ़द्दद अज़्वाजे मुत़ह्हरात के वलीमों में जानवर ज़ब्ह नहीं फ़रमाया, बल्कि जो खाने की चीज़ें उस वक़्त मुयस्सर थीं, उन्ही से दावते वलीमा फ़रमाई। इसी त़रह ह़ज़रते मौला अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ وَجْهَهُ الْكَرِيْم का वलीमा भी जानवर ज़ब्ह किए बग़ैर आ़म खानों के साथ हुवा।

बाक़ी ह़दीस शरीफ़ में येह इरशाद आया है कि : **"वलीमा करो, अगर्चे एक बकरी ही से हो"** तो उस में बकरी का ज़िक्र वुजूब के त़ौर पर नहीं, बल्कि येह फ़रमान चूंकि नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने प्यारे सह़ाबी ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه से फ़रमाया था, तो येह उन की ख़ुशह़ाली और माली इस्तित़ाअ़त के पेशे नज़र था, क्यूंकि वोह बकरी ज़ब्ह़ करने की क़ुदरत रखते थे और येह उन के लिए दुश्वार न था। इसी बिना पर उ़लमाए किराम फ़रमाते हैं कि वलीमा शौहर की माली ह़ैसिय्यत के मुत़ाबिक़ करना मुस्तह़ब है। नीज़ साह़िबे इस्तित़ाअ़त के लिए बिलख़ुसूस गोश्त से दावत करना मुस्तह़ब है।

وَاللّٰهُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُهٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

## 2 क़ब्रों पर आर्टीफ़िशियल फूल और लड़ियां वग़ैरा डालना कैसा ?

**सुवाल :** क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए किराम इस मस्अले के बारे में कि ईदैन और शबे बराअत वग़ैरा के मौक़े पर बाज़ लोग अपने मर्ह़ूमीन की क़ब्रों पर आर्टीफ़िशियल फूल और लड़ियां वग़ैरा डालते हैं क्या येह क़ब्रों पर डाल सकते हैं ?

**नोट :** येह आर्टीफ़िशियल फूल और लड़ियां क़ब्रों पर ही पड़े पड़े ख़राब व नाकारा हो जाती हैं और बाद में उन को कचरे में फेंक दिया जाता है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

आ़म मोमिनीन की क़ब्रों पर आर्टीफ़िशियल फूल और लड़ियां वग़ैरा डालना जाइज़ नहीं है इस लिये कि उस से मक़्सूद तज़ईन होती है और क़ब्रे महले ज़ीनत नहीं है नीज़ येह इसराफ़ है कि इसराफ़ व तब्ज़ीर की जामेअ़ तरीन तारीफ़ येह है **"ग़ैरे ह़क़ में सर्फ़ करना इसराफ़ है।"** नाह़क़ सर्फ़ की एक सूरत येह है कि माल मासियत में ख़र्च किया जाए और नाह़क़ सर्फ़ की दूसरी सूरत येह है कि किसी ग़रज़ के बग़ैर माल ख़र्च किया जाए, जिस में माल महज़ ज़ाएअ़ हो जाए। और दरयाफ़्त की गई सूरत में भी येह माल मासियत में ख़र्च किया जा रहा है नीज़ बाद में उन फूलों और लड़ियों का ज़ियाअ़ होता है फिर शरीअ़ते मुत़ह्हरा में भी उन की कोई अस्ल नहीं लिहाज़ा उन

की बजाए तर फूल क़ब्रों पर डाले जाएं क्यूंकि जब तक वोह तर रहते हैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की तस्बीह़ बयान करते हैं जिस से मय्यित को उन्स ह़ासिल होता है और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत नाज़िल होती है।

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

## 3 लुक़्ते की रक़म ग़रीब सय्यिद ज़ादे को देना कैसा ?

**सुवाल :** क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए किराम इस मस्अले के बारे में कि ज़ैद के पास लुक़्ते की रक़म मौजूद है, जिस की मालियत 4650 रुपै है, येह रक़म उसे अपनी दुकान के बाहर से मिली थी, उस ने येह रक़म मालिक को देने की निय्यत से उठाई थी और उस ने मालिक को तलाश किया यानी अपनी दुकान में मौजूद मुलाज़िमीन, गाहकों, और पड़ोसी दुकानदारों से पूछा लेकिन काफ़ी तलाश के बावुजूद उन पैसों का मालिक नहीं मिला। और मालिक को तलाश करते हुए तक़रीबन अढ़ाई माह हो चुके हैं। अब उसे ज़न्ने ग़ालिब हो चुका है कि मालिक अब अपनी रक़म को तलाश नहीं करता होगा। ज़ैद उस रक़म को सदक़ा करना चाहता है। उस की दुकान पर एक ग़रीब सय्यिद साह़िब मुलाज़मत करते हैं तो क्या ज़ैद येह रक़म ग़रीब सय्यिद ज़ादे को दे सकता है?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

बयान की गई सूरत में ज़ैद अपनी दुकान के बाहर से मिलने वाली रक़म ग़रीब सय्यिद ज़ादे को दे सकता है।

इस मस्अले की तफ़्सील येह है कि जब कोई शख़्स लुक़्ते की चीज़ को मालिक तक पहुंचाने की निय्यत व इरादे से उठाए तो उस पर लाज़िम होता है कि इतनी मुद्दत तक मालिक को तलाश करे कि उसे ज़न्ने ग़ालिब हो जाए कि अब मालिक अपनी चीज़ को तलाश नहीं करता होगा। और उसे मालिक न मिलने की सूरत में इख़्तियार होता है कि चाहे तो उस चीज़ को मालिक तक पहुंचाने के इरादे से महफ़ूज़ रख ले या फिर उस चीज़ को किसी भी नेक काम में ख़र्च कर दे। ऐसी चीज़ को सदक़ए वाजिबा की मिस्ल किसी ग़ैर सय्यिद, ग़ैर हाशिमी शरई फ़क़ीर पर सदक़ा करना वाजिब नहीं होता, येही वजह है कि मालिक न मिलने की सूरत में उस चीज़ को मस्जिद व मद्रसे वग़ैरा में भी ख़र्च किया जा सकता है। लिहाज़ा ज़ैद लुक़्ते की मज़्कूरा रक़म ग़रीब सय्यिद ज़ादे को दे सकता है क्यूंकि किसी सय्यिद ज़ादे की मदद करना मसारिफ़े ख़ैर में से ही है।

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

## 4 क्या टेक्स्ट मैसेज के सलाम का जवाब लिख कर देना लाज़िम है ?

**सुवाल :** क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए दीन व मुफ़्तियाने शरए मतीन इस मस्अले के बारे में कि अगर कोई शख़्स किसी को टेक्स्ट मैसेज के ज़रीए अ़रबी या उर्दू रस्मुल ख़त में "السلام علیکم" लिख कर भेजे, तो क्या उस का तह़रीरी त़ौर पर وعلیکم السلام लिख कर जवाब देना शरअ़न लाज़िम है?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

तह़रीरी मौसूल होने वाले सलाम का जवाब तह़रीरी त़ौर पर लिख कर ही देना वाजिब नहीं, बल्कि ज़बानी भी दिया जा सकता है, इस से भी जवाब देने का वाजिब अदा हो जाएगा। लेकिन फ़ौरन दिया जाए कि सलाम के जवाब में ताख़ीर की इजाज़त नहीं। लिहाज़ा बेहतर येह है कि जैसे ही किसी का सलाम मौसूल हो, तो फ़ौरन ज़बान से सलाम का जवाब दे दे, ताकि ताख़ीर की वजह से गुनहगार भी न हो और फिर टेक्स्ट मैसेज का जवाब देते हुए भी सलाम का जवाब दे देना चाहिए, ताकि वोह शख़्स किसी बदगुमानी का शिकार भी न हो।

**नोट :** जिस त़रह़ बिल मुशाफ़ा किए गए सलाम में भी सिर्फ़ सलाम तह़िय्यत (यानी जो बुन्यादी त़ौर पर ज़ियारत व मुलाक़ात के लिए आने वाला करे, अपने किसी और काम के लिए न आया हो) का जवाब देना लाज़िम होता है, इसी त़रह़ तह़रीरी सलाम का जवाब लाज़िम होने के लिए भी सलामे तह़िय्यत होना ज़रूरी है, सलामे तह़िय्यत के इ़लावा सलाम का जवाब देने न देने का इख़्तियार है।

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

# इस्लाम के ख़ानदानी निज़ाम की अहमियत व इफ़ादियत

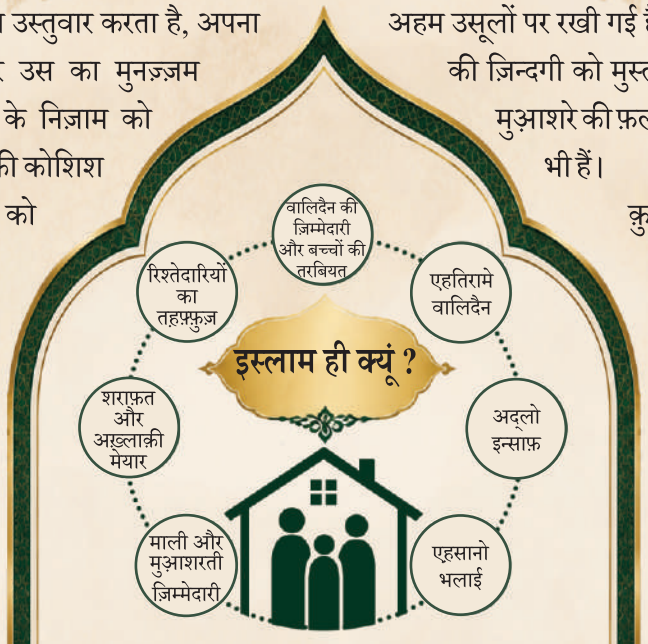


दुनिया से अलग थलग मुआशरे से कट कर इन्सान के लिए ज़िन्दगी गुज़ारना इन्तिहाई मुश्किल है इसी लिए इन्सानों के साथ रहने का निज़ाम बनाया गया है जो सदियों से राइज है। इस निज़ाम के तहत इन्सान किसी मुआशरे में रहने के लिए तअल्लुक़ात उस्तुवार करता है, अपना घर बनाता है और फिर उस का मुनज़्ज़म (सरबराह) बन कर उस के निज़ाम को अहसन तरीक़े से चलाने की कोशिश करता है । उस निज़ाम को ख़ानदान कहा जाता है। इस में किसी भी इन्सान के क़रीबी रिश्तेदार भी शामिल हो सकते हैं।

इस्लाम हमें ज़िन्दगी में जहां नमाज़, रोज़ा, हज, ज़कात और नेकी की दावत वग़ैरा देने का हुक्म देता है वहीं हमें इन्सानियत के सब से अज़ीम मोहसिन नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सीरत पर गामज़न होने की हिदायत भी देता है जिन की मुबारक ज़िन्दगी सारी इन्सानियत के लिए नमूना और उस्वह है। आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की हयाते तय्यिबा का रौशन और मिसाली पहलू येह भी है कि आप ने सिर्फ़ नमाज़ रोज़े की ही तल्क़ीन नहीं की बल्कि शख़्सी, ख़ानगी, ख़ानदानी और इन्सानी हुक़ूक़ के मुतअल्लिक़ सब से बढ़ कर पैग़ाम दिया, इस्लाम ने नेकी का जो जामेअ तसव्वुर दिया है, उस में भी ख़िदमते ख़ल्क़, हुक़ूक़े इन्सानियत, सिलए रेहमी, रहन सहन और मुआशरत, एक लाज़िमी हिस्सा है।

इस्लामी तालीमात में ख़ानदानी निज़ाम महब्बत, अख़्लाक़ और ज़िम्मेदारी के हसीन पहलूओं को सामने लाता है ताकि रिश्ते मज़बूत हों, दिल साफ हों और घरों में बरकत उतरे। इस्लाम में ख़ानदानी निज़ाम की बुन्याद चन्द अहम उसूलों पर रखी गई है। येह उसूल न सिर्फ़ फ़र्द की ज़िन्दगी को मुस्तहकम करते हैं बल्कि पूरे मुआशरे की फ़लाह और सुकून का ज़ामिन भी हैं।

क़ुरआनो हदीस में इन्सान की मुआशरती और ख़ानदानी ज़िन्दगी के बारे में तफ़्सीली मालूमात मौजूद हैं, हदीसे पाक की तक़रीबन हर ही किताब में ख़ानदान, रिश्तेदारों और अज़ीज़ो अक़ारिब से मुतअल्लिक़ न सिर्फ़ रिवायात मौजूद हैं बल्कि पूरे पूरे अबवाब तरतीब दिए गए हैं।

मुश्किल वक़्त में ख़ानदान का होना अल्लाह करीम की बड़ी नेमत है। इसी लिए इस्लाम ने हमेशा रिश्तेदारों के हुक़ूक़ पर ज़ोर दिया, चाहे वोह मोहताज हो या ख़ुशहाल, बीमार हो या तन्हा। इस्लाम की येह तालीम है कि इन्सान तन्हाई, ख़ौफ़, बीमारी, ख़ुशी या ग़म में अपने ख़ानदान का दस्तो बाज़ू बने। मुश्किलात को बांटने से दिल हल्का होता है, महब्बत बढ़ती है और नफ़रतें कम होती हैं। इस्लाम हमें रिश्तेदारों के साथ हुस्ने सुलूक का हुक्म देता है इस हुस्ने सुलूक की मुख़्तलिफ़ सूरतें हैं, इन को हदिय्या व

तोहफ़ा देना, अगर इन को किसी जाइज़ बात में तुम्हारी इआनत (यानी इम्दाद) दरकार हो तो इस काम में इन की मदद करना, इन्हें सलाम करना, इन की मुलाक़ात को जाना, इन के पास उठना बैठना, इन से बातचीत करना, इन के साथ लुत्फ़ो मेहरबानी से पेश आना।[1]

यहां इस्लाम के ख़ानदानी निज़ाम की अहमियत के ज़िम्न में कुछ बुन्यादी उसूल बयान किए गए हैं :

## 1 एहसान व भलाई

इस्लामी ख़ानदानी निज़ाम में हर फ़र्द के साथ एहसान व भलाई का दर्स दिया गया है। रिश्तेदारों के काम आना, किसी की मुश्किल आसान कर देना, किसी की जाइज़ सिफ़ारिश कर देना, किसी को क़र्ज़ दे देना, किसी के घर का सामान ला देना, पोशीदा तौर पर किसी की मदद कर देना वग़ैरा ऐसी नेकियां हैं जिन पर अज्रो सवाब भी है और उन में मुआशरे का हुस्नो ख़ूबसूरती भी पोशीदा है। रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो अपने भाई की मदद करने की ताक़त रखता हो और वोह उस की पोशीदा मदद करे तो अल्लाह करीम दुनिया व आख़िरत में उस की मदद फ़रमाएगा।[2] येह तो सिर्फ़ चन्द मिसालें हैं वरना ऐसी बेशुमार नेकियां हैं कि जिन्हें अपना कर हम न सिर्फ़ सवाब कमा सकते हैं बल्कि अपने ख़ानदान को अम्न सलामती भाईचारे और ख़ैर ख़्वाही का मिसाली और क़ाबिले तक़्लीद नमूना बना सकते हैं। इस्लाम में शौहर और बीवी के तअ़ल्लुक़ात को महब्बत और रहमत की बुनियाद पर क़ाइम करने की ताकीद है। क़ुरआने पाक में फ़रमाया : ﴿هُنَّ لِبَاسٌ لَّكُمْ وَ اَنْتُمْ لِبَاسٌ لَّهُنَّ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : वोह तुम्हारी लिबास हैं और तुम उन के लिबास।[3] येह बयान करता है कि मियां बीवी एक दूसरे की हिफ़ाज़त और सुकून का ज़रीआ़ हैं।

## 2 अ़दलो इन्साफ़

ख़ानदान में तमाम ही अफ़राद के साथ इन्साफ़ करना ज़रूरी है। ख़ुसूसन वालिदैन और बच्चों के तअ़ल्लुक़ात में येह उसूल बहुत अहम है। बच्चों की परवरिश, हुक़ूक़ और तरबियत में इन्साफ़ का ख़याल रखना इस्लाम में बेहद ज़रूरी है। इस्लाम ईज़ा रसानी झगड़ा, दिल आज़ारी और ज़बान की सख़्ती से मना करता है, वालिदैन से मिलने का हक़ हर सूरत बरक़रार रखता है और ग़लत फ़हमियों को फ़ौरन दूर करने, सुल्ह और तअ़ावुन करने की तालीम देता है। अगर येह उसूल घर में अपनाए जाएं सुसराली रिश्ते महब्बत, सुकून और अल्लाह की रिज़ा का ज़रीआ़ बन जाते हैं और पूरा ख़ानदान जन्नत की छांव में रहता है। इस्लाम हर उस रवय्ये से मना करता है जो दिल आज़ारी, बदसुलूकी, झगड़े या क़त्ए तअ़ल्लुक़ी का सबब बने।

## 3 एहतिरामे वालिदैन

वालिदैन की इ़ज़्ज़त और उन के साथ हुस्ने सुलूक ख़ानदान की बुन्याद है। क़ुरआने पाक में हुक्म है : अपने वालिदैन के साथ नर्मी से पेश आओ और कहो : ﴿رَبِّ ارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّيٰنِيْ صَغِيْرًا﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान: ऐ मेरे रब तू उन दोनों पर रहम कर जैसा कि उन दोनों ने मुझे छुटपन (छोटी उ़म्र) में पाला।[4]

## 4 वालिदैन की ज़िम्मेदारी और बच्चों की तरबियत

वालिदैन बच्चों की दीनी और अख़्लाक़ी तरबियत के ज़िम्मेदार हैं। बच्चों को नेकी, अदब, और मुआशरती उसूल सिखाना इस्लामी तालीमात का हिस्सा है।

## 5 रिश्तेदारियों का तहफ़्फ़ुज़

इस्लाम ख़ानदानी निज़ाम में रिश्तों को मज़बूत रखने पर ज़ोर देता है, जैसे अ़ज़ीज़ों के साथ हुस्ने सुलूक और ख़ानदानी तअ़ल्लुक़ात क़ाइम रखना। क़ुरआने पाक में रिश्तेदारों के साथ एहसान व भलाई और हुस्ने सुलूक का हुक्म दिया गया है। इस्लाम ख़ानदानी झगड़ों से बचने के लिए महब्बत, एहतिराम और इन्साफ़ पर मब्नी ज़िन्दगी गुज़ारने की तालीम देता है। मियां बीवी को हुस्ने सुलूक, नर्म गुफ़्तारी, गुस्से पर क़ाबू और एक दूसरे के हुक़ूक़ अदा करने का हुक्म दिया गया है, जब कि वालिदैन और बच्चों के

दरमियान अ़दल व शफ़्क़त की ताकीद की गई है। मश्वरे से फ़ैसले करना, ज़बान की ह़िफ़ाज़त, माली ज़िम्मेदारियों की वज़ाह़त, पर्दा और ह़ुदूद की पाबन्दी, ग़लत़ फ़हमियों को फ़ौरन दूर करना, और सब्रो मुआ़फ़ी का रवय्या अपनाना घर के सुकून की बुन्याद है। इख़्तिलाफ़ बढ़ जाए तो क़ुरआन ह़ुक्म देता है कि ख़ानदान के समझदार अफ़राद सुल्ह़ कराएं। यूं इस्लाम मह़ब्बत, ह़िक्मत और ज़िम्मेदारी के ज़रीए ख़ानदान को झगड़ों से मह़फ़ूज़ रखने का मुकम्मल निज़ाम फ़राहम करता है।

## 6 शराफ़त और अख़्लाक़ी मेयार

इस्लाम ख़ानदान के हर फ़र्द के साथ अच्छे अख़्लाक़, इ़ज़्ज़त, और शराफ़त की पाबन्दी की तालीम देता है। अख़्लाक़ी तरबियत ख़ानदान के इस्तिह़काम का अहम ज़रीआ़ है। हमारे रब्बे करीम ने रिश्तेदारों के साथ अच्छा सुलूक करने का ह़ुक्म इरशाद फ़रमाया है, चुनान्चे पारह 21 सूरतुर्रूम की आयत नम्बर 38 में अल्लाह करीम इरशाद फ़रमाता है :

﴿فَاٰتِ ذَا الْقُرْبٰى حَقَّهٗ وَ الْمِسْكِیْنَ وَ ابْنَ السَّبِیْلِؕ ذٰلِكَ خَیْرٌ لِّلَّذِیْنَ یُرِیْدُوْنَ وَجْهَ اللّٰهِ٘ وَ اُولٰٓىٕكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ(۳۸)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो रिश्तेदार को उस का ह़क़ दो और मिस्कीन और मुसाफ़िर को येह बेहतर है उन के लिए जो अल्लाह की रिज़ा चाहते हैं और उन्हीं का काम बना।[5]

रिश्तों की नौइ़य्यत बदलने के साथ रिश्तेदारों से ह़ुस्ने सुलूक के दरजात भी बदलेंगे। रिश्तों में सब से बढ़ कर मरतबा वालिदैन का है, फिर जिन से नसब की वजह से निकाह़ हमेशा के लिए ह़राम हो उन का मरतबा है। फिर उन के बाद बाक़ी रिश्तेदार अपने रिश्तेदार के ह़िसाब से ह़ुस्ने सुलूक के मुस्तह़िक़ होंगे।[6]

### सिलए रेह़मी क्या है ?

सिले के लुग़वी मा'ना हैं : किसी भी क़िस्म की भलाई और एह़सान करना[7] जब कि रेह़म से मुराद क़राबत और रिश्तेदारी है।[8] सिलए रेह़म का मा'ना रिश्ते को जोड़ना है, या'नी रिश्ते वालों के साथ नेकी और (ह़ुस्ने) सुलूक करना[9] लिहाज़ा रिश्तेदारों से ख़न्दा पेशानी से मिलना, माली मुश्किलात में उन की मदद करना, दुखसुख में शिर्कत कर के उन की दिलजोई का सामान करना येह सब सिलए रेह़मी में शामिल है।

सिलए रेह़मी की अहमियत का अन्दाज़ा इस बात से लगाइए कि क़ुरआने पाक में अल्लाह तआ़ला ने तक़्वा इख़्तियार करने के साथ ही सिलए रेह़मी का ह़ुक्म दिया है। चुनान्चे फ़रमाने इलाही है :

﴿وَ اتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِیْ تَسَآءَلُوْنَ بِهٖ وَ الْاَرْحَامَؕ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और अल्लाह से डरो जिस के नाम पर मांगते हो और रिश्तों का लिह़ाज़ रखो।[10]

मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہِ फ़रमाते हैं : मुसलमानों पर जैसे नमाज़, रोज़ा, ह़ज, ज़कात वग़ैरा ज़रूरी है, ऐसे ही क़राबतदारों का ह़क़ अदा करना भी निहायत ज़रूरी है।[11]

### रिज़्क़ और उ़म्र में बरकत

सिलए रेह़मी से रिज़्क़ और उ़म्र में बरकत होती है चुनान्चे 2 अह़ादीसे मुबारका मुलाह़ज़ा फ़रमाइए :

1. रिश्ते जोड़ना घर वालों में मह़ब्बत, माल में बरकत और उ़म्र में दराज़ी है।[12]
2. जो चाहे कि उस के रिज़्क़ में वुस्अ़त दी जाए और उस की मौत में देर की जाए (या'नी लम्बी उ़म्र पाए) तो वोह सिलए रेह़मी करे।[13]

## 7 माली और मुआ़शरती ज़िम्मेदारी

ख़ानदान के अफ़राद अपनी ज़रूरिय्यात पूरी करने, ख़र्च और रोज़गार में तवाज़ुन रखने के ज़िम्मेदार हैं। शौहर को घर की मआ़शी ज़िम्मेदारी, और वालिदैन को बच्चों की कफ़ालत की ज़िम्मेदारी सोंपी गई है।

अलग़रज़ इस्लाम ख़ानदान को एक मज़बूत़, मह़ब्बत, इन्साफ़, अख़्लाक़, और ज़िम्मेदारी के उसूलों पर क़ाइम मुआ़शरती इकाई समझता है। अगर येह उसूल सह़ीह़ त़रीक़े से नाफ़िज़ हों तो न सिर्फ़ फ़र्द बल्कि पूरा मुआ़शरा फ़लाह़ और सुकून ह़ासिल करता है।

---

(1) کتاب الدُرَر الحکام، 1/323 (2) مجمع الزوائد، 7/527، حدیث: 12139
(3) پ2، البقرۃ: 187 (4) پ15، بنی اسرآءیل: 24 (5) پ 21، الروم: 38
(6) رد المحتار، 9/678 (7) الزواجر، 2/156 (8) لسان العرب، 1/1479 (9) بہارِ شریعت، 3/558 (10) پ4، النسآء: 1 (11) تفسیرِ نعیمی، 4/455 (12) ترمذی، 3/394، حدیث: 1986 (13) بخاری، 4/97، حدیث: 5985۔

कहानी से ह़क़ीक़त तक

# ख़ुद को ह़ालात के मुत़ाबिक़ ढालना सीखें

## मटका बोल पड़ा

एक बूढ़े शख़्स के घर में पानी के दो मटके थे, जिन्हें वोह रोज़ाना एक लकड़ी पर बांध कर अपने कन्धे पर रखता और नहर से पानी भर कर घर लाता था। उन दो मटकों में से एक तो बिलकुल दुरुस्त था, मगर दूसरा कुछ टूटा हुवा था। हर बार ऐसा होता कि जब येह बूढ़ा शख़्स नहर से पानी भर कर लाता तो टूटे हुए मटके से थोड़ा थोड़ा पानी रास्ते में गिरता रहता यहां तक कि आधा पानी रास्ते में ही बह चुका होता, जब कि दूसरा सह़ीह़ सलामत मटका पूरा भरा हुवा घर पहुंचता। सह़ीह़ मटका अपनी कारकर्दगी से मुत़मइन था, लेकिन टूटा हुवा मटका मायूसी की ह़ालत में अन्दर ही अन्दर कुढ़ता रहता यहां तक कि वोह अपनी ज़ात से भी नफ़रत करने लगा कि वोह क्यूं अपने फ़राइज़ इस त़रह़ अदा नहीं कर पाता, जैसे उस से तवक़्क़ोअ़ की जाती है।

दो साल तक मुसल्सल इस नाकामी की तल्ख़ी बरदाश्त करने के बाद एक दिन टूटा हुवा **मटका बोल पड़ा** और उस बूढ़े शख़्स से कहने लगा : मैं अपनी इस कमज़ोरी की वजह से बहुत शर्मिन्दा हूं कि जो पानी आप इतनी मेह़नत से भर कर लाते हैं, इस में से बहुत सा पानी सिर्फ़ मेरे टूटा हुवा होने की वजह से घर पहुंचने से पहले ही बह जाता है। मटके की बात सुन कर बूढ़ा शख़्स मुस्कुराते हुए कहने लगा:

क्या तुम ने इन दो सालों में येह नहीं देखा कि जिस त़रफ़ से मैं तुम्हें उठा कर लाता हूं, उस त़रफ़ रास्ते के किनारे फूलों के पौदे लगे हुए हैं, जब कि दूसरी त़रफ़ कुछ भी नहीं उगा हुवा ?

बूढ़े ने नर्मी से मज़ीद कहा : मुझे मालूम था कि मटका टूटा होने की वजह से कुछ पानी बहता है, इसी लिए तो मैं ने नहर से घर तक के रास्ते में फूलों के बीज बो दिए थे, ताकि वोह रोज़ाना रास्ते में गिरने वाले पानी से सैराब होते रहें। मैंने गुज़श्ता दो सालों में, इन्ही फूलों से कई ख़ूबसूरत गुलदस्ते बना कर अपना घर सजाया और महकाया है। अगर तुम मेरे पास न होते तो मैं येह बहार देख ही न पाता जो तुम्हारे दम से मुझे नसीब हुई है।

## इस फ़र्ज़ी कहानी से ह़ासिल होने वाले निकात

### अपनी ख़ामी पर निगाह डालना

सरवरे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : समझदार वोह शख़्स है जो अपना मुह़ासबा करे। (ترمذی، 4/207، حدیث:2467)

अपनी कमज़ोरी को समझना इस्लाह़ और तरक़्क़ी की पहली सीढ़ी है।

### काम के मेयार को पेशे नज़र रखना

नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जब तुम में से कोई शख़्स कोई काम करे तो अल्लाह तआ़ला पसन्द फ़रमाता है कि उसे महारत व पुख़्तगी के साथ करे। (مسند ابی یعلیٰ، 4/20، حدیث:4369)

काम के मेयार को समझ कर अ़मल करना इस्लाम में पसन्दीदा है।

### अपने साथ चलने वालों की सलाहिय्यतों का इ़ल्म होना

नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه की फ़िक़्ही बसीरत को पहचानते हुए फ़रमाया : मेरी उम्मत में ह़लाल व ह़राम को सब से ज़ियादा जानने वाले मआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه हैं। (ترمذی، 5/435، حدیث:3815)

इसी पहचान की बुन्याद पर रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन्हें यमन का क़ाज़ी बना कर भेजा था।

इस से मालूम हुवा कि नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने सह़ाबा की सलाह़िय्यतों को न सिर्फ़ जानते थे बल्कि उन्हें बेहतरीन मक़ाम भी देते थे।

### मातह़त की कमज़ोरी को फ़ायदेमन्द बनाना

हम हमेशा बे ऐ़ब लोगों की तलाश में रहते हैं, ह़ालांकि कोई इन्सान कामिल नहीं, हर इन्सान में कोई न कोई सलाह़िय्यत ज़रूर होती है अच्छा इन्सान वोह है जो लोगों की सलाह़िय्यत पहचान कर सह़ीह़ जगह इस्तिमाल करे।

# शफ़ाअ़ते मुस्तफ़ा दिलाने वाली नेकियां

अल्लाह पाक की अ़ज़ीम नेमतों में से एक नेमत जो हमें अ़ता की गई वोह येह है कि क़ियामत के हौलनाक मौक़े पर जब कोई किसी को न पूछता होगा, उस वक़्त हम गुनाहगारों की शफ़ाअ़त फ़रमाने वाले आख़िरी नबी ह़ज़रत मुह़म्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हमारी शफ़ाअ़त फ़रमाएंगे, अल्लाह पाक ने बहुत से ऐसे नेक आमाल हमें अ़ता फ़रमाए हैं जिन के बजा लाने की बरकत से اِنْ شَآءَاللّٰه ! हमें शफ़ाअ़त नसीब होगी और जन्नत में दाख़िला मिलेगा, चुनान्चे

**सिदक़े दिल से कलिमा पढ़ने वाला** ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ फ़रमाते हैं कि मैं ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! क़ियामत के दिन आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त से बहरामन्द होने वाले ख़ुश नसीब लोग कौन होंगे ? फ़रमाया : ऐ अबू हुरैरा ! मेरा गुमान येही था कि तुम से पहले मुझ से येह बात कोई न पूछेगा क्यूंकि मैं ह़दीस सुनने के मुआ़मले में तुम्हारी ह़िर्स को जानता हूं, क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त पाने वाला ख़ुश नसीब वोह होगा जो ख़ालिस दिल से या ख़ालिस नफ़्स से لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه कहेगा।[1]

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه कहने से मुराद है सारे अक़ाइदे इस्लामिया का इक़रार करना जैसे कहा जाता है नमाज़ में अल ह़म्द पढ़ना वाजिब है यानी पूरी सूरए फ़ातिह़ा पढ़ना। ख़ालिसन फ़रमा कर मुनाफ़िक़ीन को अ़लाह़दा फ़रमा दिया गया कि वोह सिर्फ़ ज़बान से इस्लाम मानते हैं दिल में काफ़िर होते हैं। इख़्लास के साथ क़ल्ब का ज़िक्र सिर्फ़ ताकीद के लिए है वरना इख़्लास तो दिल से ही होता है।[2]

**रौज़ए रसूल की ज़ियारत** अल्लाह पाक के रसूल صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : مَنْ زَارَ قَبْرِیْ وَجَبَتْ لَهٗ شَفَاعَتِیْ यानी जो मेरे मज़ारे करीम की ज़ियारत को ह़ाज़िर हुवा उस के लिए मेरी शफ़ाअ़त वाजिब हो गई।[3]

इस रिवायत के तह़त अ़ल्लामा तक़ियुद्दीन सुबुकी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : जैसे हमारे प्यारे नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तमाम अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام से अफ़ज़ल हैं इसी त़रह़ आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त भी दूसरों से अफ़ज़ल है।[4]

रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो मेरी ज़ियारत को आया कि उसे सिवा ज़ियारत के कुछ काम न था मुझ पर ह़क़ हो गया कि रोज़े क़ियामत उस का शफ़ीअ़ (यानी शफ़ाअ़त करने वाला) हूं।[5]

नेक बन्दों की क़ब्रें इस बात की ज़ियादा ह़क़दार हैं कि बरकत ह़ासिल करने के लिए उन की ज़ियारत का इरादा किया जाए, और

वहां उन (यानी साहिबे क़ब्र) के लिए, ख़ुद अपने लिए और अपने भाइयों के लिए दुआ की जाए, क्यूंकि उन बुज़ुर्गों की क़ब्रों के पास मांगी जाने वाली दुआ की क़बूलिय्यत की ज़ियादा उम्मीद होती है और अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام के मज़ारात तो नेक लोगों की क़ब्रों में सब से ज़ियादा ख़ास और मुम्ताज़ दर्जा रखते हैं, बिलख़ुसूस तमाम रसूलों के सरदार, दो आलम के मालिको मुख़्तार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का रौज़ए मुबारक।[6]

**दुरूद शरीफ़ पढ़ना** शफ़ाअत का हक़दार बनाने वाला एक निहायत आसान और उम्दा अमल है, आइए इस बारे में 4 फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पढ़िए और अमल की कोशिश कीजिए :

**1** जिस ने येह कहा : اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّاَنْزِلْهُ الْمَقْعَدَ الْمُقَرَّبَ عِنْدَكَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ (तर्जमा : ऐ अल्लाह पाक ! हज़रत मुहम्मद صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर रहमत नाज़िल फ़रमा और उन्हें क़ियामत के दिन अपने क़ुर्ब वाला मक़ाम अता फ़रमा।) तो उस के लिए मेरी शफ़ाअत वाजिब हो गई।[7]

**2** जो मुझ पर रोज़े जुमुआ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअत करूंगा।[8]

**3** शबे जुमुआ और रोज़े जुमुआ (यानी जुमेरात के ग़ुरूबे आफ़्ताब से ले कर जुमुआ का सूरज डूबने तक) मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत कर लिया करो, जो ऐसा करेगा क़ियामत के दिन मैं उस का शफ़ीअ व गवाह बनूंगा।[9]

**4** जिस ने मुझ पर सुब्ह 10 मरतबा और शाम 10 मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी।[10]

ऐ आशिक़ाने दुरूद ! जो शख़्स दुरूदे पाक पढ़ने की आदत बना लेता है वोह अहादीसे मुबारका के मुताबिक़ शफ़ाअत फ़रमाने वाले नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शफ़ाअत का हक़दार होगा, اِنْ شَآءَ اللهُ الْكَرِيْم।

**वसीले की दुआ शफ़ाअत का सबब है** अल्लाह पाक के आख़िरी रसूल صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जब तुम मोअज़्ज़िन को सुनो तो तुम भी उसी तरह कहो जो वोह कह रहा है, फिर मुझ पर दुरूद भेजो क्यूंकि जो मुझ पर एक दुरूद भेजता है अल्लाह पाक उस पर दस रहमतें भेजता है, फिर अल्लाह पाक से मेरे लिए वसीला मांगो, वोह जन्नत की एक मन्ज़िल है कि एक बन्दे के सिवा किसी के शायाने शान नहीं, मैं उम्मीद करता हूं कि वोह बन्दा मैं ही हूं, तो जो मेरे लिए वसीला मांगेगा उस पर मेरी शफ़ाअत उतरेगी।[11]

ऐ आशिक़ाने रसूल ! अज़ान के बाद दुरूद शरीफ़ पढ़ना चाहिए कि इस की बरकत से हम पर दस रहमतें नाज़िल की जाएंगी, और अज़ान के बाद की दुआ जो अगली हदीस शरीफ़ में बताई गई है येह दुआ भी पढ़ने की आदत बनाइए, चुनान्चे

नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो अज़ान सुन कर येह दुआ पढ़े : اَللّٰهُمَّ رَبَّ هٰذِهِ الدَّعْوَةِ التَّامَّةِ وَالصَّلٰوةِ الْقَائِمَةِ اٰتِ (سَيِّدَنَا) مُحَمَّدَنِ الْوَسِيْلَةَ وَالْفَضِيْلَةَ وَابْعَثْهُ مَقَامًا مَّحْمُوْدَنِ الَّذِيْ وَعَدْتَّهٗ उस के लिए मेरी शफ़ाअत वाजिब हो गई।[12]

अल्लामा अली क़ारी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इस हदीस शरीफ़ के तहत फ़रमाते हैं : इस दुआ की बरकत से ईमान पर ख़ातिमा नसीब होगा।[13]

**फ़र्ज़ नमाज़ के बाद दुआ मांगने वाले के लिए शफ़ाअत**

रसूले करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस ने हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद येह दुआ मांगी क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअत उस के लिए हलाल होगी, (दुआ येह है :) اَللّٰهُمَّ اَعْطِ مُحَمَّدَنِ الْوَسِيْلَةَ، وَاجْعَلْ فِي الْمُصْطَفَيْنَ مَحَبَّتَهٗ، وَفِي الْعَالِيْنَ دَرَجَتَهٗ، وَفِي الْمُقَرَّبِيْنَ دَارَهٗ (तर्जमा : ऐ अल्लाह पाक ! हज़रत मुहम्मद صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को वसीला अता फ़रमा और अपने पसन्दीदा बन्दों के दिलों में उन की

महब्बत डाल दे और बुलन्द तरीन दरजात वालों में उन का दर्जा बुलन्द फ़रमा और उन का घर मुक़र्रबीन में बना।)[14]

## मदीना शरीफ़ की सख़्ती पर सब्र करने वालों के लिए शफ़ाअ़त

मक्की मदनी आक़ा صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इरशाद है : मेरा जो उम्मती मदीना शरीफ़ की सख़्ती और तंगदस्ती पर सब्र करेगा क़ियामत के दिन मैं उस की शफ़ाअ़त करूंगा।[15]

**40 अहादीस याद करने वाला** अल्लाह पाक के आख़िरी नबी صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : जो शख़्स मेरी उम्मत तक पहुंचाने के लिए दीन के मुतअ़ल्लिक़ 40 ह़दीसें याद कर लेगा तो उसे अल्लाह पाक क़ियामत के दिन आ़लिमे दीन की ह़ैसिय्यत से उठाएगा और क़ियामत के दिन में उस का शफ़ीअ़ (यानी शफ़ाअ़त करने वाला) और गवाह होउंगा।[16]

शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुहद्दिस देहल्वी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : इस फ़रमाने आ़लीशान से मुराद 40 ह़दीसों का लोगों तक पहुंचाना है, अगर्चे वोह याद न हों।[17]

**अहले बैत से महब्बत** अहले बैत से महब्बत करने वाला, उन की दिलो जान से ख़िदमत करने वाला ज़रूर शफ़ाअ़त पाएगा, इस बारे में 3 फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पढ़िए :

1 हमारे अहले बैत की महब्बत को लाज़िम पकड़ लो क्यूंकि जो अल्लाह पाक से इस ह़ाल में मिला कि वोह हम से महब्बत करता है तो अल्लाह पाक उसे मेरी शफ़ाअ़त के सबब जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा और उस की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! किसी बन्दे को उस का अ़मल उसी सूरत में फ़ायदा देगा जब कि वोह हमारा (यानी मेरा और मेरे अहले बैत का) ह़क़ पहचाने।[18]

2 जो शख़्स वसीला ह़ासिल करना चाहता है और येह चाहता है कि मेरे ज़िम्मे उस का कोई ह़क़ हो जिस के सबब मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूं, उसे चाहिए कि मेरे अहले बैत की ख़िदमत करे और उन्हें ख़ुश करे।[19]

3 मेरी शफ़ाअ़त मेरी उम्मत के उस शख़्स के लिए है जो मेरे घराने (यानी अहले बैत) से महब्बत रखने वाला हो।[20]

आला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : आले पाक की इ़ज़्ज़त और उन के ह़ुक़ूक़ की ताकीद के मुतअ़ल्लिक़ ह़दीसें ह़द्दे तवातुर को पहुंची हुई हैं।[21] लिहाज़ा हमें उन से ख़ूब महब्बत रखनी चाहिए और जितना मुम्किन हो उन की ख़िदमत करनी चाहिए।

**मुसलमान की ह़ाजत पूरी करना** शफ़ीए रोज़े मह़शर صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो अपने भाई की ह़ाजत पूरी करेगा मैं क़ियामत के दिन उस के मीज़ान के पास खड़ा रहूंगा, अगर नेकियों का पलड़ा भारी हो गया तो ठीक, वरना मैं उस की शफ़ाअ़त करूंगा।[22]

अल्लाह पाक हमें ऐसे नेक आमाल करते हुए शफ़ाअ़त का ह़क़दार बनने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए और शफ़ाअ़त से मह़रूम कर देने वाले कामों से बचने की तौफ़ीक़ मर्ह़मत फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

---

(1)بخاری، 53/1، حدیث:99(2)مراٰۃ المناجیح،421/7(3)شعب الایمان، 490/3، حدیث: 4159 (4)شفاء السقام، ص103 ملخصًا (5) معجم کبیر، 225/12، حدیث:13149(6)حسن التنبہ،555/2(7) معجم کبیر، 25/5، حدیث:4480(8)جمع الجوامع،199/7، حدیث:22352(9)شعب الایمان، 111/3، حدیث:3033(10)مجمع الزوائد،163/10، حدیث:17022 (11)مسلم، ص162، حدیث:849(12)بخاری،262/3، حدیث:4719 (13)مرقاۃ المفاتیح،353/2، تحت الحدیث:659(14)الترغیب والترہیب، 300/2، حدیث:11(15)مسلم، ص549، حدیث:3347(16)شعب الایمان،270/2، حدیث:1726(17)اشعۃ اللمعات،186/1(18)معجم اوسط،606/1، حدیث:2230(19)الشرف المؤبد للنبہانی، ص54(20)تاریخِ بغداد،144/2(21)فتاویٰ رضویہ،433/24(22)حلیۃ الاولیاء،389/6، رقم:9038۔

# बुज़ुर्गाने दीन के मुबारक फ़रामीन

The Blessed quotes of the pious predecessors

## बातों से ख़ुश्बू आए

### अच्छा हमनशीन बनाइए

नेक साथी तन्हाई से बेहतर है, और तन्हाई बुरे साथी से बेहतर है। (फ़रमाने अबू दर्दा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ) (روضۃ العقلاء، ص101)

### कमीनों का हथियार

कमीनों का हथियार बदकलामी है । (फ़रमाने मुहम्मद बिन अ़ली رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہِ) (صفۃ الصفوۃ، 2/77)

### बड़ी सज़ा

इन्सान के लिए सब से बड़ी सज़ा येह है कि उसे अपनी ख़ामी नज़र न आए क्यूंकि जो अपनी ख़ामी नहीं जानता वोह उसे दूर भी नहीं कर सकता। (फ़रमाने अबू हातिम رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہِ) (روضۃ العقلاء، ص22)

## अहमद रज़ा का ताज़ा गुलिस्तां है आज भी

### ज़र्रे ज़र्रे का इ़ल्म

रोज़े अव्वल आफ़रीनश से रोज़े क़ियामत तक जो कुछ हुवा और होने वाला है एक एक ज़र्रे का इ़ल्म तफ़्सीली हुज़ूर को अ़ता हुवा, शर्को ग़र्ब में, समावात व अर्ज़ में, अ़र्शो फ़र्श में कोई ज़र्रा हुज़ूर के इ़ल्म से बाहर नहीं। (फ़तावा रज़विय्या, 15/275)

### अहले ईमान का हथियार

दुआ सलाहे अहले ईमान है, दुआ जालिबे अम्नो अमान है, दुआ नूरे ज़मीनो आस्मान है, दुआ बाइसे रिज़ाए रहमान है।

(फ़ज़ाइले दुआ, स. 110)

### मियां बीवी में जुदाई शैतानी काम है

ज़न व शौ (औरत व शौहर) में जुदाई डालना शैतान का काम है।

(फ़तावा रज़विय्या, 23/329)

## अ़त्तार का चमन कितना प्यारा चमन

### मर्ज़े लाइ़लाज का इ़लाज विलायत की दलील नहीं

ला इ़लाज मरीज़ों का इ़लाज कर देने से कोई वली या बुज़ुर्ग नहीं बन जाता, शिफ़ा दरअस्ल मिन जानिबिल्लाह है अब उस का सबब कोई डॉक्टर बने या आ़मिल।

(देखिए मदनी मुज़ाकरा, 5 जुमादल उख़्रा, 1438)

### ज़रूरी आगाही

ज़ौजा फ़ौत हो जाए तो शौहर या कोई और उस के जहेज़ वग़ैरा का तन्हा मालिक या हक़दार नहीं हो सकता बल्कि वोह सारा सामान जो औरत की ज़ाती मिल्कियत था उस के मरने के बाद शरई क़ानून के मुताबिक़ वुरसा में तक़्सीम होगा।

(मदनी मुज़ाकरा, 6 रमज़ानुल मुबारक, 1437)

### क़बूलिय्यत का मदार पाबन्दिये शरीअ़त पर है

क़बूलिय्यत का दारोमदार तो शरीअ़तो सुन्नत को मज़बूती के साथ थामने और उस की मुकम्मल पासदारी करने में है।

(देखिए : मदनी मुज़ाकरा, 5 जुमादल उख़्रा, 1438)

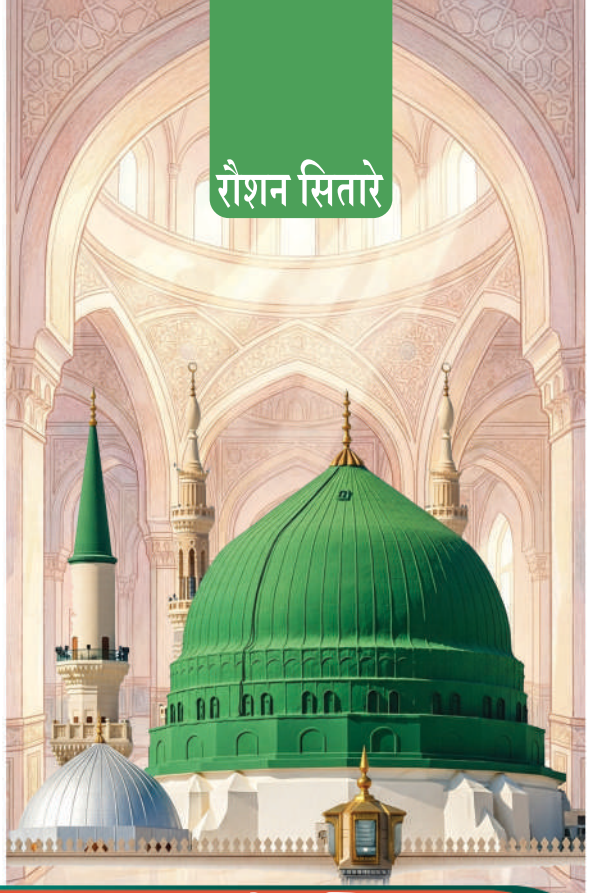

# ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ुबैब बिन अ़दी رضی اللہ عنہ

माहे सफ़र सिन 4 हिजरी में "**यौमे रजीअ़**" के नाम से एक अफ़सोसनाक वाक़िआ़ पेश आया, हुवा कुछ यूं कि नेकी की दावत आ़म करने और दिलों में दीने इस्लाम की शम्आ़ जलाने के लिए दस जां निसार सह़ाबा का एख मुख़्तसर क़ाफ़िला मदीने से रवाना हुवा, क़बीलए हुज़ैल को ख़बर मिली तो उन्हों ने 200 तीर अन्दाज़ों की एक जमाअ़त तआ़क़ुब में रवाना कर दी।

## दुश्मनों की क़ैद में

अमीरे क़ाफ़िला ह़ज़रते आ़सिम बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ को तआ़क़ुब का एह़सास हुवा तो क़ाफ़िले को बुलन्द जगह पर ले आए। येह देखते ही ग़ैर मुस्लिमों ने उन्हें घेर लिया और कहा : तुम सब अपने आप को हमारे ह़वाले कर दो, हम वादा करत हैं कि तुम्हें क़त्ल नहीं करेंगे। अमीरे क़ाफ़िला ने फ़रमाया : हमें न तुम्हारे वादों का एतिबार है न तुम्हारी क़समों का, हम अपने आप को तुम्हारे ह़वाले नहीं करेंगे। येह सुनते ही दुश्मनों ने राहे ख़ुदा के उन मुसाफ़िरों पर तीरों की बारिश कर दी। अमीरे क़ाफ़िला ने बारगाहे इलाही में दुआ़ के लिए हाथ उठा दिए : ऐ मेरे परवरदिगार ! हमारी इस ह़ालत की ख़बर अपने प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को पहुंचा दे। एक एक कर के शुरकाए क़ाफ़िला शहीद होने लगे। आख़िरेकार बदबख़्तों ने तीन सह़ाबा को ज़िन्दा गिरिफ़्तार कर लिया और ख़ूब ज़दो कोब करते हुए मक्का की जानिब घसीटना शुरूअ़ कर दिया, एक सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने मुज़ाह़मत की और साथ जाने से इन्कार किया तो उन्हें भी उसी वक़्त ख़ून में नहला दिया। अब सिर्फ़ ह़ज़रते ख़ुबैब बिन अ़दी और ह़ज़रते ज़ैद बिन दसिन्ना رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا बाक़ी रह गए थे मुश्रिकीन ने उन दोनों ह़ज़रात को मक्कए मुकर्रमा में फ़रोख़्त कर दिया।

## ह़ज़रते ख़ुबैब के क़त्ल का मन्सूबा

माहे रमज़ान 2 हिजरी ग़ज़्वए बद्र में ह़ज़रते ख़ुबैब बिन अ़दी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने एक मुश्रिक ह़ारिस बिन आ़मिर को जहन्नम वासिल किया था, चुनान्चे बेटों ने बाप के क़त्ल का बदला लेने के लिए आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ को ख़रीद लिया और क़ैद कर दिया फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ को शहीद करने का नापाक मन्सूबा बनाने लगे।[1]

## रह़म दिल क़ैदी

क़ैद के दौरान एक दिन ह़ज़रते ख़ुबैब رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने नज़ाफ़त और सफ़ाई के लिए ह़ारिस की बेटी से उस्तुरा मांगा तो उस ने आप को उस्तरा दे दिया इस दौरान वोह अपने (छोटे) बच्चे से ग़ाफ़िल हो गई थी, बच्चा आहिस्ता आहिस्ता सरकते हुए आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के पास जा पहुंचा, आप ने उसे उठा कर अपनी रान पर बिठा लिया, जब ह़ारिस की बेटी ने बच्चे को आप के पास देखा तो घबरा गई, उस वक़्त उस्तरा आप के हाथ में था, आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने फ़रमाया : तुम क्या समझती हो कि मैं तुम्हारे बच्चे को क़त्ल कर के अपने दिल की भड़ास निकालूंगा, ख़ुदा की क़सम ! मैं ऐसा हरगिज़ नहीं करूंगा,

फिर आप ने बच्चे को उस की मां की तरफ़ भेज दिया।[2]

## ग़ैब से अंगूर मिलते

मुश्रिक हारिस की बेटी इस्लाम लाने के बाद कहा करती थीं : बख़ुदा ! मैं ने हज़रते ख़ुबैब رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ से बेहतर कोई पाबन्दे सलासिल और क़ैदी नहीं देखा (दौराने असीरी आप से ऐसे ऐसे मुआमलात होते देखे कि जिन का वहमो गुमान भी नहीं होता) मैं ने देखा कि एक दिन वोह क़ैद की कोठड़ी के अन्दर ज़न्जीरों में बन्धे हुए हैं और बेहतरीन अंगूरों का ख़ोशा हाथ में लिए खा रहे हैं हालांकि ख़ुदा की क़सम ! उन दिनों मक्कए मुअज़्ज़मा में कोई फल न मिलता था, बेशक ! येह तो अल्लाह पाक की तरफ़ से रिज़्क़ था जिसे अल्लाह करीम ने हज़रते ख़ुबैब को अ़ता किया।[3]

## तख़्तए दार पर पहला सज्दा

आख़िरेकार हज़रते ख़ुबैब की शहादत का दिन आ गया और आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ को बज़्मे क़त्ल की जानिब ले जाया गया तो क्या बच्चे क्या औरतें व ग़ुलाम और क्या मर्द सभी पीछे पीछे चल रहे थे यूं मालूम होता था कि कोई मेला लगा हुवा है,[4] आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ को तख़्तए दार पर खड़ा कर दिया गया, हर एक की निगाहें आप के चेहरे पर जमी हुई थीं मगर आप न जाने किन ख़यालात में खोए हुए थे। अचानक मुश्रिकीन को मुख़ातब करते हुए फ़रमाया : मुझे इतना वक़्फ़ा दो कि दो रकअ़त नमाज़ पढ़ सकूं। फिर निहायत ख़ुशूओ ख़ुज़ूअ़, इज्ज़ो इन्किसारी और हुस्नो ख़ूबी के साथ जल्द ही दो रकअ़त अदा की और फ़रमाया : दिल तो चाहता था कि सज्दे से सर न उठाऊं लेकिन इस वजह से नमाज़ को मुख़्तसर कर दिया कि कहीं कोई येह न सोचे कि ख़ुबैब ने मौत के डर से नमाज़ लम्बी कर दी है।[5]

प्यारे इस्लामी भाइयो ! इस मर्दे मुजाहिद की ज़िन्दगी के आख़िरी लम्हात और आख़िरी अ़मल को बार बार पढ़िए कि मौत सर पर खड़ी है और कुफ़्रो शिर्क की आंधियों से शम्ए ईमान को महफ़ूज़ रखा हुवा है ऐसे कड़े वक़्त में बस दिल में येही आरज़ू मचल रही थी कि अपने अल्लाह पाक की बारगाह में सर झुका लूं और उस की इ़बादत कर लूं। आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ सब से पहले शख़्स हैं जो दीने इस्लाम की ख़ातिर सूली पर चढ़ाए गए,[6] इसी तरह बवक़्ते शहादत नमाज़ अदा करने की सआ़दत भी सब से पहले आप ही के हिस्से में आई है।[7]

अल्लाह पाक हमें भी उन के सदक़े पंजगाना नमाज़े बाजमाअ़त अदा करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। आमीन

## इ़श्क़े रसूल का बेमिसाल इम्तिहान

फिर उन ज़ालिमों ने आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ को खजूर के एक तने के साथ मज़बूती से बांध दिया और कहा : इस्लाम छोड़ दोगे तो तुम्हारी जान बख़्श दी जाएगी, मगर आप ने फ़रमाया : मैं इस्लाम नहीं छोड़ सकता अगर्चे मेरे पास पूरी दुनिया भी चल कर आ जाए। मुश्रिकीने मक्का ने फिर पूछा : क्या तुम्हें येह बात पसन्द है कि तुम्हारी जगह तुम्हारे नबी को येह सज़ा दी जाती ? महबूबे किब्रिया صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इस जांनिसार आशिक़ ने येह जवाब अ़ता फ़रमाया : अल्लाह की क़सम ! मैं तो इस बात को भी पसन्द नहीं करता कि मैं अपने घर में अहले ख़ाना के साथ रहूं और मेरे आक़ा व मौला मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को कोई कांटा भी चुभे।[8]

## आख़िरी दुआ

इस के बाद आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ ने दुआ की : ऐ मेरे रब ! मेरी इस हालत की ख़बर अपने रसूले मोहतशम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को पहुंचा दे और जो कुछ मेरे साथ होने वाला है उस से अपने प्यारे हबीब को बाख़बर फ़रमा दे,[9] ऐ परवरदिगार ! तू उन सब काफ़िरों को चुन चुन कर तबाहो बरबाद कर दे और उन में से किसी को भी बाक़ी न रख। आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ की इस दुआ से मुश्रिकीन पर ख़ौफ़ो हिरास तारी हो गया, कोई ज़मीन पर लेट गया तो कोई दूसरे के पीछे छुपने लगा, कोई कानों में उंगलियां डाल कर भागने लगा तो कोई दरख़्तों की आड़ में हो गया।[10] फिर बद्र के मौक़अ़ पर हलाक होने वाले मुश्रिकीन के बच्चों को लाया गया और उन के हाथों में नेज़े थमा दिए गए जिन्हों ने आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ को नेज़े मारने शुरूअ़ किए। इस आ़लम में आप ने अपना चेहरा

काबतुल्लाह शरीफ़ की त़रफ़ किया और अल्लाह पाक का शुक्र अदा करने लगे, फिर आहिस्ता आहिस्ता शहादत के घूंट पीते हुए अपनी जान जाने आफ़रीन के सिपुर्द कर दी।[11]

## बारगाहे रिसालत से सलाम

ह़ज़रते ख़ुबैब رضی اللہ عنہ को जब सूली दी जा रही थी ऐन उसी वक़्त रह़मते आलम صلَّی اللہُ علیہ واٰلہٖ وسلَّم पर वह़ी की कैफ़ियत त़ारी हुई फिर ज़बाने रिसालत से येह अल्फ़ाज़ अदा हुए : عَلَيْكَ السَّلَامُ يَا خُبَيْبُ! ऐ ख़ुबैब ! तुझ पर सलाम हो।[12] फिर फ़रमाया : ख़ुबैब को आज मुश्रिकीन ने शहीद कर दिया, ह़ज़रते जिब्राईल علیہ السّلام मेरे पास उन का सलाम लाए हैं।[13]

## काबा से मुंह न फिरा

शहादत के बाद मुश्रिकीन ने आप رضی اللہ عنہ के चेहरए मुबारका को काबा से फेरना चाहा लेकिन फेर न सके, बार बार कोशिश की लेकिन हर बार नाकामी ने मुंह चिड़ाया बिल आख़िर मुश्रिकीन ने आप رضی اللہ عنہ के चेहरए मुबारका को यूंही रहने दिया।[14]

## महकता ख़ून

चन्द दिन बाद जनाबे रसूलुल्लाह صلَّی اللہُ علیہ واٰلہٖ وسلَّم ने सह़ाबए किराम علیہمُ الرّضوان से फ़रमाया : जो शख़्स ख़ुबैब की लाश को सूली से उतार कर लाए उस के लिए जन्नत है। येह बिशारत सुन कर ह़ज़रते ज़ुबैर बिन अ़व्वाम और ह़ज़रते मिक़्दाद बिन अस्वद رضی اللہ عنہما रातों को सफ़र करते और दिन को छुपते छुपाते हुए मक़ामे "तन्ईम" में ह़ज़रते ख़ुबैब رضی اللہ عنہ की सूली के पास पहुंचे तो देखा कि चालीस कुफ़्फ़ार सूली के पहरेदार बन कर सो रहे हैं। चालीस दिन गुज़र जाने के बावुजूद लाश तरोताज़ा है, ख़ून से भरे हुए दोनों हाथ ज़ख़्मों पर रखे हुए हैं जब कि रिस्ता हुवा ख़ून नीचे टपक रहा है और उस से उठने वाली मुश्क की मस्हूर कुन ख़ुश्बू ने आसपास की फ़ज़ा को मुअ़त्तर व मुअ़म्बर कर रखा है। इन दोनों ह़ज़रात ने लाश को सूली से उतारा और घोड़े पर रख कर चल दिए।

## बलीउ़ल अर्ज़

सुब्ह को क़ुरैश के सत्तर सुवार तेज़ रफ़्तार घोड़ों पर तआ़क़ुब में चल पड़े और उन दोनों ह़ज़रात के पास पहुंच गए, उन ह़ज़रात ने जब देखा कि क़ुरैश के सुवार हम को गिरिफ़्तार कर लेंगे तो ह़ज़रते ख़ुबैब رضی اللہ عنہ की लाश मुबारक को घोड़े से उतार कर ज़मीन पर रख दिया। ख़ुदा की शान देखिए कि एक दम ज़मीन फट गई और लाश मुबारक को निगल गई कि फटने का निशान भी बाक़ी न रहा। इसी वजह से ह़ज़रते ख़ुबैब رضی اللہ عنہ "बलीउल अर्ज़" (जिन को ज़मीन निगल गई) के लक़ब से याद किया जाता है।

## सह़ाबा की लल्कार

इस के बाद ह़ज़रते ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رضی اللہ عنہ ने मुश्रिकीन से कहा कि हम दो शेर हैं जो अपने जंगल में जा रहे हैं अगर हिम्मत है तो हमारा रास्ता रोक कर दिखाओ, चाहो तो तीर अन्दाज़ी का मुक़ाबला कर लो या खुले मैदान में लड़ लो और अगर ज़िन्दगी प्यारी है तो वापस लौट जाओ। मुश्रिकीन ने उन ह़ज़रात के पास लाश न देखी तो लड़ना मुनासिब न जाना इस लिए मक्का वापस चले गए। जब दोनों मुक़द्दस ह़ज़रात ने बारगाहे रिसालत में सारा माजरा अ़र्ज़ किया तो ह़ज़रते जिब्रील علیہ السّلام भी ह़ाज़िरे दरबार थे। उन्हों ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह صلَّی اللہُ علیہ واٰلہٖ وسلَّم ! आप के उन दोनों जांनिसारों के इस कारनामे पर हम फ़रिश्तों की जमाअ़त को भी फ़ख़्र है।[15]

अल्लाह पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो। اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

---

(1) دیکھئے: بخاری، 2/323، حدیث: 3045 (2) دیکھئے: بخاری، 2/323، حدیث: 3045 (3) دیکھئے: بخاری، 2/323، حدیث: 3045 - الاصابہ، 8/155 (4) کتاب المغازی للواقدی، 1/358، 359 (5) الروض الانف، 3/367 (6) معرفۃ الصحابہ، 2/221 (7) بخاری، 3/46، حدیث: 4086 (8) کتاب المغازی للواقدی، 1/360 (9) کتاب المغازی للواقدی، 1/360 (10) کتاب المغازی للواقدی، 1/359 (11) کتاب المغازی للواقدی، 1/361 (12) فتح الباری، 8/327 تحت الحدیث: 4087 (13) دلائل النبوۃ للبیہقی، 3/326 (14) کتاب المغازی للواقدی، 1/361 (15) تفسیر بغوی، البقرۃ، تحت الآیۃ: 1/207، 132۔

(दूसरी और आख़िरी क़िस्त)

# इमामे हुसैन की तालीमात और उन की अ़स्री मानवियत

गुज़श्ता से पैवस्ता

## 4 सख़ावत व फ़य्याज़ी – सरदारी की शर्त

"जो सख़ावत करता है वोह सरदार होता है और जो बुख़्ल करता है वोह ज़लीलो रुस्वा होता है। ज़ियादा सख़ी वोह शख़्स है जो उस शख़्स पर सख़ावत करे जिसे उस की उम्मीद न हो।"

आज ह़ालात ऐसे हैं कि कितने ही मह़ल्लेदार भूके होते हैं और हम फ़्रीज भर कर भी मुत़मइन नहीं होते। रिश्तेदार ज़रूरत में होते हैं और हम ह़ज़ार बहाने तराशते हैं। हम बुख़्ल को "बचत" का नाम देते हैं। बुख़्ल हमारे मुआ़शरे को एक बेरूह़ ख़ोल बना देता है जहां हर शख़्स अपनी "मैं" में क़ैद है।

अल्लाह तआ़ला ने क़ुरआने ह़कीम में फ़रमाया : ﴿وَاَنْفِقُوْا فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ وَلَا تُلْقُوْا بِاَیْدِیْكُمْ اِلَى التَّهْلُكَةِ ۛ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और अल्लाह की राह में ख़र्च करो और अपने हाथों हलाकत में न पड़ो।[1]

माल न ख़र्च करना अपने लिए हलाकत है और अल्लाह की राह में ख़र्च करना जन्नत की ज़मानत है जैसा कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : اَلسَّخِیُّ قَرِیْبٌ مِّنَ اللّٰهِ، قَرِیْبٌ مِّنَ النَّاسِ، قَرِیْبٌ مِّنَ الْجَنَّةِ यानी सख़ी शख़्स अल्लाह से क़रीब, लोगों से क़रीब और जन्नत से क़रीब है।[2]

इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ की सख़ावत का येह आ़लम था कि एक मरतबा किसी चरवाहे के पास से गुज़र हुवा जो बकरियां चरा रहा था। उस ने एक बकरी आप رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ को तोह़फ़तन पेश की। आप رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ ने इस से दरयाफ़्त फ़रमाया : तुम आज़ाद हो कि ग़ुलाम ? उस ने अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! ग़ुलाम हूं। आप رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ ने बकरी उसे वापस लौटा दी। उस ने अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! येह मेरी अपनी बकरी है। आप رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ ने बकरी

क़बूल फ़रमा ली। और उस ग़ुलाम को भेड़ बकरियों समेत ख़रीद कर आज़ाद कर दिया और भेड़ बकरियां उसे तोहफ़े में दे दीं।[3]

प्यारे इस्लामी भाइयो ! इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की मीरास सख़ावत को अपनी ज़िन्दगी का हिस्सा बनाएं और नेकी व भलाई के कामों में ख़ूब ख़र्च करें।

## 5 अफ़्वो दरगुज़र – ताक़त के होते हुए मुआफ़ करना

"ज़ियादा बहादुर वोह शख़्स है जो बदला लेने पर क़ादिर होने के बावुजूद मुआफ़ कर दे।"

हम में से अक्सर लोग मुआफ़ करने को कमज़ोरी समझते हैं। कोई बुरा भला कह दे तो महीनों, बल्कि सालों तक दिल में कीना रखते हैं। रिश्तेदार कोई ग़लती कर दे तो ताउम्र बेतअल्लुक़ी निभाते हैं। पड़ोसी से झगड़ा हो तो "**जब तक मैं जियूंगा बात नहीं करूंगा**" की क़समें खाते हैं। येह कीना न सिर्फ़ रिश्तों को बरबाद करता है बल्कि क़ल्ब को भी ज़हर आलूद कर देता है।

अल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमाया : ﴿وَ الْكٰظِمِیْنَ الْغَیْظَ وَ الْعَافِیْنَ عَنِ النَّاسِ ؕ وَ اللّٰهُ یُحِبُّ الْمُحْسِنِیْنَ(۱۳۴)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान: और ग़ुस्सा पीने वाले और लोगों से दर गुज़र करने वाले और नेक लोग अल्लाह के महबूब हैं।[4]

नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फरमाया: مَا زَادَ اللّٰهُ عَبْداً بِعَفْوٍ اِلَّا عِزّاً यानी मुआफ़ कर देने पर अल्लाह करीम बंदे की इज़्ज़त ही बढ़ाता हैं।[5]

इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ का किरदार अफ़्वो दरगुज़र में बेमिसाल था। करबला के मैदान में जब आप के क़ाफ़िले का पानी बन्द किया गया, अस्हाब शहीद हुए, बच्चे प्यासे तड़पे, तब भी आप ने इब्तिदा में हर मुम्किन तरीक़े से सुल्ह की कोशिश की और दुश्मन को मुआफ़ी का रास्ता दिखाया। हुर बिन यज़ीद रियाही जो पहले आप को घेर कर लाया था, जब आख़िरी लम्हात में तौबा कर के आप की तरफ़ आया तो आप ने उसे फ़ौरी तौर पर मुआफ़ फ़रमा दिया।

एक मरतबा हज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के ग़ुलाम से ऐसी ग़लती सरज़द हुई जिस के सबब उस को सज़ा देना ज़रूरी था, जब इमामे हुसैन ने उसे सज़ा देने का हुक्म फ़रमाया तो ग़ुलाम ने (मुआफ़ी तलब करते हुए) येह आयते मुबारका तिलावत की : ﴿وَ الْكٰظِمِیْنَ الْغَیْظَ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और ग़ुस्सा पीने वाले। इमामे हुसैन ने फ़रमाया : उसे छोड़ दो ! (यानी सज़ा न दो)। फिर ग़ुलाम ने आयत का दूसरा हिस्सा तिलावत करते हुए कहा मेरे आक़ा : ﴿وَ الْعَافِیْنَ عَنِ النَّاسِ ؕ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और लोगों से दरगुज़र करने वाले, आप ने फ़रमाया : मैंने तुझे मुआफ़ किया, फिर उस ने कहा मेरे आक़ा : ﴿وَ اللّٰهُ یُحِبُّ الْمُحْسِنِیْنَ(۱۳۴)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और नेक लोग अल्लाह के महबूब हैं।

तो हज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने फ़रमाया : जा तू अल्लाह की रिज़ा के लिए आज़ाद है और जितना माल में तुझे पहले दिया करता था अब उस से दुगना दूंगा।[6]

याद रखें ! मुआफ़ करना कमज़ोरी नहीं बल्कि सब से बड़ी ताक़त है। हमें अहद करना चाहिए कि जिन से हमारे दिल में शिक्वा है उन से पहल करेंगे, जिन्हों ने हमें तक्लीफ़ दी उन्हें मुआफ़ करेंगे न इस लिए कि वोह हक़दार हैं बल्कि इस लिए कि हम अल्लाह से अपनी मग़्फ़िरत चाहते हैं।

## 6 सिलए रहमी – टूटे हुए रिश्ते जोड़ना

"ज़ियादा सिलए रेहमी करने वाला शख़्स वोह है जो क़त्ए तअल्लुक़ करने वाले रिश्तेदारों से तअल्लुक़ जोड़े।"

आज हमारे घरानों में झगड़े, विरासत के तनाज़आत, ज़ाती रंजिशें और ग़लत फ़हमियां इस क़दर बढ़ गई हैं कि सगे भाई सालों तक नहीं मिलते, मां बाप बेटे से बेतअ़ल्लुक़ हो जाते हैं, चचा भतीजा अ़दालतों में लड़ते हैं। ईद के मौक़अ़ पर भी पुरानी रंजिशें मिलने नहीं देतीं। येह हमारी दीनी व मुआ़शरती तबाही की बड़ी अ़लामतों में से एक है।

अल्लाह तआ़ला ने क़ुरआन में फ़रमाया : ﴿وَ اتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِیْ تَسَآءَلُوْنَ بِهٖ وَ الْاَرْحَامَ ؕ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और अल्लाह से डरो जिस के नाम पर मांगते हो और रिश्तों का लिहाज़ रखो।[7]

नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "لَا یَدْخُلُ الْجَنَّةَ قَاطِعٌ" यानी रिश्ता तोड़ने वाला जन्नत में दाख़िल नहीं होगा।[8]

इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ और उन के नानाजान के फ़रमान की रौशनी में अस्ल सिलए रेह़मी वोह है जो टूटे रिश्ते को जोड़े। पस आज ही फ़ैसला करें कि कौन ऐसा क़रीबी है जिस से तअ़ल्लुक़ टूटा हुवा है ? उसे फ़ोन करें, मिल कर आएं, हाथ आगे बढ़ाएं, अगर आप की ग़लती है तो मुआ़फ़ी मांगे, अगर उस की ग़लती है तो दर गुज़र करें। अल्लाह के हां येह अ़मल जन्नत तक ले जाने वाला है।

## 7 मुसलमान भाई की दुनियावी मुसीबत दूर करना उख़रवी नजात का ज़रीआ़

"जिस शख़्स ने अपने मुसलमान भाई से दुनियवी मुसीबत दूर की अल्लाह पाक उस से उख़रवी मुसीबत दूर करता है और जो किसी पर एह़सान करे अल्लाह करीम उस पर एह़सान फ़रमाता है और एह़सान करने वाले अल्लाह के प्यारे हैं।"

आज हमारे मुआ़शरे में हर शख़्स अपनी मुसीबतों में तन्हा खड़ा है। क़र्ज़दार परेशान है, बीमार इ़लाज नहीं करवा पा रहा, बेवा घर नहीं चला पा रही, त़ालिबे इ़ल्म फ़ीस नहीं दे पा रहा और हम दूसरों की तक्लीफ़ों से बेनियाज़ हो गए हैं। येह हमारे मुआ़शरे की सब से बड़ी रूह़ानी बीमारी है।

नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "مَنْ نَفَّسَ عَنْ مُؤْمِنٍ كُرْبَةً مِنْ كُرَبِ الدُّنْيَا نَفَّسَ اللّٰهُ عَنْهُ كُرْبَةً مِنْ كُرَبِ يَوْمِ الْقِيَامَةِ" यानी जिस ने किसी मोमिन की दुनिया की तक्लीफ़ों में से कोई तक्लीफ़ दूर की, अल्लाह तआ़ला क़ियामत की तक्लीफ़ों में से उस की कोई तक्लीफ़ दूर फ़रमाएगा।[9]

इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ ने तो मुसलमानों को एक ज़ालिमो जाबिर और दीन मुख़ालिफ़ हुक्मरान "यज़ीद" के शर से बचाने के लिए अपनी जान, अपने अहलो अ़याल और अपने अस्ह़ाब की क़ुरबानी तक दे दी। येह तारीख़ का सब से बड़ा एहसान है जो इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ ने उम्मते मुह़म्मदिया पर किया।

मोह़तरम क़ारिईन ! इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ के इस मुबारक ख़ुत्बे का ख़ुलासा येह है कि एक मुसलमान की ज़िन्दगी इ़बादात के साथ साथ अख़्लाक़, सख़ावत, एहसान, अ़फ़्व, सिलए रेह़मी और दूसरों की तक्लीफ़ दूर करने जैसे आमाले ह़सना से भी मुज़य्यन होनी चाहिए।

इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ से मह़ब्बत का दावा तब सादिक़ है जब हम उन की तालीमात को अपनाएं। उन का ज़िक्र करना सवाब है, लेकिन उन के किरदार को अपनी ज़िन्दगी में ढालना उस से भी बड़ा सवाब है। अल्लाह तआ़ला हम सब को इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ की तालीमात पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए और उन के सदक़े हमारी दुनिया व आख़िरत संवारे। اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللّٰہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

---

(1)پ2، البقرۃ: 195 (2)ترمذی، 3/387، حدیث1968 (3)مصنف ابن ابی شیبہ، 11/665، حدیث: 23642 (4)پ4، اٰل عمرٰن:134 (5)مسلم، ص1071، حدیث:6592 (6)التذکرۃ الحمدونیۃ، 2/187 (7)پ4، النسآء:1 (8)بخاری، 4/97، حدیث:5984 (9)مسلم، ص1110، حدیث:6853۔

# आला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की तह़फ़्फ़ुज़े अ़क़ाइद के लिए ख़िदमात

चौदहवीं सदी की मश्हूर इ़ल्मी व रूहानी शख़्सियात में शैख़ुल इस्लाम वल मुस्लिमीन, आला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का नाम बड़ा नुमायां है। इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने दीने मतीन के कई शोबाजात में अपनी इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और क़लमी ख़िदमात पेश फ़रमाई हैं, उन में एक शोबा **"तह़फ़्फ़ुज़े अ़क़ाइदे इस्लामिया"** है। इस अहम मौज़ूअ़ पर आला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान की चन्द तस्नीफ़ात और क़लमी ख़िदमात का मुख़्तसर जाइज़ा सुतूरे ज़ैल में मुलाह़ज़ा कीजिए :

**अ़क़ीदए तौह़ीद की ह़िफ़ाज़त** अहले इस्लाम का बुन्यादी अ़क़ीदा है कि अल्लाह तआ़ला अपनी ज़ात, सिफ़ात, अफ़्आ़ल, अह़काम, सल्तनत, क़ुदरत और तमाम तर शानों में वाह़िद, यकता और अकेला है, उसी को **"अ़क़ीदए तौह़ीद"** के नाम से पहचाना जाता है। नीज़ अल्लाह पाक की मुक़द्दस ज़ात हर त़रह के नक़्स व ऐ़ब, जिस्मो जिस्मानियत, शक्लो सूरत और तमाम ह़वादिसात से मुनज़्ज़ह (यानी पाक) है। इस्लाम के उन बुन्यादी अ़क़ाइद के तह़फ़्फ़ुज़ व दिफ़ाअ़ के ह़वाले से आला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने गिरां क़द्र क़लमी ख़िदमात सरअन्जाम दी हैं। आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने अपने मश्हूर रिसाले "اِعْتِقَادُ الْاَحْبَابِ فِی الْجَمِیْلِ وَالْمُصْطَفٰی وَ الْاٰلِ وَالْاَصْحَاب" में पहला अ़क़ीदा ही **"अ़क़ीदए तौह़ीद"** बयान फ़रमाया है।

जब इस्लामी अ़क़ीदा "अल्लाह तआ़ला हर (मुम्किन) शै पर क़ादिर है" ग़लत़ और बात़िल तश्रीह़ करते हुए बयान किया जाने लगा कि مَعَاذَ الله ! "अल्लाह तआ़ला झूट बोलने पर भी क़ुदरत रखता है" तो शाने उलूहिय्यत के तह़फ़्फ़ुज़ के लिए आला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने शानदार रिसाला बनाम "سُبْحٰنَ السُّبُّوْحِ عَنْ عَیْبِ كِذْبٍ مَقْبُوْحٍ"[1] तह़रीर फ़रमाया। इस रिसाले में आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने 30 नुसूस और 30 दलाइले क़त़इय्या[2] से येह साबित फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला का झूट बोलना मुह़ाल बिज़्ज़ात है और इस पर उम्मत के तमाम अइम्मा का इज्माअ़ व इत्तिफ़ाक़ है। इसी मौज़ूअ़ पर आप ने एक और रिसाला बनाम "دَامَانِ بَاغِ سُبْحٰنَ السُّبُّوْح"[3] तह़रीर फ़रमाया।

जब क़ुरआने मजीद की चन्द आयाते मुतशाबिहात की ग़लत़ तश्रीह़ करते हुए अल्लाह तआ़ला के लिए जिस्मो जिस्मानियत साबित करने की कोशिश की गई तो इमामे अहले सुन्नत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه

ने अल्लाह तआला से जिस्मो जिस्मानियत की नफ़ी के बयान में एक मारिकतुल आरा रिसाला [4] "قَوَارِعُ الْقَهَّارِ عَلَى الْمُجَسِّمَةِ الْفُجَّارِ" तहरीर फ़रमाया, जिस में आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने अल्लाह तआला की ज़ातो सिफ़ात से मुतअल्लिक़ 15 अक़ाइद तहरीर फ़रमाए और आयाते मुतशाबिहात की दुरुस्त तफ़्सीर व तशरीह करने के अहम उसूल भी बयान फ़रमाए। नीज़ अल्लाह तआला की ज़ात से जिस्मो जिस्मानियत की नफ़ी पर 250 दलाइले क़ाहिरा तहरीर फ़रमाए, जो तहक़ीक़ाते आला हज़रत ही का हिस्सा हैं। इन रसाइल के इलावा भी कई रसाइल और फ़तावा में इलाहिय्यात (ज़ातो सिफ़ाते इलाही से मुतअल्लिक़ अक़ाइद) के मौज़ूअ पर क़लमी ख़िदमात पेश फ़रमाई।

**अफ़्ज़लियत व शाने रिसालत की हिफ़ाज़त** दीगर अम्बियाए किराम के साथ साथ इमामुल मुर्सलीन, ख़ातिमुन्नबिय्यीन हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अज़मतो शान और नामूसो इस्मत के मौज़ूआत पर आला हज़रत की कुतुब, रसाइल और फ़तावा की एक लम्बी फ़ेहरिस्त है। आप ने गुस्ताख़ाने रसूल के मज़्मूम और कुफ़्रिया अक़ाइदो नज़रियात के रद्द में ऐसा अज़ीम इल्मी व क़लमी काम फ़रमाया है जिस की मिसाल आज तक नहीं मिलती। अफ़्ज़लियत व शाने रिसालत से मुतअल्लिक़ा मुख़्तलिफ़ मौज़ूआत और मसाइल पर दरजनों रसाइल और सैंकड़ों फ़तावा में से सिर्फ़ दो रसाइल का मुख़्तसर तआरुफ़ देखिए :

इज़्ज़तो नामूसे रिसालत की अहमियत को उजागर करने के लिए आला हज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने एक ईमान अफ़रोज़ रिसाला बनाम [5] "تَمْهِيْدِ اِيْمَان بِاٰيَاتِ قُرْآن" तहरीर फ़रमाया, येह वोह शानदार किताब है जिसे पढ़ने से दिल में इश्क़े रसूल और अज़मते रसूल की शमा मज़ीद फ़रोज़ां होती है। चुनान्चे इमाम अहमद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इस रिसाले में तहरीर फ़रमाते हैं : तुम को जिन लोगों से कैसी ही ताज़ीम, कितनी ही अक़ीदत, कितनी ही दोस्ती, कैसी ही महब्बत का अलाक़ा (तअल्लुक़) हो, जैसे तुम्हारे बाप, तुम्हारे उस्ताद, तुम्हारे पीर, तुम्हारे भाई, तुम्हारे अहबाब, तुम्हारे अस्हाब, तुम्हारे मौलवी, तुम्हारे हाफ़िज़, तुम्हारे मुफ़्ती, तुम्हारे वाइज़ वग़ैरा वग़ैरा कसे बाशद (जो भी हों), जब वोह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शाने अक़्दस में गुस्ताख़ी करें अस्लन (बिल्कुल) तुम्हारे क़ल्ब में उन की अज़मत उन की महब्बत का नामो निशान न रहे फ़ौरन उन से अलग हो जाओ, दूध से मक्खी की तरह निकाल कर फेंक दो, उन की सूरत उन के नाम से नफ़रत खाओ। इल्ख़।[6]

जब नबिय्ये करीम, रसूले अज़ीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के तमाम नबियों और रसूलों से भी अफ़्ज़लो आला होने से मुतअल्लिक़ सुवाल किया गया तो आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने पूरा रिसाला [7] "تَجَلِّي الْيَقِيْن بِاَنَّ نَبِيَّنَا سَيِّدُ الْمُرْسَلِيْن" तहरीर कर दिया और दस आयाते क़ुरआनी और 100 से ज़ाइद अहादीस व रिवायात के ज़रीए सय्यिदे आलम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का "**अफ़्ज़लुल मुर्सलीन**" होना साबित किया। इब्तिदा में फ़रमाते हैं: हुज़ूरे पुरनूर सय्यिदे आलम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का अफ़्ज़लुल मुर्सलीन व सय्यिदुल अव्वलीन वल आख़िरीन होना क़त्ई ईमानी, यक़ीनी, इज़आनी, इज्माई, ईक़ानी मस्अला है जिस में ख़िलाफ़ (इख़्तिलाफ़) न करेगा मगर गुमराह बद्दीन बन्दए शयातीन। इल्ख़।[8]

**अक़ीदए ख़त्मे नुबुव्वत की हिफ़ाज़त** अक़ीदए ख़त्मे नुबुव्वत दीने इस्लाम के बुन्यादी और असासी अक़ाइद में से एक अहम अक़ीदा है। अल्लाह ने सिलसिलए नुबुव्वत आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ख़त्म फ़रमा दिया है, लिहाज़ा आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़माने में या बाद कोई नया नबी नहीं हो सकता।[9] आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने इस इस्लामी अक़ीदे के तहफ़्फ़ुज़ व दिफ़ाअ और मुन्किरीने ख़त्मे नुबुव्वत के रद्दो इब्ताल में मुतफ़र्रिक़ फ़तावा के साथ साथ तक़रीबन पांच मुस्तक़िल किताबें तहरीर फ़रमाईं

1 اَلْمُبِيْنُ خَتْمَ النَّبِيِّيْن [10] 2 اَلسَّوْءُ وَالْعِقَابُ عَلَى الْمَسِيْحِ الْكَذَّاب [11] 3 قَهْرُ الدَّيَّانِ عَلٰى مُرْتَدٍّ بِقَادِيَان [12] 4 اَلْجُرَازُ الدَّيَّانِي عَلَى الْمُرْتَدِّ الْقَادِيَانِي [13] 5 جَزَاءُ اللهِ عَدُوَّهٗ بِإِبَائِهٖ خَتْمَ النُّبُوَّة [14]

अक़ीदए ख़त्मे नुबुव्वत की तशरीह से मुतअ़ल्लिक़ इमामे अहले सुन्नत رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ की एक शानदार इ़बारत मुलाहज़ा कीजिए : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ सच्चा और उस का कलाम सच्चा, मुसलमान पर जिस त़रह لَا اِلٰہَ اِلَّا اللہ मानना अल्लाह سُبۡحٰنَہٗ وَتَعَالٰی को अह़द समद लाशरीक लह जानना फ़र्ज़े अव्वल व मनाते़ ईमान है यूंही मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को ख़ातमुन्नबिय्यीन मानना उन के ज़माने में ख़्वाह उन के बाद किसी नबिय्ये जदीद की बिअ़सत को यक़ीनन मुहाल व बातिल जानना फ़र्ज़े अजल व जुज़्ए ईक़ान है وَلٰكِنْ رَّسُوْلَ اللّٰهِ وَخَاتَمَ النَّبِیّٖنَ[15] (हां अल्लाह के रसूल हैं और सब नबियों में पिछले) नस्से क़त़ई क़ुरआन है, इस का मुन्किर, न मुन्किर, बल्कि शुबा करने वाला, न शाक कि अदना ज़ईफ़ एह़तिमाले ख़फ़ीफ़ से तवहहुमे ख़िलाफ़ रखने वाला क़त़्अ़न इज्माअ़न काफ़िर मलऊ़न मुख़ल्लद फ़िन्नीरान है, न ऐसा कि वोही काफ़िर हो, बल्कि जो उस के अ़क़ीदए मल्ऊ़ना पर मुत्तलअ़ हो कर उसे काफ़िर न जाने वोह भी काफ़िर, जो उस के काफ़िर होने में शक व तरद्दुद को राह दे वोह भी काफ़िर बय्यिनुल काफ़िर जलीलुल कुफ़्रान है।[16]

**नामूसे सह़ाबा व अहले बैत की ह़िफ़ाज़त** सह़ीहुल अ़क़ीदा अहले इस्लाम की एक पहचान येह है कि वोह रसूले करीम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के तमाम सह़ाबा और अहले बैत का अदबो एह़तिराम और ताज़ीमो इकराम करते हैं। उन हस्तियों का ज़िक्र हमेशा ख़ैर और भलाई के साथ करते हैं, उन की गुस्ताख़ी को भी नाजाइज़ और ह़राम जानते हैं। आला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ ने अपनी किताबों, रिसालों और फ़तावा में जाबजा सह़ाबए किराम और अहले बैत की अ़ज़मतो शान को ज़िक्र फ़रमाया है और उन की अ़ज़मतो नामूस और अ़दालतो किरदार के ह़वाले से गुमराह लोगों के एतिराज़ात के दनदान शिकन जवाबात भी तह़रीर फ़रमाए हैं। चन्द का तआ़रुफ़ मुलाहज़ा कीजिए :

❁ शैख़ैने करीमैन (ह़ज़रात सिद्दीक़ व फ़ारूक़) رَضِیَ اللہُ عَنْہُمَا की अफ़्ज़लियते मुत़लक़ा के मौज़ूअ़ पर शानदार किताब : مَطْلَعُ الْقَمَرَیْنِ فِیْ اِبَانَةِ سَبْقَةِ الْعُمَرَیْن ❁ अफ़्ज़लियते सिद्दीक़े अकबर के मौज़ूअ़ पर अ़रबी ज़बान में किताब : اَلزُّلَالُ الْاَنْقٰی مِنْ بَحْرِ سَبْقَةِ الْاَتْقٰی[17]

❁ ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा व सिद्दीक़े अकबर की इमामते कुब्रा (यानी ख़लीफ़ए बरह़क़ होने) से मुतअ़ल्लिक़ अह़ादीस व रिवायात का बेहतरीन मज्मूआ़ : غَایَةُ التَّحْقِیْقِ فِیْ اِمَامَةِ الْعَلِیِّ وَالصِّدِّیْق[18] ❁ मौला अ़ली ह़ैदरे कर्रार رَضِیَ اللہُ عَنْہُ के ईमान की शान के बयान में शानदार रिसाला : تَنْزِیْهُ الْمَكَانَةِ الْحَیْدَرِیَّه عَنْ وَصْمَةِ عَهْدِ الْجَاهِلِیَّه[19] ❁ ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी ज़ुन्नूरैन رَضِیَ اللہُ عَنْہُ के **"जामेउ़ल क़ुरआन"** होने के तफ़्सीली बयान पर मुश्तमिल रिसाला : جَمْعُ الْقُرْاٰنِ وَبِمَ عَزْوُهٗ لِعُثْمَان[20] ❁ ह़ज़रते अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللہُ عَنْہُ की अ़ज़मतो शान और उन के दिफ़ाअ़ से मुतअ़ल्लिक़ 4 रसाइल : (1) اَلْبُشْرٰی الْعَاجِلَة مِنْ تُحَفٍ آجِلَة (2) اَلْاَحَادِیْثُ الرَّاوِیَة لِمَدْحِ الْاَمِیْرِ الْمُعَاوِیَه (3) عَرْشُ الْاِعْزَازِ وَالْاِكْرَامِ لِاَوَّلِ مُلُوْكِ الْاِسْلَامِ (4) ذَبُّ الْاَهْوَاءِ الْوَاهِیَةِ فِیْ بَابِ الْاَمِیْرِ مُعَاوِیَة[21]

आला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ अपने रसूले करीम, नबिय्ये अ़ज़ीम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अहले बैत से सच्ची मह़ब्बत और इन्तिहा दर्जे की अ़क़ीदत रखते हैं। आप رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ ने अपने फ़तावा और रसाइल वग़ैरा में क़राबते रसूल और इ़तरते रसूल के फ़ज़ाइल से मुतअ़ल्लिक़ ईमान अफ़रोज़ इक़्तिबासात तह़रीर फ़रमाए हैं। इस सिल्सिले में आला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ का बाक़ाइ़दा एक रिसाला बनाम[22] "اِرَاءَةُ الْاَدَبِ لِفَاضِلِ النَّسَبِ" भी मौजूद है, जिस में आप رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ ने नबिय्ये अकरम, रसूले आज़म صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ख़ानदान, क़बीला, आल व औलाद और पाक नसब से मुतअ़ल्लिक़ अह़ादीस व रिवायात की रौशनी में शानदार कलाम फरमाया है। आला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ नबिय्ये करीम, रसूले अ़ज़ीम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की आल से अपनी अ़क़ीदतो मह़ब्बत का इज़्हार करते हुए फ़तावा रज़विय्या में एक मक़ाम पर तह़रीर फ़रमाते हैं : "येह फ़क़ीर ज़लील बिह़म्दिही तआ़ला ह़ज़राते सादाते किराम का अदना ग़ुलाम व ख़ाक पा है। उन की मह़ब्बतो अ़ज़मत ज़रीअ़ए नजात व शफ़ाअ़त जानता है।"[23]

**नामूसे औलिया की ह़िफ़ाज़त** क़ुरआनो ह़दीस में जा बजा औलियाउल्लाह की अ़ज़मतो शान का ज़िक्र किया गया है। आला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ ने भी अपने क़लम के ज़रीए न सिर्फ़

औलियाउल्लाह के फ़ज़ाइलो मनाक़िब बयान किए बल्कि औलियाउल्लाह से मुतअ़ल्लिक़ अ़वामुन्नास में फैलाए गए वसावित और ग़लत फ़हमियों के तसल्ली बख़्श और मुदल्लल जवाबात इरशाद फ़रमाए हैं। बिल ख़ुसूस ग़ौसुल आज़म शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की जमाअ़ते औलिया में अफ़ज़लियत के मौज़ूअ़ पर आला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की शानदार तालीफ़ "طَرْدُ الْاَفَاعِی عَنْ حِمَی هَادِ رَفَعَ الرِّفَاعِ"[24] फ़तावा रज़विय्या की 28वीं जिल्द में है। इसी त़रह आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने एक रिसाला फ़तावा करामाते ग़ौसिया[25] भी तह़रीर फ़रमाया है।

इस के इ़लावा औलियाए किराम से मदद त़लब करने के सुबूत में क़ुरआनो ह़दीस के दलाइल पर मुश्तमिल रिसाला "بَرَكَاتُ الْاِمْدَادِ لِاَهْلِ الْاِسْتِمْدَادِ"[26], औलियाए किराम के ब अ़ताए इलाही रौशन ज़मीर होने और दिलों पर तसर्रुफ़ करने के मौज़ूअ़ पर रिसाला "فِقْهُ شَهَنْشَاه وَاَنَّ الْقُلُوْبَ بِيَدِ الْمَحْبُوْبِ بِعَطَاءِ اللهِ"[27]، औलियाए किराम के ईसाले सवाब के लिए अल्लाह पाक का नाम ले कर जानवर क़ुरबान करने के जवाज़ और उस के शरई त़रीक़े पर मुश्तमिल रिसाला "بُلُ الْاَصْفِيَاءِ فِیْ حُكْمِ الذَّبْحِ لِلْاَوْلِيَاءِ"[28]، और बैअ़त व ख़िलाफ़त और सज्जादा नशीनी के शरई अह़काम पर मुश्तमिल रिसाला "نَقَاءُ السَّلَافَه فِیْ اَحْكَامِ الْبَيْعَةِ وَ الْخِلَافَه"[29] आला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के अ़ज़ीम इ़ल्मी और तह़क़ीक़ी शाहकार फ़तावा रज़विय्या की मुख़्तलिफ़ जिल्दों में जगमगा रहे हैं।

**अ़क़ीदए अ़ज़मते क़ुरआन की ह़िफ़ाज़त** क़ुरआने मजीद को अल्लाह तआ़ला ने आख़िरी उम्मत की हिदायत के लिए अपने सब से आख़िरी नबी मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर नाज़िल फ़रमाया है। दौरे सह़ाबा से आज तक मुख़्तलिफ़ अन्दाज़ से क़ुरआने मजीद के अल्फ़ाज़ और मआ़नी व मत़ालिब की ह़िफ़ाज़त और ख़िदमत के लिए उ़लमा ने बहुत सी काविशें फ़रमाई। इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने भी क़ुरआने मजीद के अल्फ़ाज़ व मआ़नी की मुख़्तलिफ़ त़रीक़ों से ख़िदमत करने का शरफ़ पाया। जिन में सरे फ़ेहरिस्त उर्दू ज़बान में क़ुरआने मजीद का शानदार और मुन्फ़रिद तर्जमा बनाम "كَنْزُ الْاِيْمَان فِیْ تَرْجَمَةِ الْقُرْاٰن"[30] है, जो बिला मुबालग़ा उर्दू ज़बान में किए गए तराजिम में सब से आला, उ़म्दा और मश्हूर तर्जमा है। मुख़्तलिफ़ अदवार और मुख़्तलिफ़ मराह़िल में क़ुरआने मजीद किस त़रह मौजूदा किताबी शक्ल में जमा हुवा, उस की तफ़्सीलात पर मुश्तमिल आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने "جَمْعُ الْقُرْاٰنِ وَبِمَ عَزْوُهُ لِعُثْمَان"[31] के नाम से एक रिसाला तह़रीर किया। क़ुरआने मजीद के कलामे इलाही होने से मुतअ़ल्लिक़ कलामे नफ़्सी और कलामे लफ़्ज़ी की मारिकतुल आरा बह़स ज़िक्र करते हुए आला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान ने अ़रबी में एक रिसाला "اَنْوَارُ الْبَنَّان فِیْ تَوْحِيْدِ الْقُرْاٰن" तह़रीर फ़रमाया और इस मौज़ूअ़ पर तह़क़ीक़ का ह़क़ अदा फ़रमा दिया।

क़ुरआन, ह़दीस और इज्माए उम्मत से साबित शुदा अ़क़ाइदे इस्लामिया के तह़फ़्फ़ुज़ व दिफ़ाअ़ के ह़वाले से सुतूरे बाला में इमामे अहले सुन्नत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की चन्द किताबों का मुख़्तसर तआ़रुफ़ पेश किया गया है। अगर रज़विय्यात (यानी आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की क़लमी निगारशात, तस्नीफ़ात, तालीफ़ात, रसाइल और फ़तावा) का बनज़रे ग़ाइर मुत़ालआ़ किया जाए तो अ़क़ीदए इस्लामिया और नज़रियाते अहले सुन्नत के बयान व तशरीह़ पर इ़ल्मो तह़क़ीक़ का एक जहान आबाद है।

**अ़क़ाइद में बयां जो कुछ किया है आला ह़ज़रत ने**
**वोह ह़क़ की तर्जुमानी है, ख़ुलासा अहले सुन्नत का**

(1) देखिए : फ़तावा रज़विय्या, 15/311-450 (2) फ़तावा रज़विय्या, 15/452 (3) देखिए : फ़तावा रज़विय्या, 15/451-463 (4) देखिए : फ़तावा रज़विय्या, 29/119-200 (5) देखिए : फ़तावा रज़विय्या, 30/307-358 (6) फ़तावा रज़विय्या, 30/310 (7) देखिए : फ़तावा रज़विय्या, 30/129-264 (8) फ़तावा रज़विय्या, 30/131 (9) बहारे शरीअ़त, 1/63 मुलख़्ख़सन (10) देखिए : फ़तावा रज़विय्या, 14/331-355 (11) देखिए : फ़तावा रज़विय्या, 15/594-571 (12) देखिए : फ़तावा रज़विय्या, 15/595-610 (13) देखिए : फ़तावा रज़विय्या, 15/611-628 (14) देखिए : फ़तावा रज़विय्या, 15/629-741 (15) پ22، الاحزاب:40 (16) फ़तावा रज़विय्या, 15/630, (17) देखिए : फ़तावा रज़विय्या, 28/491-684 (18) देखिए : फ़तावा रज़विय्या, 28/469-489 (19) देखिए : फ़तावा रज़विय्या, 28/433-458 (20) देखिए : फ़तावा रज़विय्या, 26/439-452 (21) देखिए : फ़तावा रज़विय्या, 5/478। येह चारों रसाइल दस्तयाब नहीं लेकिन येह तो साबित हुवा कि फ़ज़ाइले अमीरे मुआविया رَضِیَ اللهُ عَنْه के मस्अले को आला ह़ज़रत ने कितना अहम समझा और चार रसाइल तह़रीर फ़रमा कर दुश्मनाने मुआविया के दांत खट्टे फ़रमा दिए। (22) देखिए : फ़तावा रज़विय्या, 23/201-256 (23) फ़तावा रज़विय्या, 29/587 (24) देखिए : फ़तावा रज़विय्या, 28/367-402 (25) देखिए : फ़तावा रज़विय्या, 28/403-430 (26) देखिए : फ़तावा रज़विय्या, 21/301-337 (27) देखिए : फ़तावा रज़विय्या, 21/395-339 (28) देखिए : फ़तावा रज़विय्या, 20-269-279 देखिए (29) देखिए : फ़तावा रज़विय्या, 21/461-495 (30) देखिए : फ़तावा रज़विय्या, 26/439-452 (31) देखिए : फ़तावा रज़विय्या, 26/439-452.

# ख़लीफ़ए आला ह़ज़रत
# मौलाना मुफ़्ती क़ाज़ी मुह़म्मद नूर क़ादिरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه

मुहर्रमुल ह़राम 1331 हि. की एक मुबारक शब थी, एक सालेह़ जवान, साह़िबे बसीरत आ़लिमे दीन मदीना शरीफ़ में मह़्वे इस्तिराह़त (यानी सो रहे) थे, ख़्वाब में क्या देखते हैं कि प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और ह़ज़राते शैख़ैने करीमैन यानी ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ और ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़े आज़म رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا जल्वा फ़रमा हैं, थोड़ी देर बाद ह़ज़राते शैख़ैन तशरीफ़ ले गए, येह तन्हा नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास रह गए, आगे बढ़ कर नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मुबारक हाथ पकड़ कर अपने सीने पर रखते हुए चलने लगे और अ़क़ाइद से मुतअ़ल्लिक़ यके बाद दीगरे तीन सुवालात अ़र्ज़ किए, नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन के हर सुवाल का जवाब अ़ता फ़रमा कर आख़िर में येह इरशाद फ़रमाया कि **“जो अह़मद रज़ा ख़ां कहते हैं वोह ह़क़ व सिदक़ (सच) है।”** येह ख़्वाब देखने वाले आला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه से इतना मुतअस्सिर हुए कि मदीना शरीफ़ में ही निय्यत कर ली कि मैं आला ह़ज़रत के पास बरेली शरीफ़ ज़रूर जाऊंगा और आप की ज़ियारत करूंगा।[1] फिर जब आप हिन्द आए तो आला ह़ज़रत की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए, शरफ़े तलम्मुज़ ह़ासिल कर के इजाज़ते ह़दीस और सिल्सिलए क़ादिरिय्या रज़विय्या में ख़िलाफ़त से सरफ़राज़ हुए।[2] येह अ़ज़ीम हस्ती **अ़ल्लामा क़ाज़ी मुह़म्मद नूरी क़ादिरी साह़िब** हैं। उन का मुख़्तसर तज़्किरा आने वाली सुत़ूर में मुलाह़ज़ा कीजिए :

**विलादत :** ख़लीफ़ए आला ह़ज़रत, आ़लिमे रब्बानी ह़ज़रते मौलाना क़ाज़ी अबुल फ़ख़्र मुह़म्मद नूर क़ादिरी सुन्नी ह़नफ़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की विलादते बा सआ़दत 13 रजब 1307 हि. मुताबिक़ 5 मार्च 1890 ई. में एक इल्मी, कहोट क़ुरैशी घराने में हुई। वालिदे गिरामी ह़ज़रते मौलाना क़ाज़ी आ़लम नूर क़ुरैशी और दादा ह़ाफ़िज़ मुह़म्मद सरदार अह़मद क़ुरैशी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِمَا थे। आप की ज़ाती डायरी में तह़रीर कर्दा ख़ानदानी शजरे के मुताबिक़ आप का सिल्सिलए नसब नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के चचा जान ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्बास رَضِيَ اللهُ عَنْه से जा मिलता है।[3]

**इ़ल्मी ख़ानदान के चश्मो चराग़ :** आप का ख़ानदान कई पुश्तों से इ़ल्मो फ़ज़्ल का गहवारा है, आप के दादाजान ह़ज़रते अ़ल्लामा ह़ाफ़िज़ मुह़म्मद सरदार अह़मद क़ुरैशी साह़िब, बह़रुल उ़लूम ह़ाफ़िज़ मुह़म्मद अ़ज़ीम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के शागिर्द, जय्यिद आ़लिमे दीन, मुह़क़्क़िक़ व मुदक़्क़िक़ और उस्ताज़ुल उ़लमा थे। शैख़े त़रीक़त ख़्वाजा ह़ाफ़िज़ ग़ुलाम नबी लिल्लाही, आ़लिमे शहीर मौलाना ह़ाफ़िज़ अ़ब्दुल ह़लीम करयालवी और अ़ल्लामा मुह़म्मद

नूर साहिब के वालिद मौलाना आ़लम नूर क़ुरैशी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ आप के ही शागिर्द हैं।

**तालीमो तरबियत :** कमज़ोर बीनाई के बावुजूद आप को हुसूले इ़ल्म का बहुत शौक़ था, वालिदे गिरामी ह़ज़रते मौलाना क़ाज़ी आ़लम नूर साहिब से इब्तिदाई तालीम ह़ासिल की। इस के बाद अपने आ़लाक़े के जय्यिद उ़लमा से इस्तिफ़ादा किया। उत्तर प्रदेश हिन्द भी तशरीफ़ ले गए, शाहजहांपुर और दीगर शहरों में इ़ल्मे दीन ह़ासिल किया, आप बहुत ज़हीनो फ़तीन थे। दीगर उ़लूम के साथ साथ अ़रबी ज़बान पर कामिल दस्तरस रखते थे और अपने ज़माने के उ़लमाए किराम से अ़रबी ज़बान में मुरासलत किया करते थे।[4]

**बग़दाद शरीफ़ का सफ़र :** शौक़े इ़ल्मे दीन और लिक़ाए उ़लमा व मशाइ़ख़ आप के बग़दाद शरीफ़ के सफ़र का बाइ़स हुवा, वहां ह़ाज़िर हुए, अकाबिर उ़लमा व मशाइ़ख़ से इस्तिफ़ादा किया और अस्नाद ह़ासिल कीं। तख़्मीनन येह सफ़र 1328 हि. या 1329 हि. को हुवा।

**ह़रमैन शरीफ़ैन में ह़ाज़िरी :** शव्वालुल मुकर्रम 1329 हि. मुताबिक़ अक्तूबर 1911 ई़ को ह़ज की सआ़दत से बहरावर हुए। क़ुत्बे मक्कए मुकर्रमा, शैख़ुल दलाइल ह़ज़रते मौलाना शाह अ़ब्दुल ह़क़ सिद्दीक़ी मुह़द्दिसे इलाहाबादी नक़्शबन्दी ह़नफ़ी मुहाजिर मक्की رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ से जुम्ला उ़लूम और औरादो वज़ाइफ़ की इजाज़त ह़ासिल की। इस के बाद तीन साल मदीनए मुनव्वरा में मुक़ीम रहे और उ़लमाए मदीना से ख़ूब इस्तिफ़ादा किया।[5] यहां आप "सूफ़ी" के लक़ब से मारूफ़ थे। आप ने 1330 हि. को मदीना शरीफ़ में ह़ज़रते मौलाना सय्यिद अह़मद अ़ली रामपुरी और ह़ज़रते मौलाना करीमुल्लाह पंजाबी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہِمَا से मुलाक़ातें कीं, उन्हों ने आप की दावत भी की, उन ह़ज़रात ने उन्हें اَلدَّوۡلَۃُ الۡمَکِّیَّۃ के बाज़ मज़ामीन सुनाए, जिसे सुन कर आप ख़ुश हुए, मौलाना करीमुल्लाह साहिब ने उन्हें तक़रीज़ लिखने का कहा, आप ने फ़रमाया कि मैं वतन लौट रहा हूं वहां जा कर आला ह़ज़रत رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ से मुलाक़ात भी करूंगा और अच्छे अन्दाज़ से तक़रीज़ भी लिखूंगा।[6] अ़ल्लामा अह़मद अ़ली साहिब ने अ़ल्लामा शैख़ यूसुफ़ नब्हानी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ की किताब "जवाहिरुल बह़ार" अपने दस्तख़त के साथ आप को अ़ता फ़रमाई।[7]

**ह़रमैन शरीफ़ैन से वापसी :** ज़ुल क़ादतिल ह़राम 1331 हि. मुताबिक़ अक्तूबर 1913 ई़ में नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ब ज़रीए ख़्वाब आप को ह़ज करने और अपने अहलो अ़याल की त़रफ़ लौटने का हुक्म फ़रमाया। चुनान्चे ह़ज से पहले आप ने मदीना शरीफ़ को अल वदाअ़ कहते हुए एक दर्द भरा फ़िराक़िया क़सीदा लिखा जो आप की डायरी में मौजूद है। वतन वापस आ कर आप की मौलाना करीमुल्लाह साहिब से मुरासलत जारी रही मगर अद्दौलतुल मक्किया पर तक़रीज़ लिख सके या नहीं उस की सराहत नहीं मिल सकी। अलबत्ता इस मौज़ूअ़ पर एक मुस्तक़िल किताब اَلنَّیِّرُ الوضی فِی علمِ النَّبی तह़रीर फ़रमाई।[8]

**बैअ़तो इजाज़त :** इब्तिदाई उ़म्र में सिल्सिए चिश्तिया के शैख़े त़रीक़त सय्यिद साहिब की सोह़बत या बैअ़त का शरफ़ पाया।[9] आप को आस्तानए आ़लिया क़ादिरिय्या गीलानिया बग़दाद शरीफ़ के सज्जादा नशीन ह़ज़रते शैख़ सय्यिद अ़ली क़ादिरी गीलानी से भी सनदे इजाज़त ह़ासिल थी। ह़रमैने त़य्यिबैन से वापसी पर बरेली शरीफ़ ह़ाज़िर हुए और आला ह़ज़रत इमामे अह़मद रज़ा ख़ान क़ादिरी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ से शरफ़े तलम्मुज़ ह़ासिल कर के इजाज़ते ह़दीस और सिल्सिलए क़ादिरिया रज़विया में ख़िलाफ़त से सरफ़राज़ हुए।[10] आला ह़ज़रत ने आप को जो اَلۡاِجَازَاتُ الۡمَتِیۡنَۃُ لِعُلَمَاءِ بَکَّۃَ وَ الۡمَدِیۡنَۃ का नुस्ख़ा अपने दस्तख़त के साथ अ़ता फ़रमाया वोह उन के वुरसा के पास महफ़ूज़ है।

इस पर अ़ल्लामा मुह़म्मद नूर क़ादिरी साहिब की अ़रबी तह़रीर है जिस का तर्जमा यूं है : "यानी फ़क़ीर (अल्लाह पाक उस से राज़ी हो) कहता है कि हमारे सरदार और शैख़, दलाइले क़ाहिरा देने वाले, पाकीज़ा दीन के मददगार, लोगों को फ़ायदा पहुंचाने वाली किताबों के मुसन्निफ़, अहले सुन्नत व जमाअ़त के आ़लिम, अहले इ़ल्मो मारिफ़त में मुम्ताज़, मुफ़स्सिर, मुह़द्दिस, फ़क़ीह, ह़ाफ़िज़, ह़ाजी अह़मद रज़ा ख़ान बरेलवी, नेकियों का हुक्म फ़रमाने वाले और बुराइयों से रोकने वाले नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सच्चे आ़शिक़, अल्लाह पाक उन्हें सलामत रखे। उन्हों ने अपनी इस किताब "اَلۡاِجَازَاتُ الۡمَتِیۡنَۃُ" में मुझे पहली इजाज़त उन मक़ामात पर उन अल्फ़ाज़ से दी सफ़ह़ा 12 : "بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡم" से सफ़ह़ा 13 : "وھو یرید العدوان من بعد" तक। इस के बाद सफ़ह़ा 17 पर उन के इस क़ौल : "یامولانا الفاضل الحسن الشمائل" से उन की आख़िरी इजाज़त तक, اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِین सफ़ह़ा 23 तक। बेशक

(اَلْاِجَازَاتُ الْمَتِیْنَہ میں) जो मुझे इजाज़तें मिली हैं और मौलाना शैख़ आरिफ़ मुहम्मद अ़ब्दुल ह़क़ मक्की वग़ैरा मशाइख़े किराम رَحْمَۃُاللہِ عَلَیْہِم ने जो इजाज़तें दी हैं उन सब की इन शराइत़ पर जो उस के मक़ाम पर मज़्कूर हैं, अपनी औलाद और क़रीबी लोगों में से अहल अफ़राद को इजाज़त देता हूं, ऐ अल्लाह ! तू हम से उस को क़बूल फ़रमा बेशक तूही सब से बेहतर सुनने और जानने वाला है और अल्लाह पाक दुरूदो सलाम नाज़िल फ़रमाए हमारे आक़ा मुहम्मद صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और आप की इ़ज़्ज़त वाली आल पर। अपने परवरदिगार के मोह़ताज मुह़म्मद नूर सुन्नी ह़नफ़ी क़ादिरी ने 23 रजब 1332 हिजरी को उसे अपने क़लम से लिखा है, अल्लाह पाक नेकियों का हुक्म फ़रमाने वाले और बुराइयों से रोकने वाले नबी صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सदक़े उस से राज़ी हो।"

इस से मालूम होता है कि आप को येह इजाज़त ज़ुल क़ादतिल ह़राम 1331 हि. मुत़ाबिक़ अक्तूबर 1913 ई़ को बाद 23 रजब 1332 हि. मुत़ाबिक़ 17 जून 1914 ई़ से पहले ह़ासिल हुई।

**इ़ल्मी मक़ाम और उ़लमा से रवाबित़ :** आप आ़लिमे जलील, मुफ़्तिए इस्लाम, सूफ़िए बा सफ़ा, शाइ़र और मुसन्निफ़ थे। अ़रबी, उर्दू और पंजाबी में नज़्मो नस्र में कामिल दस्तरस थी, आप के कई फ़तावा उस वक़्त के मश्हूर हफ़्त रोज़ा सिराजुल अख़बार में शाएअ़ हुए।[11] उ़लमाए अहले सुन्नत से अ़रबी में मुरासलत भी फ़रमाते थे। जिन उ़लमा से आप का राबित़ा था उन में से ह़ज़रत क़िब्ला आ़लिम पीर महर अ़लीशाह गोलड़वी, अमीरे मिल्लत ह़ज़रते पीर सय्यिद जमाअ़त अ़ली शाह मुह़द्दिस अ़ली पूरी, सदरुल अफ़ाज़िल अ़ल्लामा नई़मुद्दीन मुरादाबादी और ह़ज़रते अ़ल्लामा फ़ैज़ुल ह़सन फ़ैज़ رَحْمَۃُاللہِ عَلَیْہِم वग़ैरा शामिल हैं।[12] आला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा رَحْمَۃُاللہِ عَلَیْہِ की जो किताब शाएअ़ होती वोह बरेली शरीफ़ से आप को भेज दी जाती थी।[13]

**ख़िदमाते दीन, तस्नीफ़ो तालीफ़ :** आप ने अपनी ज़िन्दगी को इ़ल्मे दीन के ह़ुसूल और उस की इशाअ़त के लिए वक़्फ़ कर रखा था। आप ने अ़रबी, उर्दू और पंजाबी में नज़्मो नस्र पर मुश्तमिल 15 कुतुब तस्नीफ़ कीं, जिन में 9 के नाम येह हैं :

(1) ردّ دفع الجهال عن تکرار الجماعة (अ़रबी/उर्दू) (2) مجموعة المورد الروی الشهاب علی المفتری الکذاب (उर्दू) (3) المراة الحلیه للحلیة النبویة فی المولد النبی (पंजाबी मन्ज़ूम) (4) سلوك اکمل السبیل یا التوجه الی افضل الرسول (पंजाबी मन्ज़ूम) (5) احسن النغم فی مدح الغوث الاعظم (पंजाबी मन्ज़ूम) (6) التوضیحات لمانی اشعة اللمعات (पंजाबी मन्ज़ूम) (7) الخزی المزید (उर्दू, मत़बूआ़) (8) النیر الوضی فی علم النبی (अ़रबी) (9) (अ़रबी मुसव्वदा)।[14]

**शादी व औलाद :** आप की शादी मौज़अ़ चकोड़ा के एक इ़ल्मी ख़ानदान में हुई। इस के बाद आप मुस्तक़िल चकोड़ा में रिहाइश पज़ीर हो गए आप के बेटे ह़ज़रते मौलाना क़ाज़ी ह़कीम अह़मद चकोड़वी त़िब व ह़िक्मत में मश्हूर और आप के इ़ल्मी जानशीन थे। इसी त़रह़ आप के ख़ानदान के मौलाना ह़कीम मुह़म्मद फ़ारूक़ साह़िब बेहतरीन ह़कीम और जामेअ़ मस्जिद चकोड़ा के इमाम हैं।

**वफ़ात व मदफ़न :** 1914 ई़ के आख़िर और 1915 ई़ के शुरूअ़ में त़ाऊ़न की बीमारी फैल गई, घर के घर वीरान हो गए, आप का विसाल उसी त़ाऊ़न की बीमारी में सफ़रुल मुज़फ़्फ़र या रबीउ़ल अव्वल 1333 हि. मुत़ाबिक़ जनवरी 1915 ई़[15] को कलिमा शहादत पढ़ते हुए हो गया, आप के ख़ानदान की छे औ़रतें भी उसी दिन फ़ौत हुईं, सब का जनाज़ा इकठ्ठा हुवा। आप को क़ब्रिस्तान मियां साह़िब बाबा अ़ब्दुश्शकूर (رَحْمَۃُاللہِ عَلَیْہِ)[16] में दफ़्न किया गया जहां आज भी आप का मज़ार मौजूद है।

राक़िम कुछ सालों से ख़ुलफ़ा व तलामिज़ा आला ह़ज़रत की मालूमात, उन के वाबस्तगान से मुलाक़ात और उन के मज़ारात की ज़ियारात में मसरूफ़ है, ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती क़ाज़ी मुह़म्मद नूर क़ादिरी साह़िब के बारे में सब से ज़ियादा मालूमात मुसन्निफ़े कुतुब कसीरा व मुन्तज़िमे आला बहाउद्दीन ज़करिय्या लाइब्रेरी पीरज़ादा आ़बिद हुसैन शाह साह़िब[17] से ह़ासिल हुईं।

---

(1) उ़लमाए अ़रब के ख़ुतूत फ़ाज़िले बरेलवी के नाम, स. 111 (2) तज़्किरए उ़लमाए अहले सुन्नत, स. 120 (3) तज़्किरए उ़लमाए अहले सुन्नत, स. 118 (4) तारीख़े अद्दौलतुल मक्किया, स. 68 (5) तज़्किरए उ़लमाए अहले सुन्नत, स. 119 (6) उ़लमाए अ़रब के ख़ुतूत फ़ाज़िले बरेल्वी के नाम, स. 111 (7) तज़्किरए उ़लमाए अहले सुन्नत, स. 119 (8) तज़्किरए उ़लमाए अहले सुन्नत, स. 119, तारीख़ अद्दौलतुल मक्किया, स. 69 (9) उ़लमाए अ़रब के ख़ुतूत फ़ाज़िल बरेलवी के नाम, स. 110 (10) तज़्किरए उ़लमाए अहले सुन्नत, स. 119, तारीख़ अद्दौलतुल मक्किया, स. 69 (11) सिराजुल अख़बार, 6 फरवरी 1995 इ. स. 17 (12) तज़्किरए उ़लमाए अहले सुन्नत, स. 120 (13) तज़्किरए उ़लमाए अहले सुन्नत, स. 45 (14) तज़्किरए उ़लमाए अहले सुन्नत, स. 120 (15) तज़्किरए उ़लमाए अहले सुन्नत, स. 122 (16) सिराजुल अख़बार, 6 फरवरी 1915 इ., स. 17 (17) तारीख़े अद्दौलतुल मक्किया, स. 68

# अपने बुज़ुर्गों को याद रखिये

मज़ार ह़ज़रते ख़्वाजा सय्यिद जमालुद्दीन सूरती رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه

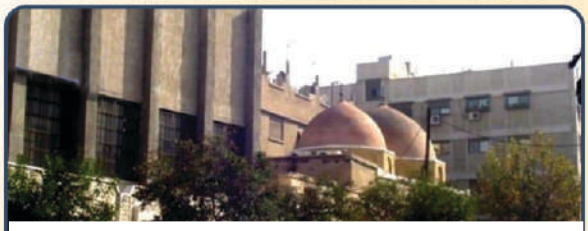

मज़ार शैख़ मुह़म्मद सअ़दुद्दीन जबावी क़िब्याती शाफ़ेई़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه

सफ़रुल मुज़फ़्फ़र इस्लामी साल का दूसरा महीना है। इस में जिन सह़ाबए किराम, औलियाए इ़ज़ाम और उ़लमाए इस्लाम का विसाल या उ़र्स है, उन में से 105 का मुख़्तसर ज़िक्र "**माहनामा फ़ैज़ाने मदीना**" सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1439 हि. ता 1447 हि. के शुमारों में किया जा चुका है मज़ीद 12 का तआ़रुफ़ मुलाह़ज़ा फ़रमाइए :

## सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان

1 ह़ज़रते अबू शैख़ उबय बिन साबित बिन मुन्ज़र अन्सारी ख़ज़रजी رَضِیَ اللهُ عَنْه ह़ज़रते ह़स्सान बिन साबित अन्सारी رَضِیَ اللهُ عَنْه के भाई हैं, येह ग़ज़्वए बद्र और ग़ज़्वए उ़ह़ुद में शरीक हुए, आप की शहादत वाक़िअ़ए बिअरे मऊ़ना सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 4 हि. में हुई। उन्हों ने औलाद न छोड़ी।[1]

2 ह़ज़रते मुन्ज़र बिन मुह़म्मद बिन उ़क़्बा बिन उ़ह़ैह़ा बिन जुलाह़ औसी अन्सारी رَضِیَ اللهُ عَنْه ग़ज़्वए बद्र और ग़ज़्वए उ़ह़ुद में शरीक हुए और वाक़िअ़ए बिअरे मऊ़ना सफ़र 4 हि. में जामे शहादत नोश फ़रमाया। उन के जद्दे आला उ़ह़ैह़ा बिन जुलाह़ रसूले करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दादाजान ह़ज़रते अ़ब्दुल मुत्तलिब के मां शरीक भाई थे।[2]

## उ़लमाए इस्लाम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام

3 इमाम अबु ज़करिय्या याह्या बिन अ़ब्दुल्लाह बिन बुकैर कुरशी मख़ज़ूमी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه 154 या 155 हि. में पैदा हुए और विसाल 15 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 231 हि. में फ़रमाया। आपने इमाम मालिक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه से 17 बार मौत़ा की अह़ादीस सुनी। आप मुह़द्दिसे कबीर और इमामुल अस्र थे।[3]

4 उ़म्दतुल मुह़क़्क़िक़ीन ह़ज़रते मौलाना क़ाज़ी अ़ब्दुन्नबी कौकब رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की पैदाइश 1355 हि. में गुजरात में हुई और एक ह़ादिसे में 19 सफ़र 1398 हि. को विसाल फ़रमाया। आप तल्मीज़ मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी, फ़ारिग़ुत्तह़सील आ़लिमे दीन, एम ए अ़रबी, पंजाब यूनीवर्सिटी, उस्ताज़ जामिआ़ नई़मिया, सद्र मुदर्रिस जामिआ़ गंजबख़्श, ख़त़ीब जामेअ़ मस्जिद ताजे शाह, रीसर्च स्कोलर मख़्तूतात व लेकचरार पंजाब यूनीवर्सिटी, सियासी राहनुमा, बानी यौमे रज़ा और मुसन्निफ़े कुतुब हैं। 19 कुतुबो रसाइल में मख़्तूतात का मज्मूआ़ अलख़ज़ाइन (2 जिल्दें) और मक़ालाते यौमे रज़ा (3 जिल्दें) शामिल हैं।[4]

5 उस्ताज़ुल उ़लमा ह़ज़रते मुफ़्ती मुह़म्मद हुसैन शौक़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की पैदाइश 1912 ई़ को एक इ़ल्मी घराने में हुई और 2 सफ़र 1406 हि. को विसाल फ़रमाया। आप जामेअ़ माक़ूल व मन्क़ूल, बेहतरीन मुदर्रिस, तल्मीज़ क़िब्ला पीर महर अ़ली शाह, मुदर्रिस मदरसा ज़ीनतुल इस्लाम और मोहतमिम व मुदर्रिस दारुल उ़लूम मह़मूदिया रज़विया थे। शैख़ुल ह़दीस मुह़म्मद शरीफ़ रज़वी मर्ह़ूम आप के ही शागिर्द हैं।[5]

6 शेरे बिहार मुफ़्ती मुह़म्मद अस्लम रज़वी नूरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की पैदाइश 1353 हि. को मौज़अ़ महवारह ज़िला मुज़फ़्फ़रपुर, बिहार, हिन्द में हुई। आप आ़लिमे दीन, फ़ाज़िले दारुल उ़लूम मज़्हरे इस्लाम बरेली शरीफ़, मुरीदो ख़लीफ़ा मुफ़्तिए आज़मे हिन्द, बेहतरीन मुदर्रिस व ख़त़ीब, मुनाज़िरे अहले सुन्नत, मुफ़्तिए दारुल उ़लूम छपरा, साह़िबे तस्नीफ़ और बानी व मोहतमिम जामिआ़ क़ादिरिया मक़्सूद पुर, मुज़फ़्फ़रपुर थे, आप ने मादरे इ़ल्मी समेत छे इदारों में 58 साल पढ़ाया। आप का विसाल 11 सफ़र 1433 हि. को

हुवा, तदफ़ीन अपने क़ाइम कर्दा जामिआ क़ादिरिया मक़्सूद पुर में की गई।[6]

## औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام

**7** हज़रते सय्यिद अबू उ़मर मुसा सानी हसनी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की पैदाइश मुहर्रम 221 हि. को मदीनए मुनव्वरा में हुई और यहीं माहे सफ़र 288 हि. को वफ़ात पाई, एक क़ौल के मुताबिक़ अ़ब्बासी ख़लीफ़ा मोहतदी बिल्लाह के दौर हुकूमत में कूफ़ा या सुवैक़ (नज़्द मदीना शरीफ़) के क़रीब 256 हि. में शहीद हुए, 238 हि. को अपने वालिद हज़रते शैख़ सालेह़ अ़ब्दुल्लाह رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه से ख़िलाफ़त ह़ासिल की। आप रावि ए ह़दीस और ज़ोहदो तक़्वा के पैकर थे।[7]

**8** दाना सूरती ह़ज़रते ख़्वाजा सय्यिद जमालुद्दीन सूरती رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ख़्वारज़मी ख़ानदान इमामे अ़ली नक़ी अ़स्करी से हैं, पैदाइश 898 हि. में ख़ुस्बूक़, ख़्वारज़म में हुई, रूहानी त़ौर पर ख़्वाजा उ़बैदुल्लाह अह़रार नक़्शबन्दी से फ़ैज़ पाया, शहज़ादए दानियाल बिन बादशाह अकबर उन का मुरीद था। जाए पैदाइश से हिजरत कर के सूरत, हिन्द में आए और यहीं 5 सफ़र 1015 हि. विसाल फ़रमाया, मज़ार मर्जए ख़लाइक़ है।[8]

**9** शैख़ शम्सुद्दीन मुहम्मद बिन शैख़ मुहम्मद सादुद्दीन जबावी क़ुबैबाती शाफ़ेई رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ज़ाविया सादुद्दीन, दिमश्क़ के सज्जादा नशीन, मक़्बूल ख़ासो आ़म और निहायत जव्वाद व सख़ी थे। आप लोगों की ख़ुशी ग़मी में शरीक होते, दस्तरख़्वान में बहुत वुस्अ़त रखते, महाफ़िल की सदारत करते थे, ख़ानक़ाह को वुस्अ़त दे कर अज़ सरे नौ तामीर किया, विसाल 23 सफ़र 1020 हि. को फ़रमाया, ख़ानक़ाह सअ़दुद्दीन में तदफ़ीन की गई।[9]

**10** मश्हूर सूफ़ी शाइ़र मिर्ज़ा अबुल मआ़नी अ़ब्दुर क़ादिर बेदिल देहलवी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की पैदाइश 1054 हि. में राज महल, सूबा बंगाल, हिन्द में हुई और 2 या 4 सफ़र 1133 हि. को वफ़ात पाई, मज़ार देहली में है। आप इब्तिदाई इस्लामी उ़लूम से आगाह, कसीरुल मुतालआ़, सूफ़ियाए अ़स्र के सोह़बत याफ़्ता, साह़ेबे कश्फ़ो करामत, क़नाअ़त, हमदर्दी, ख़ुद्दारी, ख़ुदा तरसी जैसी सिफ़ात से मुत्तसिफ़ थे। शेरी मज्मूआ़ कुल्लियाते बेदिल देहलवी यादगार है।[10]

मज़ार मिर्ज़ा अबुल मआ़नी अ़ब्दुर क़ादिर बैदिल दहलवी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه

मज़ार सय्यिद ह़ैदर अ़ली शाह गीलानी सुलैमानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه

**11** पीरे त़रीक़त ह़ाफ़िज़ सय्यिद ह़ैदर अ़ली शाह गीलानी सुलैमानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की पैदाइश 1276 हि. को ख़ानदान ग़ौसुल आज़म में हुई और 20 सफ़र 1356 हि. को विसाल फ़रमाया, मज़ार दामने कोह, जुब्बी शरीफ़ नज़्द जौहराबाद ज़िला ख़ौशाब में है। आप ह़ाफ़िज़े क़ुरआन, फ़ाज़िले मदरसा सुलैमानिया तोंसा शरीफ़, मुरीदो ख़लीफ़ा ख़्वाजा अल्लाह बख़्श तोंसवी, साह़िब मुजाहदा व करामात थे।[11]

**12** साह़िबे इ़ल्मे लदुन्नी ह़ज़रते मियां मुह़म्मद ह़यात नक़्शबन्दी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की पैदाइश 1341 हि. और वफ़ात 5 सफ़र 1407 हि. को हुई, मज़ार मुबारक शादबाग़ कालोनी, में है। आप आ़रिफ़ बिल्लाह, मुरीदो ख़लीफ़ा फ़ुज़लां वाली सरकार मियां फ़ज़्ल दीन, कसीरुल मुरीदीन और साह़िबे करामत बुज़ुर्ग थे।[12]

---

(1)اسد الغابہ، 1/75-طبقات ابن سعد، 3/382 (2)اسد الغابہ، 5/286-الاصابہ، 1/188، 189 (3)سیر اعلام النبلاء، 9/260، 261 (4)ویب سائٹ (5) تذکرہ علمائے اہل سنت، ص83 تا 86 (6)شیر بہار، ص28، 50، 62، 235 (7) اتحاف الاکابر، ص158-تذکرہ مشائخ قادریہ، ص56 (8)تذکرۃ الانساب، ص238، 239 (9)لطف السمر، ص56 تا 61-خلاصۃ الاثر، 4/160، 161 (10)حیرت زار، ص10 تا 17 (11)خوشاب سرزمین اولیاء، ص178 تا 185 (12)حیات صادق، ص46 تا 49۔

# जौ की रोटी
## (Barley)

अल्लाह पाक के आख़िरी नबी ह़ज़रत मुहम्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इन्तिहाई क़नाअ़त पसन्द और सादा खाना तनावुल फ़रमाया करते थे, कई रिवायात में है कि आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के खाने में अक्सर बिग़ैर छने हुए जौ के आटे की रोटी होती थी।[1]

त़बक़ात इब्ने साद में है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ और ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا बिग़ैर छने जौ के आटे की रोटी तनावुल फ़रमाया करते थे।[2] ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا फ़रमाती हैं : रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने कभी भी लगातार दो दिन तक सैर हो कर जौ की रोटी नहीं खाई, यहां तक कि आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم विसाले ज़ाहिरी फ़रमा गए।[3]

ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा आज़मी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने कभी चपाती नहीं खाई, जौ की मोटी मोटी रोटियां अक्सर ग़िज़ा में इस्तिमाल फ़रमाते।[4]

खाना तो देखो जौ की रोटी, बे छना आटा, रोटी भी मोटी
वोह भी शिकम भर रोज़ न खाना, صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم[5]

हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जौ की रोटी के साथ मुख़्तलिफ़ ग़िज़ाएं भी तनावुल फ़रमाई हैं जैसा कि

**जौ की रोटी के साथ खजूर तनावुल फ़रमाई :** ह़ज़रते यूसुफ़ बिन अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه फ़रमाते हैं कि मैंने हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को देखा कि आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जौ की रोटी का एक टुकड़ा लिया, इस पर खजूर रखी और फ़रमाया : येह उस (जौ की रोटी) का सालन है और खा लिया।[6]

खजूर को सालन फ़रमाना मिजाज़न है यानी रोटी उस से खाई जा सकती है और येह मिस्ल सालन के है। ख़याल रहे कि जो सर्द ख़ुश्क है और खजूर गर्म तर। लिहाज़ा जौ की रोटी की इस्लाह़ भी खजूर से हो जाती है। इस ह़दीस में सब्रो क़नाअ़त की बेमिसाल तालीम है।[7]

**ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه की ज़ियाफ़त :** ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه ने ग़ज़्वए ख़न्दक़ के मौक़े पर जौ की रोटी और बकरी के गोश्त से रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और आप के अस्ह़ाब की ज़ियाफ़त की।[8]

**एक दर्ज़ी सह़ाबी رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه की ज़ियाफ़त :** इसी त़रह ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه फ़रमाते हैं कि एक दर्ज़ी ने हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की खाने की दावत की, तो मैं भी नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ चला गया, उस ने जौ की रोटी और शोरबा पेश किया जिस में कद्दू और ख़ुश्क किए हुए नमकीन गोश्त की बोटियां थीं। खाने के दौरान मैं ने देखा कि रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم प्याले के किनारों से कद्दू की क़ाशें तलाश कर के तनावुल फ़रमा रहे हैं। इसी लिए मैं उस दिन से हमेशा कद्दू पसन्द करने लगा।[9]

**ह़ज़रते फ़ात़िमतुज़्ज़हरा ने जौ की रोटी का टुकड़ा पेश किया :** ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه फ़रमाते हैं कि एक बार ह़ज़रते फ़ात़िमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا ने जौ की रोटी का एक टुकड़ा नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में पेश किया तो आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : येह पहला खाना है जो तीन दिन के बाद तुम्हारे वालिद ने खाया है।[10]

सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُم भी हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अदा को अदा करते हुए जौ की रोटी खाते जैसा कि ह़ज़रते

**उ़स्माने ग़नी** رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ लोगों को अमीरों वाला खाना खिलाते थे और ख़ुद जौ की रोटी, सिर्का और ज़ैतून पर गुज़ारा करते थे।[11]

**मौला अ़ली** رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ **का जौ की रोटी तनावुल फ़रमाना :** ह़ज़रते सुवैद बिन ग़फ़ला رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं मुसलमानों के चौथे ख़लीफ़ा, ह़ज़रते मौलाए काएनात, अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ की ख़िदमते सरापा अ़ज़मत में दारुल अमारा कूफ़ा में ह़ाज़िर हुवा। आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ के सामने जो शरीफ़ की रोटी और दूध का एक पियाला रखा हुवा था, रोटी ख़ुस्क और इस क़दर सख़्त थी कि कभी अपने हाथों से और कभी घुटने पर रख कर तोड़ते थे। येह देख कर मैं ने आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ की कनीज़ फ़िज़्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا से कहा, आप को इन पर तरस नहीं आता ? देखिए तो सही रोटी पर भूसी लगी हुई है इन के लिए जौ शरीफ़ छान कर नर्म रोटी पकाया करें। ताकि तोड़ने में मशक़्क़त न हो। फ़िज़्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا ने जवाब दिया, अमीरुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ ने हम से अ़हद लिया है कि उन के लिए कभी भी जो शरीफ़ छान कर न पकाया जाए। इतने में अमीरुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ मेरी त़रफ़ मुतवज्जेह हुए और फ़रमाया : ऐ इब्ने ग़फ़ला ! आप इस कनीज़ से क्या फ़रमा रहे हैं ? मैं ने जो कुछ कहा था अ़र्ज़ कर दिया और इल्तिजा की : या अमीरल मोमिनीन ! आप अपनी जान पर रह़म फ़रमाइए और इतनी मशक़्क़त न उठाइए। तो आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ ने फ़रमाया : ऐ इब्ने ग़फ़ला ! दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और आप के अहलो इ़याल ने कभी तीन दिन बराबर गेहूं की रोटी शिकम सैर हो कर नहीं खाई और न ही कभी आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लिए आटा छान कर पकाया गया।[12]

आला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ अपने मश्हूरे ज़माना सलाम में हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सादा ग़िज़ा और क़नाअ़त का ज़िक्र कुछ यूं फ़रमाते हैं :

कुल जहां मिल्क और जौ की रोटी ग़िज़ा
उस शिकम की क़नाअ़त पे लाखों सलाम[13]

**जौ की रोटी के फ़वाइद :** जौ में जिस्मानी क़ुव्वत का बेश बहा ख़ज़ाना पोशीदा है, जौ ख़ून के अन्दर कोलेस्ट्रोल को कम रखने में अहम किरदार अदा करता है और जिस्म को फ़र्बा नहीं होने देता यानी स्मार्ट रखता है। जौ में जिस्म को तवानाई देने वाले अज्ज़ा बकसरत पाए जाते हैं। जोड़ों के दर्द में फ़ायदेमन्द है, प्यास बुझाता है।

## जौ के दीगर फ़वाइद

जौ बहुत से ज़रूरी ग़िज़ाई अज्ज़ा का एक अच्छा ज़रीआ़ है, जौ उसे इन्तिहाई ग़िज़ाइयत से भरपूर ग़िज़ा बनाता है।

- येह फ़ाइबर से भरपूर होता है, जो हाज़िमे में मदद करता है और क़ब्ज़ के लिए मुफ़ीद है।
- जौ का खाना आप के रोज़ाना ग़िज़ाई रेशे की मिक़्दार में अहम किरदार अदा कर सकता है।
- जौ में पाए जाने वाले विटामिन्ज़ और मादिनियात मुख़्तलिफ़ जिस्मानी अफ़्आ़ल के लिए ज़रूरी हैं।
- जौ एक ग़िज़ाइयत से भरपूर अनाज है येह पठ्ठों को मज़बूत रखने और बढ़ाने में मदद देता है और मज्मूई़ सेह़त के लिए भी फ़ायदेमन्द है।
- दिल की सेह़त को फ़रोग़ देता है।
- जौ का इस्तिमाल कोलेस्ट्रोल की सत़ह को कम करने में मदद करता है इस त़रह दिल की बीमारी का ख़त़रा कम होता है।
- जौ वज़्न कम करने में मददगार साबित होता है।
- जौ का इस्तिमाल ख़ून में शकर की सत़ह को कन्ट्रोल करने में भी मुआ़विन है।
- जौ हड्डियों की पायदारी और लचक को बढ़ाता है।

प्यारे इस्लामी भाइयो ! हमें भी चाहिए कि हम हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अदाओं को अदा करने की निय्यत से खाने में जौ की रोटी को भी शामिल किया करें।

कभी जौ की मोटी रोटी तो कभी खजूर पानी
तेरा ऐसा सादा खाना मदनी मदीने वाले[14]

---

(1) دیکھیے: ترمذی، 4/160، حدیث: 2367- دیکھیے: بخاری، 3/531، حدیث: 5410- ابن ماجہ، 4/42، حدیث: 3336 (2) طبقاتِ ابنِ سعد، 1/313 (3) ترمذی، 4/159، حدیث: 2364 (4) دیکھیے: سیرتِ مصطفیٰ، ص585، 586 (5) فیضانِ سنت، 1/646 (6) دیکھیے: ابوداؤد، 3/507، حدیث: 3830- مشکاۃ المصابیح، 2/98، حدیث: 4223 (7) مراٰۃ المناجیح، 6/40 (8) دیکھیے: بخاری، 3/51، 52، حدیث: 4101، 4102 (9) بخاری، 2/17، حدیث: 2092- 3/537، حدیث: 5436 (10) مسند امام احمد، 20/440، حدیث: 13223 (11) حسن التنبہ لما ورد فی التشبہ، 3/37 (12) فیضانِ سنت، 1/369، 370 (13) حدائقِ بخشش، ص304 (14) وسائلِ بخشش (مرمم)، ص426۔

# नए लिखारी (New Writers)

## फ़साद फ़िल अर्द की क़ुरआनी मज़म्मत

मुहम्मद हम्ज़ा अ़त्तारी
(दर्जए साबिआ़ मर्कज़ी जामिअ़तुल मदीना)

अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام वोह रौशन सितारे हैं जिन की तालीमात का महवर ज़मीन पर अम्नो सलामती का क़ियाम रहा है। अल्लाह पाक ने इन्सान को ज़मीन में फ़साद फैलाने से बचने और अ़दलो इन्साफ़ के क़ियाम का हुक्म दिया है। तारीख़ गवाह है कि जब भी इन्सान ने वहिए इलाही से रू गर्दानी की, तो ज़मीन ज़ुल्म, नाइन्साफ़ी और फ़साद की आमाजगाह बन गई। क़ुरआने हकीम ने जा बजा फ़साद फ़िल अर्द की न सिर्फ़ मज़म्मत की है बल्कि उसे इन्सानिय्यत के लिए तबाहकुन क़रार दे कर उस से बचने की ताकीद फ़रमाई है।

आइए ! अपने दिलों को वहिए इलाही के इस पैग़ाम से मुनव्वर करें जो हमें तोड़ने के बजाए जोड़ने और बिगाड़ के बजाए इस्लाह़ की दावत देता है :

**1 क़त्ले इन्सानियत की हौलनाकी** मुआशरे में बद अम्नी और फ़साद की सब से बड़ी सूरत किसी का नाहक़ ख़ून बहाना है। अल्लाह पाक के नज़्दीक एक इन्सान का नाहक़ क़त्ल पूरी इन्सानियत को क़त्ल करने के बराबर है चुनान्चे अल्लाह पाक इरशाद फ़रमाता है : ﴿مَنْ قَتَلَ نَفْسًۢا بِغَیْرِ نَفْسٍ اَوْ فَسَادٍ فِی الْاَرْضِ فَكَاَنَّمَا قَتَلَ النَّاسَ جَمِیْعًا﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान: जिस ने कोई जान क़त्ल की बग़ैर जान के बदले या ज़मीन में फ़साद के तो गोया उस ने सब लोगों को क़त्ल किया। (پ6، المآئدۃ:32)

**2 झूटी इस्लाह़ का दावा** कुछ लोग ज़मीन पर बिगाड़ पैदा करते हैं लेकिन उसे "तरक़्क़ी" या "भलाई" का नाम देते हैं। क़ुरआने करीम ने ऐसे लोगों के मक्र को साफ़ ज़ाहिर कर दिया है कि दरहक़ीक़त वोह मुस्लेह़ नहीं बल्कि फ़सादी हैं : ﴿وَاِذَا قِیْلَ لَهُمْ لَا تُفْسِدُوْا فِی الْاَرْضِ ۙ قَالُوْۤا اِنَّمَا نَحْنُ مُصْلِحُوْنَ(۱۱) اَلَاۤ اِنَّهُمْ هُمُ الْمُفْسِدُوْنَ وَ لٰكِنْ لَّا یَشْعُرُوْنَ(۱۲)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जो उन से कहा जाए ज़मीन में फ़साद न करो तो कहते हैं हम तो संवारने वाले हैं सुनता है वोही फ़सादी हैं मगर उन्हें शुऊ़र नहीं। (پ1، البقرۃ:11،12)

इस आयत की तफ़्सीर में है : मुनाफ़िक़ों के त़र्ज़े अ़मल से येह भी वाज़ेह़ हुवा कि आ़म फ़सादियों से बड़े फ़सादी वोह हैं जो फ़साद फैलाएं और उसे इस्लाह़ का नाम दें। हमारे मुआ़शरे में ऐसे लोगों की कमी नहीं जो इस्लाह़ के नाम पर फ़साद फैलाते हैं और बदतरीन कामों को अच्छे नामों से ताबीर करते हैं। आज़ादी के नाम पर बेह़याई, फ़न के नाम पर ह़राम अफ़आ़ल, इन्सानियत के नाम पर इस्लाम को मिटाना और तहज़ीब व तमद्दुन का नाम ले कर इस्लाम पर एतिराज़ करना, तौ़हीद का नाम ले कर शाने रिसालत का इन्कार

करना, क़ुरआन का नाम ले कर ह़दीस का इन्कार करना वग़ैरहा सब फ़साद की सूरतें हैं। (सिरातुल जिनान, 1/77)

**3 अल्लाह की नापसन्दीदगी का इज़्हार** फ़साद फैलाने वाले ख़ुदा की ख़ुशनूदी से मह़रूम रहते हैं :

﴿وَاللّٰهُ لَا یُحِبُّ الْمُفْسِدِیْنَ(۶۴)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और अल्लाह फ़सादियों को नहीं चाहता। (پ6، المآئدۃ:64)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! फ़साद सिर्फ़ क़त्लो ग़ारत का नाम नहीं, बल्कि झूट, नाइन्साफ़ी, रिश्वत, अख़्लाक़ी पस्ती और हुक़ूक़ुल इ़बाद की पामाली की हर सूरत "फ़साद फ़िल अर्द" है। जब एक मुआ़शरा इन बुराइयों को ख़ामोशी से क़बूल कर लेता है, तो अल्लाह पाक की रह़मत रुख़्सत हो जाती है।

इस्लाह़े मुआ़शरा का वाह़िद रास्ता येह है कि हम में से हर शख़्स अपने दायरएकार में मुसलेह़ (इस्लाह़ करने वाला) बन जाए। अगर हम चाहते हैं कि हमारी आने वाली नस्लें एक पुर अम्न दुनिया में सांस लें, तो हमें अपनी ज़बान, क़लम और अ़मल से हर क़िस्म के फ़ित्ने व फ़साद की ह़ौसला शिक्नी करनी होगी।

अल्लाह पाक हमें फ़साद फ़िल अर्द से मह़फ़ूज़ फ़रमाए और हमें ह़क़ीक़ी सच्चा मुस्लेह़े उम्मत बनने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

## तर्के सुन्नत की मज़म्मत अह़ादीस की रौशनी में

इसरार अह़मद
(दर्जए राबिआ़ जामिअ़तुल मदीना)

इस्लाम एक मुकम्मल ज़ाबित़ए ह़यात है जिस में हर मुआ़मले के लिए रहनुमाई मौजूद है। हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नते मुबारका उस दीन का अ़मली नमूना है। सुन्नत पर अ़मल करना अल्लाह तआ़ला की रिज़ा और नजात का ज़रीआ़ है, जब कि तर्के सुन्नत (यानी सुन्नत को छोड़ देना) नुक़्सान और मह़रूमी का सबब बनता है। आज के दौर में जहां सुन्नतों से ग़फ़्लत आ़म हो चुकी है, वहां उस की अहमियत को उजागर करना बेह़द ज़रूरी है।

क़ुरआने करीम में अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है :

﴿وَمَاۤ اٰتٰىكُمُ الرَّسُوْلُ فَخُذُوْهُ ۗ وَمَا نَهٰىكُمْ عَنْهُ فَانْتَهُوْا ۚ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जो कुछ तुम्हें रसूल अ़ता फ़रमाएं वोह लो और जिस से मना फ़रमाएं बाज़ रहो। (پ28، الحشر:7)

येह आयते मुबारका हमें वाज़ेह़ तौर पर हुक्म देती है कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इताअ़त और सुन्नत की पैरवी लाज़िम है।

आयते तर्के सुन्नत के मुतअ़ल्लिक़ चन्द अह़ादीसे मुबारका पढ़िए :

**1 सुन्नत से एराज़ करने वालों के लिए वईद** तर्के सुन्नत करने वालों के लिए ह़दीस में सख़्त तम्बीह बयान की गई है चुनान्चे ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस ने मेरी सुन्नत से एराज़ किया वोह मुझ से नहीं। (بخاری، 3/421، حدیث:5063)

**2 लानत का मुस्तह़िक़** ह़दीसे पाक में 6 लोगों पर लानत की गई है, उन अफ़राद में छटा वोह है जिस के बारे में फ़रमाया : وَالتَّارِكُ لِسُنَّتِی यानी मेरी सुन्नत को छोड़ने वाला। (الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، 7/501، حدیث:5719)

**3 गुमराही का बाइ़स** ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : अगर तुम अपने नबी की सुन्नत को छोड़ोगे तो ज़रूर गुमराह हो जाओगे। (مسلم، ص257، حدیث:1488)

**तर्के सुन्नत के अस्बाब :**

- दुनिया की महब्बत और दीन से ग़फ़्लत
- दीनी इ़ल्म की कमी
- नेक सोह़बत से दूरी

प्यारे इस्लामी भाइयो ! सुन्नतों से महब्बत पैदा कीजिए, अपने ज़ाहिरो बाति़न को सुन्नतों के सांचे में ढालिए। दावते इस्लामी का दीनी माह़ौल हमें येही सिखाता है कि खाने पीने, सोने जागने, चलने फिरने ह़त्ताकि ज़िन्दगी के हर पहलू में सुन्नतों को अपनाया जाए।

सुन्नते रसूल صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم दुनिया व आख़िरत की कामयाबी का ज़रीआ़ है, जब कि तर्के सुन्नत महरूमी का सबब है।

अल्लाह तआ़ला हमें सुन्नतों पर अ़मल करने और उन्हें आ़म करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

## मुतालअ़ए अ़क़ाइद की ज़रूरत व अहमियत

रियाज़ अ़हमद अ़त्तारी
(जामिअ़तुल मदीना)

इस्लाम एक मुकम्मल दीन है जो इन्सान की ज़िन्दगी के हर पहलू में रहनुमाई फ़राहम करता है। दीने इस्लाम में अ़क़ाइद को बुन्यादी हैसियत हासिल है क्यूंकि आमाल की दुरुस्ती का दारोमदार सहीह़ अ़क़ीदे पर होता है। अगर इन्सान के अ़क़ाइद दुरुस्त हों तो उस के आमाल भी मोतबर होते हैं। हर मुसलमान के लिए ज़रूरी है कि वोह अपने दीन के बुन्यादी अ़क़ाइद को समझे और उन पर यक़ीन रखे। इसी लिए मुतालअ़ए अ़क़ाइद की ज़रूरत और अहमियत बहुत ज़ियादा है।

अ़क़ीदा उन दीनी उमूर का नाम है जिन पर दिल बग़ैर किसी शको शुबा और तरद्दुद के पुख़्ता हो जाए। (حدیقہ ندیہ، 1/96) इस्लाम के बुन्यादी अ़क़ाइद में अल्लाह तआ़ला की वह़दानिय्यत, फ़रिश्तों पर ईमान, आस्मानी किताबों पर ईमान, अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام पर ईमान, क़ियामत के दिन पर ईमान और तक़्दीर पर ईमान शामिल हैं। येह तमाम अ़क़ाइद मुसलमान के ईमान की बुन्याद हैं। अगर इन्सान उन अ़क़ाइद से नावाक़िफ़ हो तो वोह दीन को सहीह़ त़ौर पर नहीं समझ सकता।

आइए मुतालअ़ए अ़क़ाइद की अहमियत व ज़रूरत के मुतअ़ल्लिक़ चन्द अहम निकात पढ़िए और अ़मल कीजिए:

### 1 अ़क़ाइद से मुतअ़ल्लिक़ आगाही गुनाहों से बचाती है

मुतालअ़ए अ़क़ाइद की एक बड़ी अहमियत येह है कि उस से इन्सान का ईमान मज़बूत होता है। जब कोई शख़्स अल्लाह तआ़ला की क़ुदरत, उस की सिफ़ात और दीन की ह़क़ीक़त को जानता है तो उस के दिल में यक़ीन पैदा होता है। येह यक़ीन इन्सान को नेक आमाल की त़रफ़ ले जाता है और गुनाहों से बचने में मदद देता है।

### 2 अ़क़ाइद का मुतालअ़ा और ह़क़्क़ो बात़िल में फ़र्क़

मुतालअ़ए अ़क़ाइद से इन्सान को ग़लत़ नज़रियात की निशानदही करने में मदद देता है जिस से उसे ह़क़्क़ो बात़िल की तमीज़ हासिल होती है। हर दौर में कुछ लोग दीन के बारे में ग़लत़ ख़यालात फैलाते रहे हैं। अगर मुसलमान अपने अ़क़ाइद से वाक़िफ़ न हो तो वोह आसानी से धोके में आ सकता है। लेकिन जब उसे सहीह़ इ़ल्म ह़ासिल हो तो वोह ह़क़ और बात़िल में फ़र्क़ कर सकता है।

### 3 मुतालअ़ए अ़क़ाइद अ़मली ज़िन्दगी पर असर अन्दाज़

मुतालअ़ए अ़क़ाइद इन्सान के किरदार पर भी अच्छा असर डालता है। जो शख़्स आख़िरत पर यक़ीन रखता हो वोह बुरे कामों से बचने की कोशिश करता है। इस त़रह़ अ़क़ाइद इन्सान की अ़मली ज़िन्दगी को बेहतर बनाते हैं।

### 4 क़ल्बी सुकून और इत्मीनान

जब कोई शख़्स अ़क़ाइद का मुतालआ़ कर के इस्लामी अ़क़ाइद में पुख़्तगी ह़ासिल कर ले तो वोह बे यक़ीनी की परेशान कुन सूरतेह़ाल से छुटकारा पा लेता है और अपनी ज़िन्दगी के पुरसुकून मर्ह़ले में क़दम रख पाता है।

मुतालअ़ए अ़क़ाइद हर मुसलमान के लिए निहायत ज़रूरी है। इस से ईमान मज़बूत होता है, दीन की सहीह़ समझ पैदा होती है, गुमराही से ह़िफ़ाज़त मिलती है और किरदार संवरता है। हमें चाहिए कि हम अपने अ़क़ाइद का इ़ल्म ह़ासिल करें और अपनी ज़िन्दगी को इस्लामी तालीमात के मुताबिक़ गुज़ारने की कोशिश करें।

अल्लाह पाक हमें दुरुस्त अ़क़ाइद के मुतअ़ल्लिक़ आगाही ह़ासिल करने और उस पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

बच्चों के लिए प्यारी हदीस

# अमानतदारी अपनाइए

हमारे प्यारे नबी हज़रत मुहम्मद صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : لَا اِيْمَانَ لِمَنْ لَا اَمَانَةَ لَهٗ यानी जिस में अमानतदारी नहीं उस का ईमान (मज़बूत) नहीं। (مسند احمد، 19/376، حدیث:12383)

प्यारे बच्चो ! हमारा प्यारा दीन हमें बहुत प्यारी बातें सिखाता है, जिन में से एक अहम तरीन ख़ूबी **"अमानतदारी"** है। आइए ! इस ख़ूबी के बारे में जानते हैं :

अमानत का मतलब है : वोह चीज़ या पैसे वग़ैरा जो किसी के पास हिफ़ाज़त के लिए रखे जाएं। जो अमानतदारी अपनाता है उसे अमीन कहते हैं जब कि ख़ियानत करने वाले को ख़ाइन कहते हैं।

अमानतदारी दीने इस्लाम की बुन्यादी तालीमात में से है, एक सच्चे मुसलमान की सब से बड़ी ख़ूबी येह है कि वोह अमानतदार हो। अमानतदार बच्चा अल्लाह पाक और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को बहुत पसन्द है। अमानतदारी से लोगों में इज़्ज़त, महब्बत और एतिमाद बढ़ता है।

आप के छोटे भाई ने अपना ग़ुल्लक (Saving Box) आप के पास रखवाया, अगर आप ने उस में से एक पैसा भी नहीं लिया और वापस कर दिया तो आप ने अमानतदारी इख़्तियार की और अगर उस में से कुछ पैसे छुपा लिए तो येह ख़ियानत है जो कि मना है।

याद रखें कि अमानत का मफ़्हूम बहुत वसीअ़ है इस के इलावा चीज़ों में भी अमानतदारी का मफ़्हूम पाया जाता है : मसलन अगर आप के किसी दोस्त ने आप को कोई छुपी हुई बात बताई और आप ने वोह दूसरे बच्चों को बता दी, तो आप ने उस की अमानत (राज़) में ख़ियानत की। टीचर की तरफ़ से मिला हुवा होमवर्क भी अमानत है उसे भी मुकम्मल ज़िम्मेदारी के साथ पूरा करें, इसी तरह घर की बातें भी अमानत (राज़) होती हैं वोह भी बाहर नहीं बतानी चाहिए।

अच्छे बच्चो ! हमेशा लोगों की चीज़ों और हुक़ूक़ के मुहाफ़िज़ व अमीन बनें और कभी भी अमानत में ख़ियानत न करें और किसी का एतिमाद न तोड़ें और एक अच्छा इन्सान बनें।

प्यारे बच्चो ! अमानतदारी वोह ख़ूबी है जिस की वजह से ग़ैर मुस्लिम भी हमारे नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दुश्मन होने के बावुजूद अपना क़ीमती सामान आप के पास रखते थे इसी वजह से आप **"अमीन"** के लक़ब से मश्हूर थे, आप عَلَيْهِ السَّلَام ने हिजरत के मौक़अ़ पर दुश्मनों की अमानतें भी हज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه के सिपुर्द कीं ताकि वोह उन के मालिकों तक पहुंचाई जाएं। हमें भी चाहिए कि अपनी ज़िन्दगी का हर मुआमला छोटा हो या बड़ा, इस में अमानतदारी अपनाएं और शुरूअ़ में लिखी हदीसे पाक पर अ़मल करें।

अल्लाह पाक हमें एक सच्चा और पक्का अमानतदार मुसलमान बनने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

# लेकिन वोह तो दोज़ख़ी है

हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अल्लाह पाक की अ़ता से आइन्दा के हालात व वाक़िआ़त देख लिया करते थे हत्ता कि आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم लोगों के छुपे हुए निफ़ाक़ को भी जान लिया करते थे। जैसा कि एक ग़ज़्वे के बाद रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी फ़ौज का मुआइना फ़रमाया और ग़ैर मुस्लिमों ने अपने लश्कर का। इस्लामी लश्कर में एक शख़्स ऐसा भी था जो अलग थलग और भागते हुए मुख़ालिफ़ीन को ज़िन्दा न छोड़ता था बल्कि उन का पीछा कर के उन्हें मार देता था। सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُم बोले कि आज हम में से किसी ने भी इस शख़्स जैसा कारनामा अन्जाम नहीं दिया। रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : लेकिन वोह तो दोज़ख़ी है। एक मुसलमान ने कहा : मैं उस के साथ रहूंगा (यानी उस की खोज लगाउंगा) उस शख़्स का बयान है कि मैं उस का तआ़क़ुब करता रहा, वोह जहां ठहरता मैं भी ठहर जाता और वोह तेज़ चलता तो मैं भी तेज़ चलता, उस ने बताया कि उस शख़्स को गहरा ज़ख़्म लगा तो उस ने फ़ौरी मौत हासिल करने के लिए तल्वार का क़ब्ज़ा ज़मीन पर और उस की नोक अपने सीने पर रख कर अपना सारा बोझ तल्वार पर डाल के ख़ुदकुशी कर ली। (येह सारा मुआमला देखने वाला) वोह आदमी बारगाहे रिसालत में हाज़िर हुवा और कहने लगा कि मैं गवाही देता हूं कि वाक़ेई आप अल्लाह पाक के सच्चे रसूल हैं। आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने पूछा: क्या बात है ? वोह अ़र्ज़ गुज़ार हुवा कि आप ने अभी जिस शख़्स के बारे में फ़रमाया था कि वोह दोज़ख़ी है तो लोगों को येह बात बहुत नामानूस लगी थी। मैं ने उन से कहा था कि मैं तुम्हें उस की ह़क़ीक़त के बारे में बताऊंगा तो मैं उस की खोज में निकला तो देखा कि वोह शदीद ज़ख़्मी हो गया, फिर उस ने मरने में जल्दी की यानी अपनी तल्वार का क़ब्ज़ा ज़मीन पर रखा और नोक अपने सीने पर लगा कर उस पर अपना बोझ डाल के ख़ुदकुशी कर ली।

(دیکھئے: بخاری، 2/281، حدیث: 2898)

उस शख़्स का नाम क़ुज़मान था और येह मुनाफ़िक़ था, येह वाक़िआ़ ग़ज़्वए ख़ैबर या उ़हुद का है जिस में पहले पहल तो येह शख़्स शरीक न हुवा लेकिन जब औ़रतों ने उसे बुज़्दिली पर ज़लील करते हुए कहा कि तुम तो मर्द हो कर भी औ़रत हो तो येह दीन की बुलन्दी की ख़ातिर नहीं बल्कि सिर्फ़ अपनी इ़ज़्ज़त बचाने के लिए जंग में शरीक हुवा जैसा कि ह़ज़रते क़तादा बिन नोमान رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه के

सामने ख़ुद उस ने अपनी ज़बान से इस बात का इज़्हार किया था कि मैं ने दीन के लिए नहीं बल्कि अपनी इ़ज़्ज़त बचाने के लिए जिहाद किया है। (دیکھیے: عمدۃ القاری، 10/218، تحت الحدیث: 2898)

ज़रा सोचिए ! कि जिस शख़्स की कोशिशों को सहाबए किराम अ़ज़ीम दीनी कारनामा समझ रहे थे हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का उस की मुनाफ़क़त पर बा ख़बर हो जाना यक़ीनन एक अ़ज़ीम मोजिज़ा है। इस मोजिज़े से चन्द बातें सीखने को मिलती हैं :

- किसी के क़ाबिले क़द्र कारनामे को सराहना और हौसला अफ़ज़ाई करना अच्छी बात है बल्कि सुन्नते सहाबा है।
- किसी शख़्स के बारे में या किसी मुआ़मले में अगर लोग ग़लत फ़हमी का शिकार हों तो उन की ग़लत फ़हमी दूर कर देनी चाहिए मगर शरीअ़त के दायरे में रहते हुए।
- दूसरों को धोका देना और धोके में रखना मुनाफ़िक़ों की ख़स्लत है।
- बुज़ुर्गों की बातों की तस्दीक़ व ताईद तलाश करने में ह़रज नहीं।
- ज़िन्दगी की तक्लीफ़ों और आज़्माइशों से नजात के लिए ख़ुदकुशी करना बुज़दिली है और आख़िरत की मुसीबत व अ़ज़ाब का बाइ़स भी।
- हमें अल्लाह के ख़ुफ़िया फ़ैसले से डरना और दुनिया व आख़िरत में आ़फ़ियत का सुवाल करना चाहिए।
- बाज़ औक़ात अल्लाह पाक दीन का काम फ़ासिक़ो फ़ाजिर शख़्स से भी ले लेता है।

**नोट :** याद रहे कि अपने आप को तक्लीफ़ देना या जान से मार देना ह़राम और जहन्नम में ले जाना वाला काम है।

# हुरूफ़ मिलाइये !

प्यारे बच्चो ! मोबाइल फ़ोन आज कल लोगों की ज़रूरत बन चुका है। येह एक दूसरे से राबिता करने, पढ़ाई करने और नई नई मालूमात ह़ासिल करने का ज़रीआ़ है, लेकिन अगर मोबाइल का ज़ियादा इस्तिमाल किया जाए तो येह हमारे लिए नुक़्सान देह भी बन सकता है। ग़ैर ज़रूरी कामों के लिए मोबाइल इस्तिमाल करने की वजह से पढ़ाई मुतअस्सिर होती है, वक़्त ज़ाएअ़ होता है, आंखें कमज़ोर हो सकती हैं, सर दर्द हो सकता है और नींद भी ख़राब हो जाती है। बाज़ बच्चे मोबाइल न मिलने पर ग़ुस्सा भी करने लगते हैं, जो अच्छी बात नहीं।

प्यारे बच्चो ! अपने वक़्त का कुछ हिस्सा पढ़ाई, खेल कूद, क़ुरआने पाक की तिलावत और वालिदैन की ख़िदमत में गुज़ारें और ह़त्तल इम्कान मोबाइल से दूर रहें। अच्छे बच्चे वोह होते हैं जो अपने मां बाप की बात मानते हैं और बुरी आ़दतों से बचते हैं।

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ق | ف | ک | ہ | د | ن | ی | ن | ث |
| ر | م | س | ز | ط | ر | ک | آ | س |
| آ | ش | ی | ق | ن | ھ | ا | ک | ی |
| ن | ر | س | ح | ت | م | د | خ | پ |
| خ | ت | ع | ہ | ک | م | ک | ی | ت |
| آ | خ | ا | م | ق | و | ن | ر | ق |
| ت | ی | چ | ق | ل | ح | غ | ح | ب |
| ر | ن | ھ | ل | ز | و | ت | ص | ج |
| ا | ۃ | ی | ظ | ث | ژ | ف | ہ | غ |

अल्लाह तआ़ला हमें अच्छी आ़दतें अपनाने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। आमीन।

आप ने ऊपर से नीचे, दाएं से बाएं हुरूफ़ मिला कर पांच अल्फ़ाज़ तलाश करने हैं जैसे टेबल में लफ़्ज़ "मक्का" तलाश कर के बताया गया है। तलाश किए जाने वाले 5 अल्फ़ाज़ येह हैं : (1): نیند (2) اچھی (3) حصہ (4) خدمت (5) قرآن۔

क्लास रूम

# काली बिल्ली

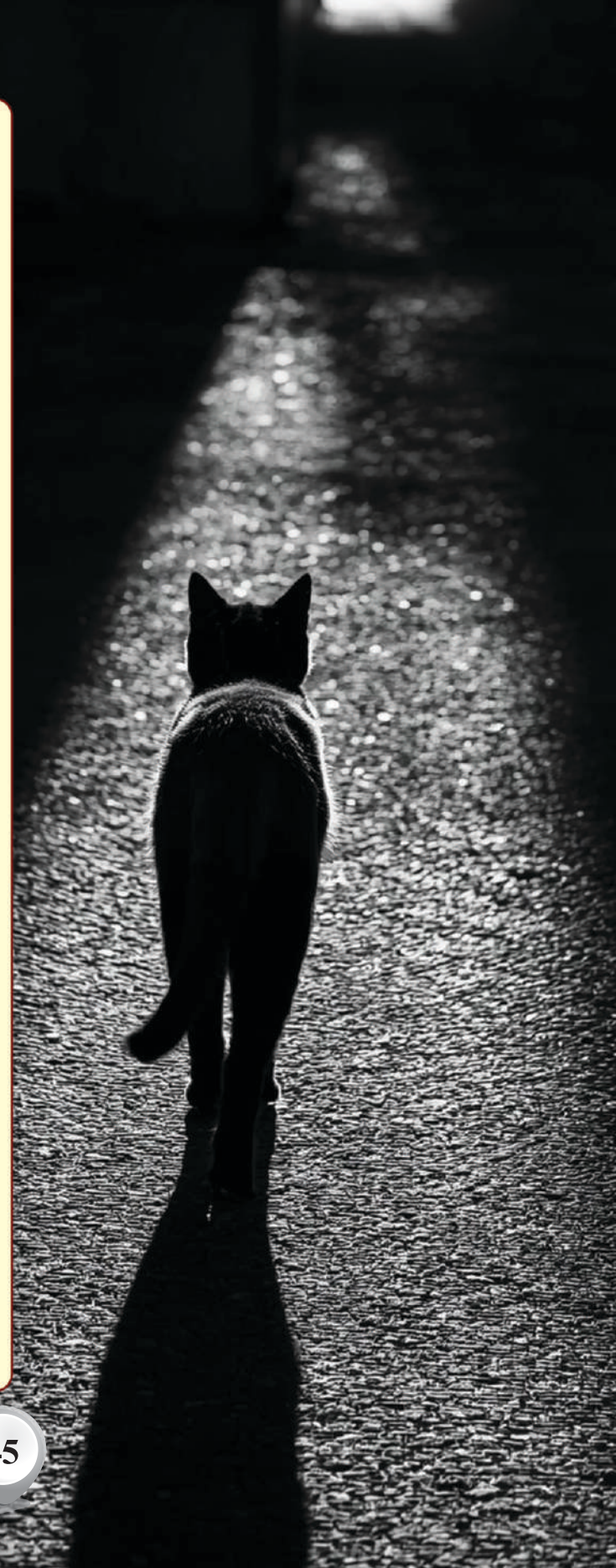

**सर बिलाल** बारी बारी बच्चों से गुज़श्ता सबक़ सुन रहे थे कि अचानक उन की नज़र आख़िरी क़तार में बैठे दो बच्चों पर पड़ी जो बातों में मसरूफ़ थे। बज़ाहिर वोह सर झुकाए सामने खुली किताबों की त़रफ़ मुतवज्जेह नज़र आ रहे थे, मगर सर बिलाल फ़ौरन भांप गए कि वोह किताब पढ़ने के बजाए एक दूसरे से सरगोशियां कर रहे हैं।

सर ने पूछा : अरे भई ! आप दोनों की कौन सी ख़ुफ़िया मीटिंग चल रही है जो सबक़ से भी ज़ियादा अहम है ?

दोनों बच्चे जल्दी से खड़े हो गए और उन में से एक बच्चा दूसरे की त़रफ़ इशारा कर के कहने लगा : सर अस्ल में **ह़म्ज़ा** मुझे बता रहा था कि उस की बाईं आंख सुब्ह़ से फड़क रही है, लगता है कोई मुसीबत आने वाली है।

येह सुनते ही चन्द बच्चों की हंसी छूट गई थी लेकिन सर की तम्बीही नज़र देखते ही सब संजीदा हो गए। बच्चो आप में से और किस किस को येह बात पता है ?

**अ़ली :** जी सर ! मेरी दादी भी येही कहती हैं।

सर येह तो नहीं पता था, अलबत्ता हमारी दादी ख़ाली क़ैंची चलाने से सख़्ती से मना करती हैं कि उस से घर में लड़ाइयां होती हैं, **नोमान** ने कहा।

**नोमान** की बात सुन कर पूरा क्लास रूम मुख़्तलिफ़ बातों से गूंज उठा : शीशा टूट जाए तो मुसीबत आती है, काली बिल्ली के रास्ते काटने से भी परेशानी आती है। वग़ैरा वग़ैरा

**सर बिलाल** ने मुस्कुराते हुए हाथ उठाया : अच्छा तो बच्चो आज का सबक़ ख़ुद बख़ुद शुरूअ़ हो गया है। फिर वोह कुर्सी पर बैठने के बजाए बच्चों के दरमियान आ गए और कहने लगे :

बच्चो ! सब से पहले एक बात याद रखें कि इस्लाम हमें सिखाता है कि अल्लाह पर यक़ीन और भरोसा रखने के साथ साथ अपनी अ़क़्ल का भी इस्तिमाल करें, ख़ाली डर और वहम में न जीते रहें। फिर **सर बिलाल** ने बोर्ड पर बड़े लफ़्ज़ों में लिखा :

**बद शुगूनी = बे बुन्याद ख़ौफ़**

फिर बोले : इस्लाम से पहले जब हर त़रफ़ जहालत का डेरा था तब लोग परिन्दों की आवाज़, किसी जगह या किसी दिन को मन्हूस समझते थे, अगर सफ़र पर जाते हुए कोई परिन्दा उल्टी सम्त उड़ जाता तो बद शुगूनी समझते हुए फ़ौरन सफ़र मन्सूख़ कर देते । लेकिन जब इस्लाम की रौशनी फैली तो नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तालीमात की बरकत से लोगों को पता चल गया कि येह सब ज़ेहनी ख़ौफ़ है, हमारे प्यारे नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने वाज़ेह़ फ़रमा दिया कि बद शुगूनी की कोई ह़क़ीक़त नहीं है । (بخاری، 4/24، حدیث:5707)

**उसैद रज़ा** ने हाथ खड़ा किया : लेकिन सर, फिर लोग येह सब अभी तक मानते क्यूं हैं ?

**सर बिलाल** मुस्कुराते हुए बोले : उस की वजह इन्सानों की वहमी त़बीअ़त (Delusion), हमारे मुआ़शरे का इस्लामी तालीमात से दूर होना और अल्लाह पर यक़ीन कमज़ोर होना है, इसी लिए इन्सान हर इत्तिफ़ाक़ को किसी वहम से जोड़ देते हैं।

इतने में पीछे से एक आवाज़ आई : लेकिन सर अगर सुब्ह़ स्कूल आते हुए काली बिल्ली रास्ता काट जाए तो ?

सर हंस पड़े : तो बेटा बिल्ली अपने रास्ते जाएगी और आप अपने रास्ते, बिल्ली का बहाना बना कर स्कूल से छुट्टी न कर लेना, सारी क्लास दोबारा हंसने लगी।

फिर सर संजीदगी से कहने लगे : बच्चो ! मुसलमान का अ़क़ीदा तो बहुत मज़बूत होता है। हम तो येह मानने वाले हैं कि नफ़ा और नुक़्सान सिर्फ़ अल्लाह के हाथ में है तो फिर कोई आंख, कोई आवाज़, कोई दिन, कोई परिन्दा या कोई बिल्ली हमारी क़िस्मत कैसे ख़राब कर सकती है।

**मुआ़विया** ने पूछा : लेकिन सर कभी कभार हर त़रफ़ से ऐसी बातें सुन कर दिल में डर आ ही जाता है तो ऐसे में हम क्या करें।

**सर बिलाल :** बहुत अच्छा सुवाल है । अगर बद शुगूनी से मुतअ़ल्लिक़ कोई बुरा ख़याल आए तो अल्लाह पर भरोसा करते हुए अपना काम जारी रखना चाहिए और उस के साथ एक दुआ़ पढ़ लेनी चाहिए :

اَللّٰهُمَّ لَا خَيْرَ اِلَّا خَيْرُكَ، وَلَا طَيْرَ اِلَّا طَيْرُكَ، وَلَا اِلٰهَ غَيْرُكَ

(مسند احمد، 11/623، حدیث:7045)

बच्चों को दुआ़ याद करवाते करवाते **सर बिलाल** **ह़म्ज़ा** के पास पहुंच चुके थे और शफ़्क़त से उस के कन्धे पर हाथ रखा : तो **ह़म्ज़ा** बेटा आइन्दा अगर तुम्हारी आंख फड़क रही हो तो आराम करो, पानी पियो, नींद पूरी करो... लेकिन येह मत सोचो कि कोई मुसीबत आने वाली है। मुसलमान उम्मीद वाला इन्सान होता है, बिला वजह डर जाने वाला नहीं।

फिर **सर बिलाल** ने जाते जाते कहा और हां आप सब बच्चों ने आज घर जा कर अपने बड़ों से अदब से बात करनी और प्यार से उन्हें बताना है कि इस्लाम हमें यक़ीन और तवक्कुल सिखाता है न कि डर और वहम।

पूरी क्लास एक आवाज़ में बोली : जी सर !

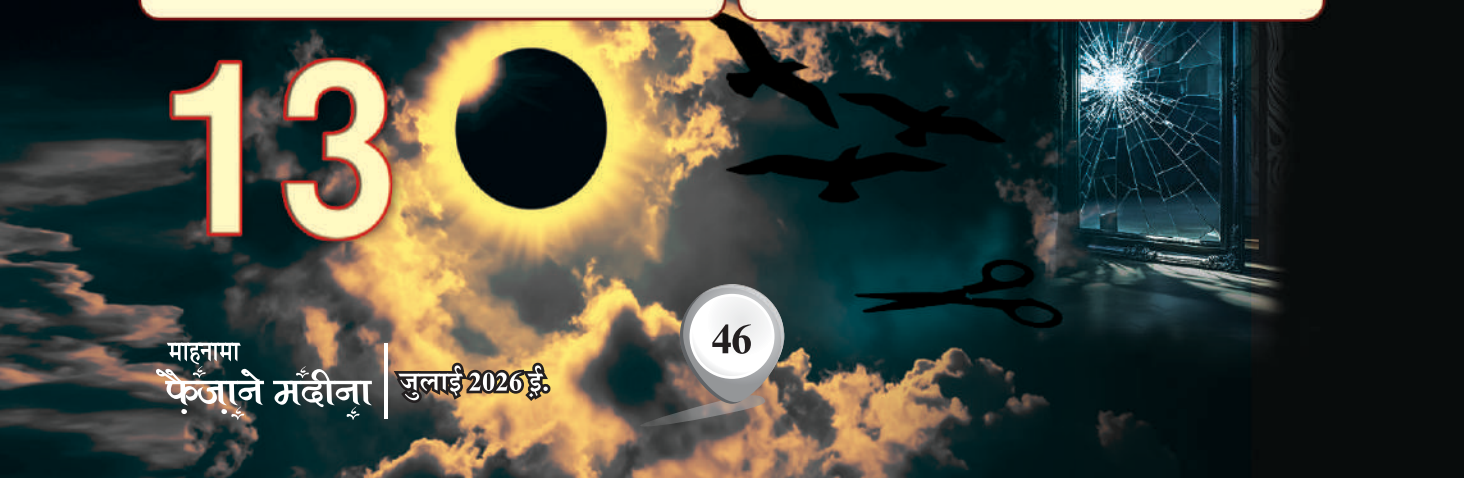

मां बाप के नाम

# बच्चों को क़नाअ़त सिखाएं

क़नाअ़त एक निहायत आला और ख़ूबसूरत सिफ़त है जो इन्सान की ज़िन्दगी को सुकून और ख़ुशियों से भर देती है, येह दरअस्ल अल्लाह तआ़ला की अ़ता कर्दा नेमतों पर राज़ी रहने और शुक्र अदा करने का नाम है। मौजूदा दौर में जहां हर त़रफ़ लालच और ज़ियादा माल ह़ासिल करने की दौड़ लगी हुई है, वहां क़नाअ़त की अहमियत और भी बढ़ जाती है। क़नाअ़त इन्सान को ह़सद, ह़िर्स और बेसुकूनी से बचाती है और उसे एक मुत़मइन और पुरसुकून ज़िन्दगी गुज़ारने में मदद देती है, इसी लिए इस्लाम में क़नाअ़त को बड़ी अहमियत दी गई है और उसे कामयाब ज़िन्दगी का एक अहम उसूल क़रार दिया गया है। ज़ैल में दिए गए निकात पर अ़मल कर के वालिदैन अपने बच्चों में क़नाअ़त का जज़्बा पैदा कर सकते हैं।

## क़नाअ़त क्या है ?

बन्दे को माल की ज़रूरत हो और वोह माल को पसन्द भी करता हो, लेकिन वोह उस के पीछे भाग दौड़ न करे। अगर माल आसानी और जाइज़ ज़राए से मिल जाए तो ख़ुशी से ले ले लेकिन अगर उस के लिए ज़ियादा मेहनत या भाग दौड़ करनी पड़े जिस से उमूरे आख़िरत का नुक़्सान हो या इ़बादत मुतअस्सिर हो तो वोह छोड़ दे तो येह क़नाअ़त है।[1]

वालिदैन को ज़ेहन नशीन रखना चाहिए कि बच्चों को क़नाअ़त सिखाना सिर्फ़ एक नसीह़त नहीं बल्कि उन की पूरी ज़िन्दगी की बुन्याद है। अगर बचपन में ही दिल में "**कम पर राज़ी रहने**" की आ़दत डाल दी जाए तो येही बच्चे बड़े हो कर मुत़मइन, शुक्र गुज़ार और कामयाब इन्सान बनते हैं।

## क़नाअ़त सिखाने के त़रीक़े

**1 क़नाअ़त के फ़ज़ाइल बताएं :** वालिदैन को चाहिए कि बच्चों को क़नाअ़त की अहमियत और फ़ज़ाइल बताएं। बच्चों को बताएं कि इस्लाम हमें क़नाअ़त की तालीम देता है, नबिय्ये मोह़तरम, रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : वोह बन्दा कामयाब हो गया जो मुसलमान हुवा और ज़रूरत के मुताबिक़ रिज़्क़ दिया गया और अल्लाह तआ़ला ने उसे दिए हुए पर क़नाअ़त दी।[2]

इसी त़रह़ एक ह़दीसे पाक में क़नाअ़त की अहमियत को उजागर करते हुए इरशाद फ़रमाया : क़नाअ़त कभी ख़त्म न होने वाला ख़ज़ाना है।[3]

क़नाअ़त की अहमियत के पेशे नज़र नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने रब से दुआ में क़नाअ़त मांगी। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से रिवायत है कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم येह दुआ किया करते थे:

اَللّٰهُمَّ قَنِّعْنِیْ بِمَا رَزَقْتَنِیْ وَبَارِكْ لِیْ فِیْهِ وَاخْلُفْ عَلٰى كُلِّ غَائِبَةٍ لِیْ بِخَیْرٍ

ऐ अल्लाह ! जो कुछ तू ने मुझे दिया है उस पर मुझे क़नाअ़त नसीब फ़रमा और उस में मेरे लिए बरकत पैदा कर, और मेरी वोह तमाम चीज़ें जो मेरी आंखों से ओझल हैं उन की हिफ़ाज़त फ़रमा।[4]

हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दुआ की : اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ رِزْقَ اٰلِ مُحَمَّدٍ قُوْتًا यानी ऐ अल्लाह ! मुहम्मद (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की आल को सिर्फ़ ज़रूरत के मुताबिक़ रिज़्क़ अ़ता फ़रमा।[5]

**2 अ़मली नमूना बनिए :** बच्चे अपने वालिदैन की आ़दात, त़ौर त़रीक़े और रहन सहन से सीखते हैं। अगर वालिदैन ख़ुद क़नाअ़त पसन्द हों, ग़ैर ज़रूरी चीज़ों के पीछे न भागें और सादगी इख़्तियार करें तो बच्चे भी इसी राह पर चलेंगे।

**3 शुक्र गुज़ारी की आ़दत डालिए :** बच्चों को रोज़ मर्रा की बड़ी छोटी नेमतों पर भी "اَلْحَمْدُ لِلّٰه" कहना सिखाएं। खाना, रिहाइश, तालीम यहां तक कि मामूली सी चीज़ मिलने पर भी शुक्र अदा करने की तरबियत दें।

**4 ख़्वाहिशात को क़ाबू में रखना सिखाइए :** हर ख़्वाहिश बग़ैर सोचे समझे फ़ौरन पूरी न करें। बच्चे जब किसी चीज़ के लिए ज़िद करें, तो उन्हें समझाएं कि हर चीज़ फ़ौरन ह़ासिल करना ज़रूरी नहीं। कुछ चीज़ें वक़्त या कोशिश से मिलती हैं।

**5 बुज़ुर्गों की सादगी के वाक़िआ़त सुनाइए :** क़िस्से, कहानियां या सादा ज़िन्दगी गुज़ारने वाले अ़ज़ीम लोगों की मिसालें बताएं और वाक़िआ़त सुनाएं।

**6 दूसरों की ह़ालत दिखाएं :** ग़रीब और ज़रूरतमन्द लोगों के ह़ालात से बच्चों को आगाह करें ताकि वोह अपनी नेमतों की क़द्र करें और दिल में क़नाअ़त पैदा हो।

**बच्चों को बताएं कि**

- क़नाअ़त में इ़ज़्ज़त है। क़नाअ़त इख़्तियार करने वाला इ़ज़्ज़त पाता है और लालची इन्सान ज़लीलो रुस्वा होता है।[6]
- क़नाअ़त इन्सान को ह़िर्स और लालच जैसी अख़्लाक़ी कमज़ोरियों से बचाती है। क़नाअ़त से ज़िन्दगी में सुकून आता है, बेचैनी दूर होती है। जो शख़्स क़नाअ़त इख़्तियार करता है, वोह दूसरों के सामने हाथ फैलाने से बच जाता है और इ़ज़्ज़तो वक़ार के साथ ज़िन्दगी गुज़ारता है। क़नाअ़त करने वाला शख़्स ही अस्ल में मालदार है। ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام ने अल्लाह की बारगाह में अ़र्ज़ की : ऐ अल्लाह ! तेरे बन्दों में सब से ज़ियादा मालदार कौन है ? अल्लाह पाक ने इरशाद फ़रमाया : वोह शख़्स जो मेरी दी हुई चीज़ पर सब से ज़ियादा क़नाअ़त करने वाला है।[7] क़नाअ़त करने वाला शख़्स कभी नाशुक्रा नहीं बनता वोह दूसरों से ह़सद नहीं करता वोह ज़िन्दगी में सुकून पाता है वोह अपने रब पर भरोसा करता है वोह लोगों से उम्मीदें वाबस्ता नहीं करता।

## क़नाअ़त न होने के नुक़्सानात

क़नाअ़त न होना इन्सान को लालची और बेचैन बना देता है। वोह हमेशा दूसरों से अपनी ज़िन्दगी का मुवाज़ना करता रहता है, और जो कुछ मालो दौलत या नेमतें रखता है उसे कम समझता है। ऐसे अफ़राद में ह़सद और मुक़ाबले की आग बढ़कती है जो तअ़ल्लुक़ात को ख़राब और दिल को नापसन्दीदा जज़्बात से भर देती है। मज़ीद येह कि ग़ैर ज़रूरी ख़्वाहिशात मआ़शी बोझ, ज़ेहनी तनाव, और ख़ानदानी नाचाक़ियों का सबब भी बनती हैं।

अल्लाह पाक हमें और हमारे बच्चों को क़नाअ़त इख़्तियार करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

---

(1) دیکھئے: احیاء العلوم، 4/563 (2) مسلم، ص406، حدیث: 2426 (3) الزہد الکبیر للبیہقی، ص88، حدیث: 104 (4) المستدرک للحاکم، 2/189، حدیث: 1921 (5) مسلم، ص406، حدیث: 2427 (6) تفسیر روح البیان، 1/161 (7) ابنِ عساکر، 61/139، رقم: 7741۔

बेटियों की तरबियत

# बेटियों को सफ़ाई सुथराई की तरबियत दें

दीने इस्लाम ने जहां इन्सान को कुफ़्रो शिर्क की गन्दगी से पाक कर के इ़ज़्ज़तो बुलन्दी अ़ता की वहीं ज़ाहिरो बातिन की पाकीज़गी की आला तालीमात के ज़रीए इन्सानियत का वक़ार बुलन्द किया, बदन की पाकीज़गी हो या लिबास की सुथराई, ज़ाहिरी शक्लो सूरत की ख़ूबी हो या त़ौर त़रीक़े की अच्छाई, मकान और साज़ो सामान की सफ़ाई हो या सुवारी की देखभाल अल ग़रज़ हर चीज़ को साफ़ सुथरा रखने की दीने इस्लाम में तालीम और तरग़ीब दी गई है।

रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को हमेशा सफ़ाई सुथराई का हुक्म देते और उस की ताकीद फ़रमाते थे, ह़दीस शरीफ़ में है कि अल्लाह तआ़ला पाक है और पाकीज़गी को पसन्द फ़रमाता है। (ترمذی، 4/365، حدیث:2808) हर मुसलमान को चाहिए कि वोह अपने बदन, इस्तिमाल की चीज़ें, अपने घर और उस के अत़राफ़ वग़ैरा हर हर चीज़ की पाकी और सफ़ाई सुथराई का हर वक़्त ध्यान रखे।

इन्सान की अपनी ज़ात और उस के गिर्दो पेश की सफ़ाई सुथराई, जिस्मानी व ज़ेहनी तन्दुरुस्ती की ज़ामिन है। जब जिस्म तवाना और फ़िक्र सेह़तमन्द हो, तो इन्सान दीन और दुनिया के तमाम उमूर बेहतरीन त़रीक़े से सर अन्जाम दे सकता है। पाकीज़गी न सिर्फ़ इ़बादत में ह़लावत और ख़ुशूओ ख़ुज़ूअ़ पैदा करती है, बल्कि ज़ाहिर की सफ़ाई इन्सान के बातिन को भी जिला बख़्शती है, क्यूंकि येह दोनों एक दूसरे से जुड़े हुए हैं, फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है : जिस ने अपने बातिन की इस्लाह़ कर ली तो अल्लाह पाक उस के ज़ाहिर को दुरुसत कर देगा। (جامع صغیر، ص508، حدیث:8339)

सफ़ाई सुथराई को ज़िन्दगी का ह़िस्सा बनाने के लिए वालिदैन (बिल ख़ुसूस वालिदा) का बहुत अहम किरदार है, क्यूंकि बच्चे अपने वालिदैन से ही सीखते हैं जैसा उन को करता देखते हैं वैसा ही ख़ुद भी करने की कोशिश करते हैं। अगर मां में सफ़ाई सुथराई की आ़दत होगी, वोह हर चीज़ अपनी जगह से सलीक़े के साथ उठाती और रखती होगी, किचन को साफ़ रखती होगी, घर में चीज़ें बिखरी हुई नहीं होंगी तो बेटी देख कर ख़ुद बख़ुद सीखना शुरूअ़ कर देगी क्यूंकि मुशाहदा है कि सुनने के मुक़ाबले में देखी जाने वाली चीज़ को दिमाग़ जल्दी क़बूल कर लेता है। बेटी के मिज़ाज में सफ़ाई सुथराई पैदा करवाने के लिए मां का किरदार बहुत अहम है। उ़मर के लिह़ाज़ से ब तदरीज बच्चियों को सफ़ाई सुथराई और सलीक़ामन्दी की प्रैक्टिस करवाएं और उन्हें उस का आ़दी बनाएं कि वोह अपने जिस्म, बाल, कपड़ों, कमरे वग़ैरा को साफ़ सुथरा रखने की आ़दी बन जाएं। अपनी रूटीन इस त़रह़ भी बनाई जा सकती है कि घर के हर काम के लिए टाइम टेबल बना लें कि कौन सा काम किस दिन करना है मसलन :

- फ़र्नीचर की सफ़ाई और डस्टिंग को अपना रोज़ाना का मामूल बनाएं। अगर्चे रोज़ाना डीप क्लीनिंग (Deep Cleaning)

मुम्किन न हो, फिर भी हल्की फुल्की सफ़ाई की आ़दत ज़रूर डालें। काम को आसान बनाने के लिए एक जदवल (Schedule) बना लें, मसलन येह त़ै कर लें कि किस दिन किस कमरे की छतें साफ़ करनी हैं और दीवारों की सफ़ाई कितने अ़र्से बाद करनी है। इस त़रह़ सफ़ाई का निज़ाम भी बेहतर रहेगा और आप पर बोझ भी नहीं पड़ेगा।

❁ कपड़े किस दिन धोने हैं, उस दौरान बेटी को पास बैठा कर कपड़े धोने का त़रीक़ा भी सिखाएं कि कौन सा कपड़ा किस त़रह़ से साफ़ होगा, नापाक कपड़े कैसे पाक करने हैं (इस से मसाइ़ल जानने के लिए मक्तबतुल मदीना का शाए कर्दा रिसाला "**कपड़े पाक करने का त़रीक़ा**" का मुत़ालआ़ मुफ़ीद होगा) कपड़े कितनी देर तक धूप में ख़ुश्क करने हैं, कुछ नमी रह जाए तो साफ़ कपड़ों में से भी बू आने लगती है और ज़रूरत से ज़ियादा धूप लग जाए तो कपड़ा ख़राब होता है, अलगनी (Clothesline) पर कई कई दिन तक धुले कपड़े न पड़े रहें बल्कि ख़ुश्क हो जाने पर समेट लिए जाएं और फिर जिन्हें इस्त्री करना हो उन्हें इस्त्री कर के रखना और बाक़ी कपड़े तह कर के तरतीब से अलमारियों के अन्दर रखना, इसी त़रह़ बिखरी अल्मारियों को तरतीब देना। उस के लिए भी दिन मुख़्तस किया जाए।

❁ इसी त़रह़ फ़्रीज के अन्दर का सारा सामान निकाल कर साफ़ करना, किचन के कैबिनेट, मसालह़ों के डब्बे वग़ैरा की सफ़ाई करना, उस का दिन भी मुतअ़य्यन कर दें।

इसी त़रह़ घर के बाक़ी मज़ीद कामों की भी तक़्सीम कारी हो और हर रोज़ कुछ न कुछ काम एडजस्ट हो जाएं तो पूरे माह घर चमकता रहेगा और इस त़रह़ थोड़ा करने से बोझ भी नहीं पड़ता, ज़ियादा थकान भी नहीं होती और बहुत सारे काम भी हो जाते हैं। जब बेटी कुछ बड़ी होने लगे तो बेटी को भी उस सफ़ाई मुहिम में शामिल करें इस त़रह़ बेटी भी सीखती रहेगी।

छोटी बच्चियों को खिलौनों के ज़रीए तरबियत देना अच्छी तदबीर हो सकती है, बच्चियों को किचन वाले खिलौने दें, छोटे बरतन में पानी डाल कर उन से बरतन धुलवाएं, ख़ुश्क करवाएं तरतीब से लगवाएं, उन बरतनों में खाना बनवाएं कि खाना बनाते वक़्त किस त़रह़ सफ़ाई रखनी है, बच्चों के ज़ाती काम उन के अपने हाथ से करवाएं जैसा कि स्कूल जाते वक़्त यूनीफ़ॉर्म बदलना, शूज़ पहनना, कॉपियां किताबें बैग में चेक करना अपनी तय्यारी का मुकम्मल जाइ़ज़ा लेना, (बच्चे स्कूल में भी अपनी सफ़ाई सुथराई का ख़याल रखें डेस्क वग़ैरा साफ़ करने के लिए एक्स्ट्रा कपड़ा पास हो, शूज़ पर धूल लग गई उसे फ़ौरन साफ़ करना वग़ैरा) स्कूल से वापसी पर शूज़, बैग यूनीफ़ॉर्म अपनी जगह पर दुरुस्त अन्दाज़ से रखना, आते ही लंच बॉक्स निकाल कर धुलने के लिए रखना, हाथ मुंह अच्छी त़रह़ धो कर खाना खाना, मुनज़्ज़म अन्दाज़ में नफ़ासत के साथ खाना, खाने के बाद हाथ मुंह अच्छी त़रह़ साफ़ करना, नहाना वग़ैरा ऐसे ही पाकी नापाकी की एहतियातें सिखाना। याद रहे बच्चे खेल खेल में बेहतर अन्दाज़ में सीख पाते हैं इस के बर अ़क्स ज़बरदस्ती डांट डपट कर उन से कुछ करवाया जाए या सिखाया जाए तो बच्चा वक़्ती त़ौर पर तो वोह काम आप के ख़ौफ़ से कर लेगा लेकिन अपने मिज़ाज में वोह काम शामिल नहीं करेगा। ऐसे ही अगर माएं घर के काम करते वक़्त शोर शराबा करती हों, बरतन पटख़्ती हों कि मैं ही सब काम करूं वग़ैरा वग़ैरा तो बेटियों के दिल में भी घरेलू कामों से बेज़ारी पैदा होगी, घर का काम बोझ लगेगा। ऐसा अन्दाज़ रखें कि घर का काम बोझ न हो, बल्कि शौक़ हो। याद रहे कि "**ज़ाहिरी सफ़ाई**" इन्सान के वुजूद से पता चल जाती है लेकिन "**बात़िनी सफ़ाई**" इन्सान के कलाम से पता चलती है लिहाज़ा "**ज़ाहिरी सफ़ाई**", अल्लाह पाक के बन्दों के लिए, "**घर की सफ़ाई**", मेहमानों के लिए और "**दिल की सफ़ाई**" अल्लाह पाक के लिए की जाए।

अगर आप अपनी बेटियों को दीनी अख़्लाक़ व इक़्दार के साथ परवान चढ़ता देखना चाहती हैं तो अपनी बेटियों को दारुल मदीना इस्लामिक स्कूल / मद्रसतुल मदीना / जामिअ़तुल मदीना में दाख़िला दिलवाएं जहां उन को दीनी व दुनियावी उमूर के साथ साथ अपना जिस्म, लिबास और सामान वग़ैरा साफ़ सुथरा रखने की तरग़ीब भी दी जाती है।

# इस्लामी बहनों के शरई मसाइल

## 1 अपवर्क के लिए औरत का अपनी प्रोफ़ाइल पर तस्वीर लगाना

**सुवाल :** क्या फ़रमाते हैं उलमाए दीन व मुफ़्तियाने किराम इस मस्अले के बारे में कि मैं ने अपवर्क (Upwork) के बारे में शरई रहनुमाई लेनी है कि क्या एक औरत अपनी प्रोफ़ाइल पर नक़ाब के साथ तस्वीर लगा कर प्रोफ़ाइल बना सकती है ? नक़ाब से मुराद येह है कि चेहरे की टिक्या खुली रहेगी जब कि बक़िय्या आज़ा मसलन सर और गला वग़ैरा नक़ाब में रहेंगे ? क्यूंकि प्रोफ़ाइल बनाने के लिये तस्वीर लगानी होती है, अलबत्ता तस्वीर के बगैर भी प्रोफ़ाइल बन जाती है और ऑर्डर्ज़ वग़ैरा भी मिल जाते हैं कि अस्ल मदार तस्वीर वग़ैरा पर नहीं बल्कि प्रोफ़ाइल पर मौजूद रेटिंग्ज़ और पॉइन्ट्स के हिसाब से ही ऑर्डर्ज़ मिलते हैं ?

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

अपवर्क वेबसाइट पर किसी भी औरत के लिए अपनी प्रोफ़ाइल बनाते वक़्त बग़ैर नक़ाब के चेहरे की टिक्या खुली रखी गई तस्वीर लगाना भी मम्नूअ है कि फ़ी ज़माना ख़ौफ़े फ़ित्ना के सबब फ़ुक़हाए किराम ने चेहरे का पर्दा करना भी लाज़िम क़रार दिया है। जब तस्वीर के बग़ैर भी प्रोफ़ाइल बन सकती है बल्कि अस्ल मदार भी तस्वीर पर नहीं और उस के बग़ैर भी ऑर्डर मिल सकता है तो किसी भी क़िस्म की हाजत या ज़रूरत का तहक़ीक़ व सबूत न हुवा इस लिए अपवर्क की प्रोफ़ाइल पर आप अपनी ऐसी तस्वीर नहीं लगा सकती जिस में चेहरा खुला रहे। हां पूरा चेहरा भी नक़ाब में हो तो फिर तस्वीर लगाने में शरअन कोई हरज नहीं।

وَاللّٰهُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَرَسُوْلُهٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

## 2 बड़े नाख़ुन रखना कैसा ? नीज़ नाख़ुन कितने काटे जाएं ?

**सुवाल :** क्या फ़रमाते हैं उलमाए किराम इस मस्अले के बारे में कि चालीस दिन पूरे होने से पहले नाख़ुन काटना ज़रूरी होता है। यहां नाख़ुन काटने से क्या मुराद है कि कितने नाख़ुन काटे जाएं ? क्यूं कि बाज़ औरतों को बड़े नाख़ुन रखने का शौक़ होता है तो वोह चालीस दिन पूरे होने से पहले बाक़ाइदा नाख़ुन काटने के बजाए नाख़ुनों के मामूली से किनारे तराश लेती हैं, जिस से उन के नाख़ुन बड़े ही रहते हैं और वोह येह गुमान करती हैं कि हम ने शरीअत के हुक्म पर अमल कर लिया है तो क्या उन का येह अमल दुरुस्त है ?

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

नाख़ुन काटने के मुतअल्लिक़ शरई हुक्म येह है कि हफ़्ते में एक बार नाख़ुन काटना मुस्तहब है, अगर एक हफ़्ते के अन्दर नहीं काटे तो फिर पन्दरह दिन में एक बार काट लिए जाएं, और नाख़ुन न काटने की इन्तिहाई मुद्दत चालीस दिन है कि बिला उज़्र चालीस दिन तक नाख़ुन न काटना, मकरूहे तहरीमी और गुनाह है।

यहां नाख़ुन काटने से मुराद येह है कि "नाख़ुनों का जो हिस्सा उंगलियों के पोरों से बढ़ जाए तो उसे इस तरह काट लिया जाए कि ख़ुद को तक्लीफ़ व ज़रर न हो"। बड़े नाख़ुन रखने के शौक़ में नाख़ुनों को उंगलियों के पोरों से बड़ा रखना, और चालीस दिन पूरे होने से

पहले नाख़ुनों के किनारों को मामूली सा काट लेना, काफ़ी नहीं है क्यूंकि नाख़ुन उंगलियों के पोरों से ऊपर ही रहेंगे लिहाज़ा उस से शरई हुक्म पर अ़मल नहीं होगा और वोह चालीस दिन से ज़ियादा बड़े नाख़ुन रखने की वजह से गुनाहगार होंगी।

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

## 3 नाबालिग़ा और बालिग़ा बच्चियों के कान अजनबी मर्द से छिदवाना कैसा ?

**सुवाल :** क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए दीन व मुफ़्तियाने शरए मतीन इस मस्अले के बारे में कि आज कल मार्केट में बच्चियों के कान छेदने वाले अक्सर मर्द ह़ज़रात हैं, उन के पास ऐयरगन होती है, जिस से फ़ौरन कान में सूराख़ हो जाता है, अब उन से कान छिदवाने वाली बालिग़ा ख़वातीन भी होती हैं, नाबालिग़ा और क़रीब बुलूग़ बच्चियां भी, कान को छूना भी पड़ता है और देखना भी, कभी बग़ैर छूए भी हो जाता है, शरई रहनुमाई दरकार है कि

1 औ़रत के लिए कान छिदवाने की शरई हैसियत क्या है ?

2 नाबालिग़ा और बालिग़ा बच्चियों के कान किसी अजनबी मर्द से छिदवाना कैसा है ?

3 अगर कोई औ़रत नाक, कान वग़ैरा छेदने के लिए न मिले तो क्या मजबूरी में किसी मर्द से येह काम करवा सकते हैं ?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

1 ख़वातीन को नाक और कान ज़ेवरात पहनने के लिए छेदना शरअ़न जाइ़ज़ व मुबाह़ है, क्यूंकि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़मानए अक़्दस में भी येह राइज था और नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उसे जाइ़ज़ व मुक़र्रर रखा, उस से मना न फ़रमाया। नीज़ वाज़ेह़ रहे कि येह अम्र फ़र्ज़, वाजिब या सुन्नत नहीं हां अलबत्ता जो मुबाह़ अच्छी निय्यत से अदा किया जाए तो शरअ़न वोह मुस्तह़ब व मह़मूद के दर्जे में आता है लिहाज़ा कोई औ़रत अपने शौहर के लिए ज़ेवरात पहनने के लिए येह अ़मल करती है तो येह अम्र उस के लिए मुस्तह़ब है।

2,3 नाबालिग़ा बच्ची के कान या नाक अजनबी मर्द से छिदवाना, शरअ़न जाइ़ज़ है और मुराहिक़ा या बालिग़ा का ग़ैर मर्द से छिदवाना, नाजाइ़ज़ो ह़राम है कि शरीअ़ते मुत़ह्हरा के उ़सूलों की रौशनी में किसी मुराहिक़ा मुश्तहात (क़ाबिले शहवत) या बालिग़ा औ़रत के आज़ाए सत्र को देखना और छूना, ह़राम व गुनाह है, और औ़रत के कान भी उस के सत्र वाले आज़ा में शामिल हैं, नीज़ अजनबी औ़रत को छूने से मुतअ़ल्लिक़ नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सख़्ती से मना फ़रमाया, नीज़ इस सूरत में दोनों फ़रीक़ैन गुनाहगार होंगे और उन पर उस गुनाह से तौबा करना भी लाज़िम होगी। नीज़ अगर कोई औ़रत येह अ़मल करने वाली मुयस्सर न हो तो अगर कोई मह़रम कान वग़ैरा छेद सकता हो तो उस से करवाएं, वरना वक़्ती तौर पर सब्र करें कि अजनबी मर्द से करवाना, बहरेसूरत नाजाइ़ज़ है कि येह फ़क़त एक मुबाह़ अ़मल है और ज़ियादा से ज़ियादा अगर मुस्तह़ब के दर्जे में भी हो तो एक मुबाह़ व मुस्तह़ब काम के लिए कोई नाजाइ़ज़ो ह़राम अ़मल करने की इजाज़त नहीं है।

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

## 4 औ़रत का ह़ैज़ रोकने वाली दवाएं इ़स्तिमाल करना कैसा ?

**सुवाल :** क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए दीन व मुफ़्तियाने शरए मतीन इस मस्अले के बारे में कि क्या औ़रत ह़ैज़ रोकने वाली अदवियात खा सकती है ?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

औ़रत के लिए ह़ैज़ रोकने वाली दवाएं इस्तिमाल करना शरअ़न जाइ़ज़ है क्यूंकि शरीअ़ते मुत़ह्हरा ने इस से मना नहीं फ़रमाया। लेकिन अगर जिस्मानी तौर पर किसी बड़े और फ़ौरी ज़रर का सबब बनें तो इजाज़त नहीं क्यूंकि इस त़रह़ अपने आप को हलाकत में डालना कहलाएगा, और क़ुरआने करीम में अपने आप को हलाकत में डालने से बचने का हुक्म इरशाद फ़रमाया है।

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

# फ़ैज़ाने इमामे अहले सुन्नत

आला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ के सौ साला उ़र्स के मौक़अ़ पर मजलिस "माहनामा फ़ैज़ाने मदीना" की त़रफ़ से जारी कर्दा ख़ुसूसी शुमारा बनाम "फ़ैज़ाने इमामे अहले सुन्नत"। इस में आप رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ की इ़ल्मी, दीनी, रूह़ानी और मुआ़शरती ख़िदमात पर मुश्तमिल 59 मज़ामीन शामिल किए गए हैं उन की झलक मुलाह़ज़ा कीजिए :

- ह़याते आला ह़ज़रत तारीख़ के आइने में
- तदरीसे आला ह़ज़रत
- आला ह़ज़रत की शाने फ़क़ाहत
- आला ह़ज़रत एक माहिरे तौक़ीतदान
- आला ह़ज़रत की तफ़्सीरी महारत
- फ़न्ने ह़दीस में इमामे अहले सुन्नत का मक़ाम उ़लमा की नज़र में
- आला ह़ज़रत की साइन्सी अफ़्कार व तह़क़ीक़ात
- आला ह़ज़रत और ग़रीबों की दिलजोई के अन्दाज़
- हम अ़स्र उ़लमा से आला ह़ज़रत के तअ़ल्लुक़ात
- बेमिसाल इमाम की मिसाल निगारी
- आला ह़ज़रत की इस्लाही काविशें
- ख़ुलफ़ा व अह़बाबे आला ह़ज़रत




**दीने इस्लाम की ख़िदमत में आप भी दावते इस्लामी का साथ दीजिये और अपनी ज़कात, सदक़ाते वाजिबा व नाफ़िला और दीगर अ़तिय्यात (Donation) के ज़रीए माली तआ़वुन कीजिये !**

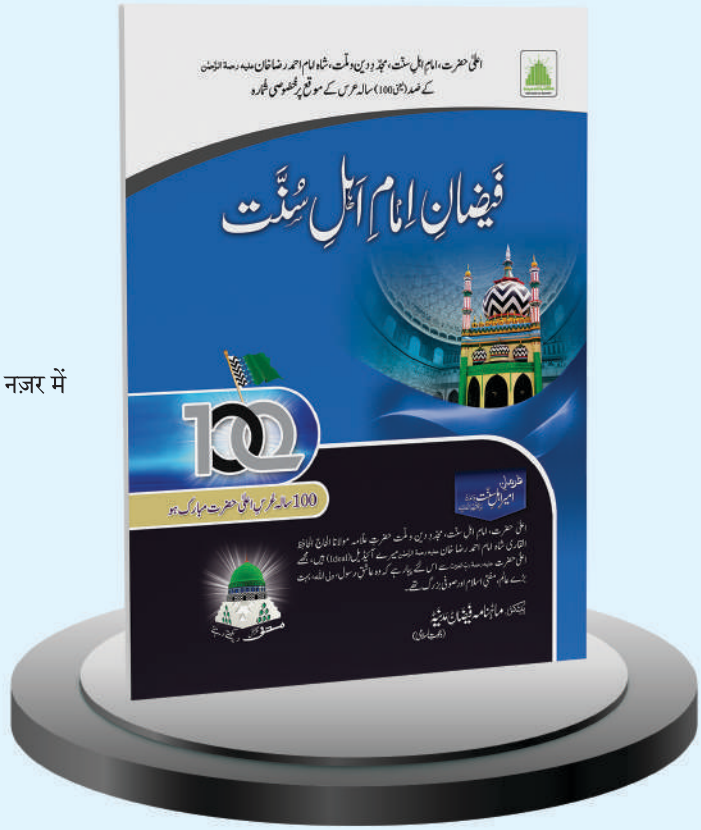

आप के चन्दे को किसी भी जाइज़, दीनी, इस्लाही (Reformatory), फ़लाही (Welfare) रूह़ानी ख़ैर ख़्वाही और भलाई के काम में ख़र्च किया जा सकता है